VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

नीतिशास्त्र

क्लासरूम स्टडी मटीरियल 2024

अगस्त 2023 – मई 2024

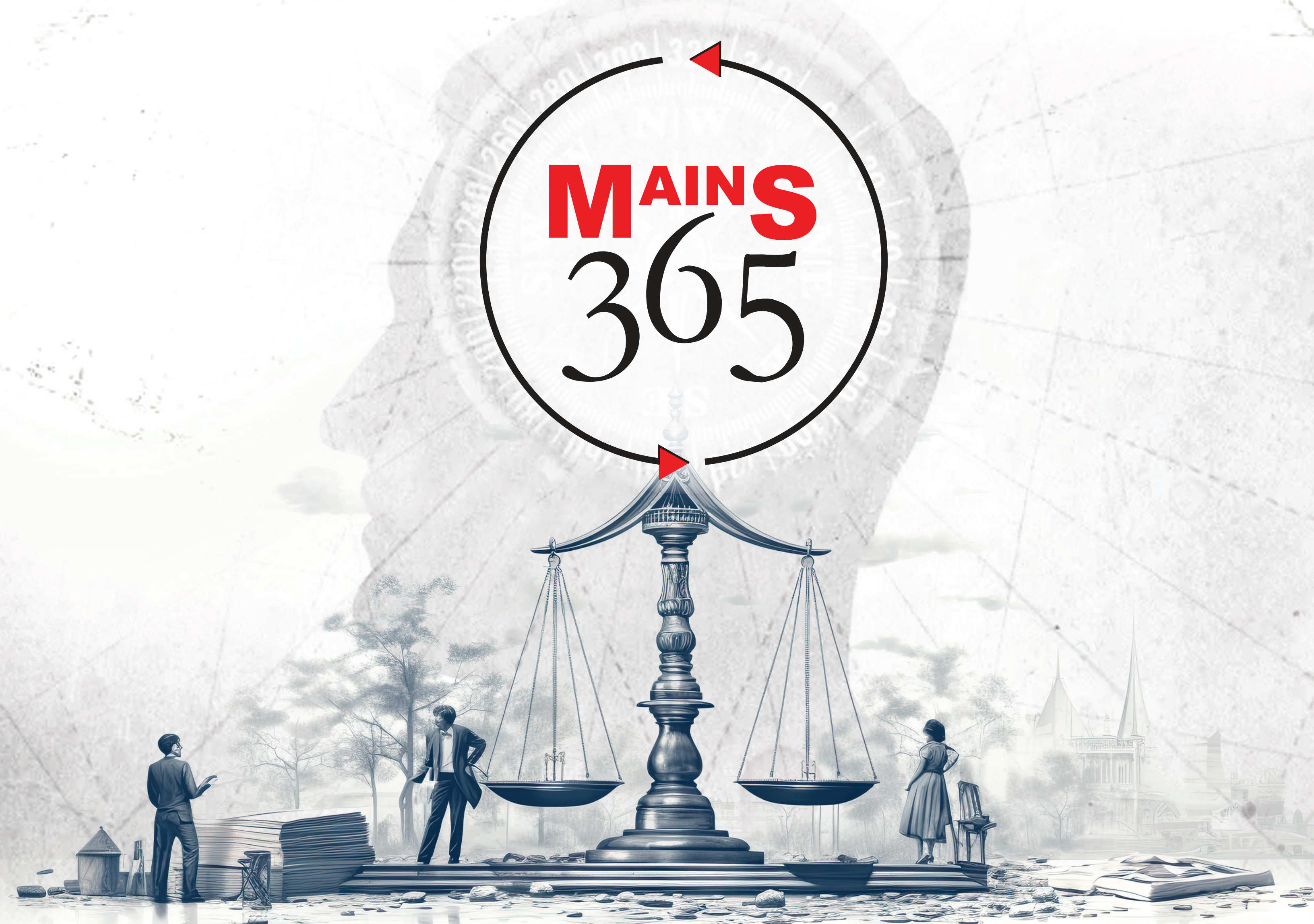

अहमदाबाद | बेंगलूरु | भोपाल | चंडीगढ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची

8468022022
9019066066

enquiry@visionias.in /c/VisionIASdelhi /visionias_upsc vision_ias /VisionIAS_UPSC www.visionias.in

Available in English & हिन्दी

एथिक्स से संबंधित फाउंडेशन से लेकर एडवांस स्तर तक की केस स्टडी को हल करने की समझ विकसित करने में अभ्यर्थियों को सक्षम बनाने हेतु वैचारिक स्पष्टता पर जोर दिया जाएगा।

केस स्टडीज में समकालीन और वर्तमान मुद्दों के साथ-साथ विगत वर्षों में UPSC पेपर IV में पूछे गए सभी महत्वपूर्ण टॉपिक्स को शामिल किया गया है।

अधिक अंक दिलाने वाली उत्तर लिखने की विभिन्न तकनीकों पर चर्चा की जाएगी।

वन-टू-वन मेंटरिंग सेशन

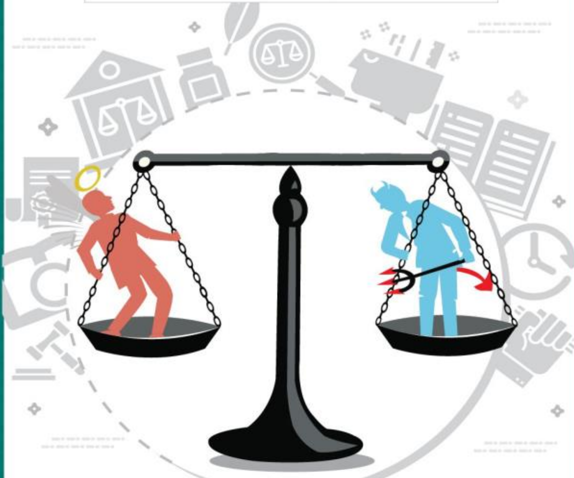

एथिक्स
केस स्टडीज मॉड्यूल

4 जुलाई | 1 PM

समसामयिक मुद्दों पर फोकस किया जाएगा तथा केस स्टडीज को वर्तमान में सुर्खियों में रहे टॉपिक्स के साथ जोड़कर पढ़ाया जाएगा।

आपकी तैयारी के दौरान एथिक्स के पेपर के लिए नियमित तौर पर शंका समाधान सत्र और व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्रदान किया जाएगा।

डेली क्लास असाइनमेंट

अपडेटेड स्टडी मटेरियल

यहां स्कैन करें

एथिक्स
क्रैश कोर्स 2024

(अवधारणात्मक समझ के साथ प्रभावी उत्तर लेखन और बेहतर विश्लेषणात्मक क्षमता के लिए एक मजबूत आधार तैयार कीजिए)

- क्लास में संरचित और इंटरैक्टिव अध्ययन
- स्टूडेंट पोर्टल पर लाइव और रिकॉर्डेड क्लासेज का एक्सेस
- अवधारणात्मक स्पष्टता के साथ व्यावहारिक अनुप्रयोग पर फोकस
- केस स्टडीज में विषयगत और समसामयिक नैतिक मुद्दे
- वन टू वन मेंटरिंग सहयोग और मार्गदर्शन
- संपूर्ण एथिक्स सिलेबस की SMART कवरेज
- डेली क्लास असाइनमेंट, मिनी टेस्ट और डिस्कसन
- उत्तर लेखन अभ्यास के साथ प्रदर्शन मूल्यांकन और फीडबैक
- SMART और काम्प्रीहेन्सिव स्टडी मटेरियल (केवल सॉफ्ट कॉपी)

9 जुलाई,
1:00 PM

नीतिशास्त्र (Ethics)

विषय-सूची

1. मूल्य एवं अवधारणाएं (Values and Concepts) 3
- 1.1. ईमानदारी 3
- 1.2. सत्यनिष्ठा 4
- 1.3. प्रोबिटी / शुचिता 4
- 1.4. जवाबदेही 5
- 1.5. समानुभूति 6
- 1.6. सहिष्णुता 6
- 1.7. निःस्वार्थता 7
- 1.8. न्याय 8
- 1.9. वस्तुनिष्ठता 8
- 1.10. नेतृत्व 9
- 1.11. लोक सेवा के प्रति समर्पण 10
- 1.12. निष्पक्षता और गैर-पक्षपात 11
- 1.13. अभिवृत्ति 12
- 1.14. सामाजिक प्रभाव और अनुनय 14
- 1.15. भावनात्मक बुद्धिमत्ता 16

2. सरकारी और निजी संस्थानों से संबद्ध नैतिक चिंताएं और दुविधाएं (Ethical Concerns and Dilemmas in Government and Private Institutions) 18
- 2.1. विधि निर्माताओं की नैतिकता 18
- 2.2. राजनीतिक नैतिकता और हितों का टकराव 19
- 2.3. भगवद गीता और प्रशासनिक नैतिकता के लिए सीख 20
- 2.4. चरित्र के बिना ज्ञान 22

3. नैतिकता और प्रौद्योगिकी (Ethics and Technology) 24
- 3.1. कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुड़ी नैतिकता 24
- 3.2. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मानवाधिकार 25
- 3.3. आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस और क्रिएटिविटी 26
- 3.4. ऑनलाइन गेमिंग में नैतिकता 28
- 3.5. धार्मिक विश्वास और वैज्ञानिक प्रगति 29

4. नैतिकता और समाज (Ethics and Society) 31
- 4.1. नज यानी सौम्य प्रोत्साहन की नैतिकता 31
- 4.2. बुनियादी जरूरतें और दुर्लभ संसाधन 32
- 4.3. खुशहाली 34
- 4.4. उपभोक्तावाद 35
- 4.5. सरकारी एग्जाम में अनुचित साधनों (चीटिंग) का प्रयोग 37
- 4.6. व्यक्तिगत सामाजिक उत्तरदायित्व 39
- 4.7. नेक व्यक्ति 40
- 4.8. उत्पादों के विज्ञापन में इन्फ्लुएंसर की नैतिकता 41

5. नैतिकता और व्यवसाय (Ethics and Business) 44
- 5.1. कम्पैशनेट कैपिटलिज्म या परोपकारी पूंजीवाद 44
- 5.2. खाद्य सेवा और सुरक्षा की नैतिकता 45
- 5.3. नैतिकता और उद्यमिता 47
- 5.4. श्रम नैतिकता और लंबे कार्य घंटे 49

6. नैतिकता और मीडिया (Ethics and Media) 51
- 6.1. मीडिया एथिक्स और स्व-नियमन 51
- 6.2. सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का नैतिक उपयोग 52
- 6.3. मीडिया ट्रायल की नैतिकता 54
- 6.4. सोशल मीडिया और सिविल सेवक 55

7. विविध (Miscellaneous) 58
- 7.1. युद्ध की नैतिकता 58
- 7.2. वैश्विक शासन व्यवस्था की नैतिकता 59
- 7.3. दंड की नैतिकता 61
- 7.4. बुद्ध की शिक्षाएं 62
- 7.5. खेल में नैतिकता 63
- 7.6. कुत्तों द्वारा काटने की घटनाएं: आवारा कुत्तों के नियंत्रण में उत्पन्न होने वाली नैतिक चिंताएं 66
- 7.7. नैतिकता और जलवायु परिवर्तन 68
- 7.8. संज्ञानात्मक असंगति अथवा मानसिक द्वंद्व 69

8. केस स्टडीज़ के जरिए अपनी योग्यता का परीक्षण कीजिए (Test Your Learning) 72

9. परिशिष्ट: व्यक्तित्व- उनके नैतिक विचार और उद्धरण (Appendix: Personalities- Their Ethical Ideas and Quotes) 78

© Vision IAS

अभ्यर्थियों के लिए संदेश

प्रिय अभ्यर्थी,

समसामयिक घटनाक्रमों को ठीक से समझने से जटिल मुद्दों के बारे में आपकी समझ और बेहतर हो सकती है। इससे विशेष रूप से मुख्य परीक्षा के संदर्भ में आपको बारीक समझ विकसित करने में मदद मिलती है।

इसे ध्यान में रखते हुए, मेन्स 365 डॉक्यूमेंट्स के जरिए आपकी अध्ययन प्रक्रिया को और सरल बनाने का प्रयास किया गया है। इस डॉक्यूमेंट में कुछ ऐसी विशेषताएं शामिल हैं जिससे आपको उत्तर तैयार करने व संक्षेप में लिखने, कंटेंट को बेहतर रूप से समझने और उसे याद रखने में सहायता मिलेगी।

Mains 365 नीतिशास्त्र: प्रमुख विशेषताएं

सिविल सेवा मूल्यों को समझना: संक्षिप्त विवरण और विविध उदाहरणों के जरिए सिविल सेवा से जुड़े प्रमुख मूल्यों को प्रस्तुत किया गया है।

नैतिक अवधारणाएं: स्नैपशॉट में महत्वपूर्ण नैतिक अवधारणाओं, जैसे- अभिवृत्ति आदि को अलग-अलग उदाहरणों के जरिए समझाया गया है।

नैतिक विश्लेषण: नैतिक मुद्दों का सटीक विश्लेषण तथा संभावित समाधानों की रूपरेखा प्रस्तुत की गई है।

केस स्टडीज़ के उत्तर लेखन में उपयोगी: इस डॉक्यूमेंट में शामिल किए गए हितधारक-आधारित दृष्टिकोण से न केवल मुद्दों या समस्याओं के विश्लेषण में मदद मिलेगी, बल्कि केस स्टडीज़ का उत्तर देने में भी सहायता मिलेगी।

केस स्टडीज़ के जरिए अपनी योग्यता का परीक्षण कीजिए: दिए गए प्रश्नों की प्रैक्टिस कीजिए और समझिए कि कैसे नैतिक मुद्दों के आधार पर केस स्टडीज़ तैयार की जाती हैं।

भारतीय नैतिक विचारक और दार्शनिक: इसमें मुख्य परीक्षा के लिए अति महत्वपूर्ण प्रमुख व्यक्तित्वों के मूल्यों और कथनों को प्रस्तुत किया गया है।

हम आशा करते हैं कि मेन्स 365 डॉक्युमेंट्स आपकी तैयारी में प्रभावी ढंग से आपका मार्गदर्शन करेंगे और आपको मुख्य परीक्षा में बेहतर अंक प्राप्त करने में मदद करेंगे।

"आप कभी भी, किसी से भी, कुछ भी सीख सकते हैं। हमेशा एक ऐसा समय आएगा, जब आप सुखद अनुभव करेंगे कि आपने ऐसा किया।"

शुभकामनाएं! टीम VisionIAS

Copyright © by Vision IAS

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

VISION IAS
INSPIRING INNOVATION

OUR ACHIEVEMENTS

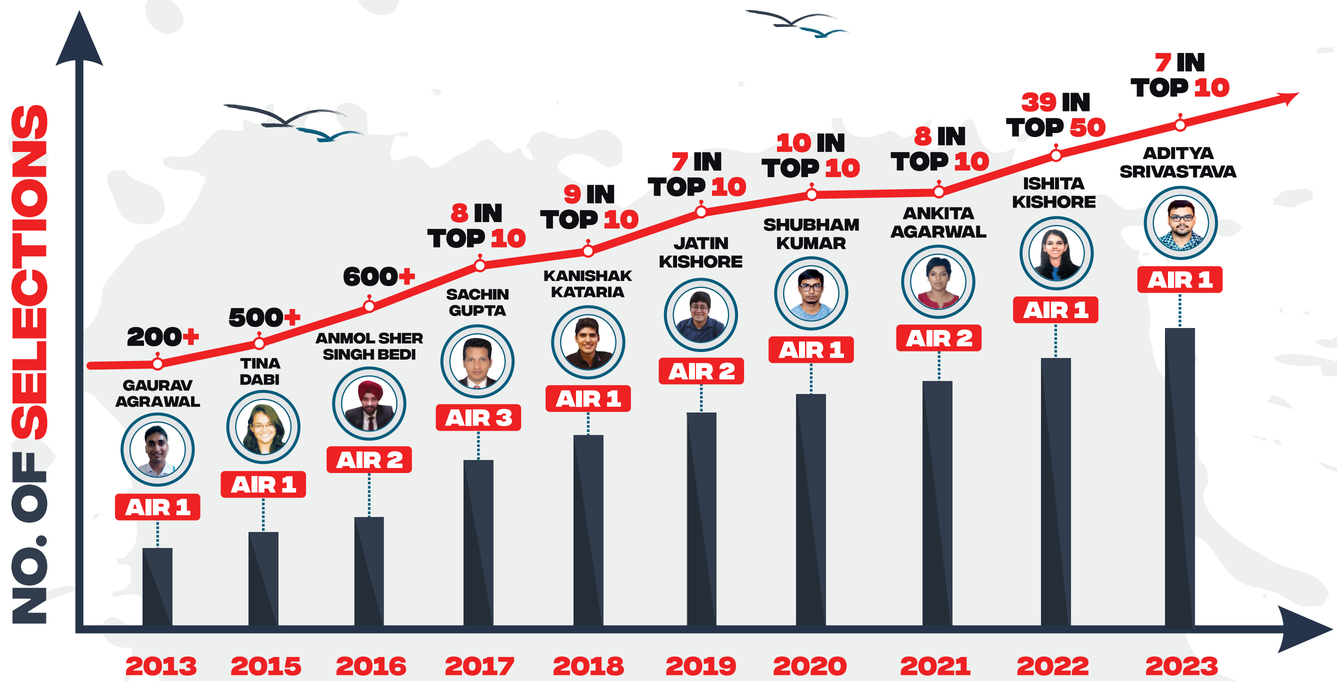

LIVE/ONLINE
Classes Available
www.visionias.in

Foundation Course
GENERAL STUDIES
PRELIMS cum MAINS 2025

DELHI: 18 JULY, 9 AM | 16 JULY, 1 PM | 13 JULY, 5 PM
29 JULY, 1 PM | 30 JULY, 9 AM | 31 JULY, 5 PM

GTB Nagar Metro (Mukherjee Nagar):
19 JULY, 8:30 AM | 23 JULY, 5:30 PM

AHMEDABAD: 12 JULY | BENGALURU: 12 & 18 JULY | BHOPAL: 18 JULY | CHANDIGARH: 18 JULY
HYDERABAD: 24 JULY | JAIPUR: 22 JULY | JODHPUR: 11 JULY | LUCKNOW: 17 JULY | PUNE: 5 JULY

फाउंडेशन कोर्स सामान्य अध्ययन 2025

- प्रारंभिक, मुख्य परीक्षा और निबंध के लिए महत्वपूर्ण सभी टॉपिक का विस्तृत कवरेज

DELHI: 18 जुलाई, 1 PM | BHOPAL: 23 जुलाई | LUCKNOW: 18 जुलाई | JAIPUR: 25 जुलाई | JODHPUR: 11 जुलाई

Scan the QR CODE to download VISION IAS App. Join official telegram group for daily MCQs & other updates.

/visionias.upsc | /c/VisionIASdelhi | /c/VisionIASdelhi | /t.me/s/VisionIAS_UPSC

DELHI: HEAD OFFICE: 1st floor, Apsara Arcade, Near Gate-7 Karol Bagh Metro Station, 1/8 b, Pusa Road, Karol Bagh, Delhi – 110005 | CONTACT: 8468022022, 9019066066

AHMEDABAD | BENGALURU | BHOPAL | CHANDIGARH | GUWAHATI | HYDERABAD | JAIPUR | JODHPUR | LUCKNOW | PRAYAGRAJ | PUNE | RANCHI

1. मूल्य एवं अवधारणाएं (Values and Concepts)

1.1. ईमानदारी (Honesty)

ईमानदारी

अर्थ: ईमानदारी का अर्थ सत्य बोलने और उसी के अनुसार कार्य करने से है। ईमानदारी **झूठ नहीं बोलने, धोखा नहीं देने, चोरी या धोखाधड़ी नहीं करने से कहीं अधिक** है।

- इसमें **दूसरों के प्रति सम्मान प्रकट करना और आत्म-जागरूकता** शामिल है।
- ईमानदारी **विश्वास की नींव** है और सामाजिक संबंधों में यह बहुत महत्वपूर्ण है।

नैतिकता के परंपरागत (क्लासिकल) फ्रेमवर्क में ईमानदारी:

- **अरस्तू द्वारा प्रतिपादित सद्गुण नीतिशास्त्र या सदाचार युक्त नैतिकता (Virtue ethics)** के अनुसार, ईमानदारी एक ऐसा सद्गुण है जो व्यक्ति में अन्य सद्गुणों का भी विकास करता है। इसके अनुसार, ईमानदारी से रहित होने के परिणामस्वरूप एक व्यक्ति अविश्वासी बन सकता है। वहीं दूसरी ओर, बहुत अधिक ईमानदारी के परिणामस्वरूप एक व्यक्ति लोगों की भावनाओं की कीमत पर अनावश्यक रूप से सत्य बातें सामने रखता है।
- **ईमानदारी का मध्य मार्ग (Middle ground)** वह है जहां अपनी ईमानदारी को इस तरह से ढाला जा सकता है जो मध्यम स्तर पर और रचनात्मक हो। मोटे तौर पर, **परिणामवाद सिद्धांत (Consequentialism theory)** हमें **व्यक्तिगत स्थितियों और परिणामों के आधार पर थोड़ी अधिक या थोड़ी कम ईमानदारी के साथ व्यवहार करने** की सलाह देता है, अन्यथा सत्य से बड़ा नुकसान पहुंच सकता है।
- दूसरी ओर, इमैनुएल कांट द्वारा प्रतिपादित **कर्तव्यशास्त्र (Deontology)** के अनुसार, ईमानदारी वस्तुतः **निरपेक्ष नैतिक दायित्व** है, भले ही उसकी कीमत कुछ भी हो। **कर्तव्यशास्त्र** में इसका खंडन किया गया है कि किसी भी कार्य का नैतिक मूल्य उसके परिणामों पर निर्भर करता है।

जीवन में ईमानदारी से जुड़े उदाहरण

अनिल स्वरूप (सेवानिवृत्त IAS अधिकारी) ने कोयला ब्लॉक आवंटन के लिए पारदर्शी ई-नीलामी प्रणाली लागू की, शिक्षक नियुक्तियों और स्थानांतरण आदि में पारदर्शिता बढ़ाई, जिससे शासन में ईमानदारी का उदाहरण प्रस्तुत हुआ।

2011 के ICC विश्व कप में वेस्टइंडीज के खिलाफ मैच के दौरान, सचिन तेंदुलकर को ग्राउंड अंपायर ने कैच आउट के लिए नॉट आउट करार दिया था। विश्व कप में बहुत कुछ दांव पर लगे होने के बावजूद, तेंदुलकर स्वेच्छा से मैदान से बाहर चले गए, जिससे उन्हें आउट करार माना गया। **ईमानदारी और खेल भावना** के इस कार्य की, विशेष रूप से ऐसे महत्वपूर्ण टूर्नामेंट में, व्यापक रूप से प्रशंसा की गई और खेल में ईमानदारी के लिए उनकी प्रतिष्ठा को भी मजबूती मिली।

1.2. सत्यनिष्ठा (Integrity)

सत्यनिष्ठा

»» **अर्थ: ईमानदार** होना तथा निरंतर और बिना किसी समझौते के अपने **मूल्यों** एवं **सिद्धांतों** का पालन करना ही सत्यनिष्ठा है।

»» **आदर्श रूप में सत्यनिष्ठा की व्याख्या:**

- सत्यनिष्ठ व्यवहार का अर्थ है कि **अपने सिद्धांतों को समझना, स्वीकार करना और उनके अनुसार जीवन जीने का विकल्प चुनना।**
- लेखक **सी.एस. लेविस** के अनुसार, जब कोई नहीं भी देख रहा हो तब भी न्यायोचित रूप से कार्य करना ही **सत्यनिष्ठा** है।
- सत्यनिष्ठा **नैतिकता और नैतिक व्यवहार के बीच की महत्वपूर्ण कड़ी** है।

सत्यनिष्ठा के लक्षण

ईमानदारी/ सच्चाई	निष्पक्षता	शालीनता/ सम्मान
नैतिक सिद्धांतों का पालन करना	सहायक प्रवृत्ति	उत्तरदायित्व/ विश्वसनीयता

जीवन में सत्यनिष्ठा से जुड़े उदाहरण

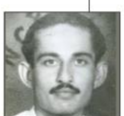

शहीद हेमू कालाणी एक क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी थे। जब उन्होंने **ट्रेन को पटरी से उतारने की योजना** बनाई थी, तो उनके साथियों और उनके संगठन (स्वराज सेना) की पहचान उजागर करने के लिए अंग्रेजों ने उन्हें थर्ड-डिग्री टॉर्चर दिया था। फिर भी, उन्होंने अंग्रेजों का विरोध किया और निडरता से यातनाएं झेलीं एवं किसी का नाम उजागर नहीं किया।

चौरी-चौरा घटना (1922) के बाद असहयोग आंदोलन को वापस लेना महात्मा गांधी की सत्यनिष्ठा और अहिंसा के मूल्य के प्रति उनकी दृढ़ प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

1.3. प्रोबिटी / शुचिता (Probity)

प्रोबिटी (शुचिता)

»» **अर्थ:** प्रोबिटी या शुचिता का आशय **मजबूत नैतिक सिद्धांतों, सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, शालीनता, चरित्र या व्यवहार में ईमानदारी** से है।

- शुचिता केवल भ्रष्ट या बेईमान आचरण से बचने की बजाय **उच्चतम सिद्धांतों और आदर्शों का पालन करने से संबंधित व्यवहार** है।

»» शासन व्यवस्था या गवर्नेंस में शुचिता न केवल एक अनिवार्य घटक है, बल्कि **एक कुशल और प्रभावी शासन प्रणाली सुनिश्चित करने तथा सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए भी यह आवश्यक है।**

शुचिता की कमी → भ्रष्टाचार के रूप में प्रकट होती है → और अंततः अमीरों एवं गरीबों के बीच अंतराल बढ़ता है।

»» सत्यनिष्ठा एक व्यापक अवधारणा है, जिसमें समग्र नैतिक चरित्र समाहित होता है। जबकि, **शुचिता** का संबंध विशेष रूप से व्यावसायिक गतिविधियों में ईमानदारी और भ्रष्टाचार रहित व्यवहार से है।

जीवन में शुचिता से जुड़े उदाहरण

जैसिंडा अर्डर्न (न्यूजीलैंड की पूर्व प्रधान मंत्री) ने 2023 में यह कहते हुए इस्तीफा दे दिया कि **अब उनके पास इस पद के मुताबिक काम करने के लिए "पर्याप्त क्षमता नहीं है"। आत्म-जागरूकता का यह प्रदर्शन और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा की बजाए देश की जरूरतों को प्राथमिकता देना शुचिता का उदाहरण है।**

शानमुगम मंजूनाथ (इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन के अधिकारी) ने कई फ्यूल स्टेशनों पर पेट्रोल में व्यापक मिलावट के खिलाफ लड़ाई लड़ी, जबकि उन्हें लगातार गंभीर धमकियां मिल रही थीं। इसके कुछ समय बाद उन्हें एक पेट्रोल पंप के मालिक ने गोली मार दी। ईमानदारी के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और खतरे का सामना करने का उनका साहस सच्चे अर्थों में शुचिता का उदाहरण है।

1.4. जवाबदेही (Accountability)

जवाबदेही

अर्थ: जवाबदेही का आशय किसी संस्था/ तंत्र, उसके कार्य-कलापों और संभावित प्रभावों के लिए उत्तरदायी होने से है।

- अपने **कार्यों, निर्णयों और सेवाओं/ उत्पादों के लिए जिम्मेदारी लेना** ही जवाबदेही है।
- शासन के ढांचे में, जवाबदेही का तात्पर्य **सार्वजनिक क्षेत्र के अधिकारियों की जिम्मेदारियों को पूरा करने पर उनकी समीक्षा और राजनीतिक शक्ति के प्रयोग पर नियंत्रण तथा संतुलन** से है।

जवाबदेही के विभिन्न प्रकार:

- **लंबवत जवाबदेही (Vertical accountability):** इसका आशय **प्रिंसिपल-एजेंट संबंध** से है, उदाहरण के लिए- चुनाव, जहां मतदाता (प्रिंसिपल) सरकारों (एजेंटों) को जवाबदेह ठहराते हैं।
- **क्षैतिज जवाबदेही (Horizontal accountability):** यह जवाबदेही संस्थानों के एक नेटवर्क की सहायता से तय की जाती है, जिसमें शासन की विभिन्न शाखाओं (कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका) तथा स्वतंत्र संस्थानों के बीच पारंपरिक तरीके से एक-दूसरे पर नियंत्रण स्थापित किया जाता है।
- **सामाजिक जवाबदेही (Social accountability):** जब सार्वजनिक अधिकारियों के कार्यों की कई नागरिक समाज संगठनों, स्वतंत्र मीडिया आदि द्वारा समीक्षा की जाती है तो उसे सामाजिक जवाबदेही कहा जाता है।

जीवन में जवाबदेही से जुड़े उदाहरण

मोरारजी देसाई (1977-79 के दौरान भारत के प्रधान मंत्री) अलग-अलग मुद्दों पर **चर्चा एवं वाद-विवाद की जीवंतता के साथ-साथ लोकतंत्र के चौथे स्तंभ अर्थात् मीडिया की स्वतंत्रता में विश्वास** करते थे। वे नियमित रूप से प्रेस कॉन्फ्रेंस करते थे, जहां पत्रकारों को सवाल पूछने की पूरी आजादी दी जाती थी।

प्रोफेसर सतीश धवन ने 1979 में इसरो की पहली प्रायोगिक अंतरिक्ष उड़ान की असफलता की पूरी जिम्मेदारी मिशन के प्रमुख के बजाय अपने ऊपर ले ली थी।

1.5. समानुभूति (Empathy)

समानुभूति

- **अर्थ:** समानुभूति को आम तौर पर **दूसरों की मनः स्थितियों/ भावनाओं को समझने की क्षमता** के साथ-साथ यह कल्पना करने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया जाता है कि **कोई और क्या सोच रहा है या महसूस कर रहा है।**

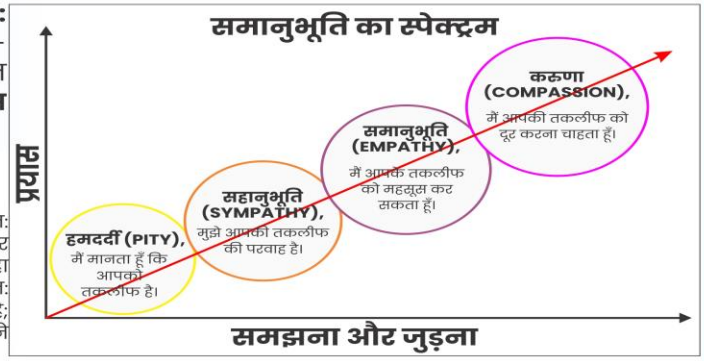

- **समानुभूति के विभिन्न प्रकार:**
  - **भावनात्मक समानुभूति (Affective empathy):** दूसरों की मनः स्थितियों/ भावनाओं को समझ लेने के बाद, हम जिन संवेदनाओं और भावनाओं की अनुभूति करते हैं, उसे ही भावनात्मक समानुभूति कहा जाता है। इसमें अग्रलिखित शामिल हो सकते हैं- जिस व्यक्ति की मनः स्थिति/ भावनाओं को हम समझ चुके हैं, वह क्या महसूस कर रहा है; या किसी दूसरे के डर या चिंता के बारे में जानकर महसूस किया जाने वाला तनाव।
  - **संज्ञानात्मक समानुभूति (Cognitive empathy):** दूसरों की मनः स्थिति को पहचानना और उसे ठीक से समझना संज्ञानात्मक समानुभूति कहलाता है। इसमें दूसरों की मनः स्थिति को महसूस करना शामिल नहीं होता है। इसे कभी-कभी "पर्सपेक्टिव टेकिंग" भी कहा जाता है।

जीवन में समानुभूति से जुड़े उदाहरण

सी.एफ. एंड्रयूज (जिन्हें दीनबंधु के नाम से भी जाना जाता है) ने महात्मा गांधी के साथ मिलकर अंग्रेजों से लड़ाई लड़ी थी। उन्होंने गिरमिटिया मजदूरों की दुर्दशा को समझा और समाज के इन कमजोर एवं असहाय लोगों के प्रति समानुभूति दिखाते हुए गोपाल कृष्ण गोखले के गिरमिटिया विरोधी अभियान में शामिल हो गए।

विश्व की सबसे व्यापक स्वास्थ्य बीमा पहल, **आयुष्मान भारत** योजना को समानुभूतिपूर्ण नीति-निर्माण के एक उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है। इसके तहत 12 करोड़ से अधिक गरीब और कमजोर परिवारों को द्वितीयक एवं तृतीयक स्तर की चिकित्सा हेतु अस्पताल में भर्ती होने पर प्रति वर्ष प्रति परिवार 5 लाख का हेल्थ कवरेज प्रदान किया जाता है।

1.6. सहिष्णुता (Tolerance)

सहिष्णुता

- **अर्थ:** सहिष्णुता का मतलब उन लोगों के प्रति निष्पक्ष, वस्तुनिष्ठ और उदार रवैया रखना है जिनकी राय, व्यवहार, जाति, धर्म, राष्ट्रीयता आदि खुद से अलग हैं।
- **भारत जैसे बहुलवादी समाज में सद्भाव और सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा देने के लिए** विविधता एवं विभिन्न सामाजिक समूहों के प्रति सहिष्णुता तथा पारस्परिक सम्मान महत्वपूर्ण हो जाता है।
- **सहिष्णुता का अभाव या असहिष्णुता** संकीर्ण मानसिकता को दर्शाती है तथा स्वतंत्र सोच की विरोधी होती है।
- **सिविल सेवा में सहिष्णुता**
  - सिविल सेवाओं में वस्तुनिष्ठता, निष्पक्षता, गैर-पक्षपात, करुणा, न्याय आदि सहित कई **अन्य मूल्यों को बनाए रखने हेतु सिविल सेवक में सहिष्णुता का होना अनिवार्य है।**
  - सहिष्णुता सिविल सेवकों को समावेशी नीति निर्माण और उसके कार्यान्वयन तथा समाज में सुदृढ़ सामाजिक पूंजी विकसित करने में मदद करती है।

जीवन में सहिष्णुता से जुड़े उदाहरण

नेल्सन मंडेला (दक्षिण अफ्रीका के प्रथम राष्ट्रपति) ने जेल से रिहा होने और राष्ट्रपति के रूप में चुने जाने के बाद, **सहिष्णुता और सुलह की बेहतरीन मिसाल पेश की थी।** उन्होंने **बदला लेने की इच्छा के बिना,** अतीत के अन्याय को दूर करने के लिए सत्य और सुलह आयोग की स्थापना की थी।

भारत के सुप्रीम कोर्ट ने अपने विभिन्न निर्णयों में काफी सहिष्णुता दिखाई है, जिसमें ट्रांसजेंडर लोगों को 'थर्ड-जेंडर' की मान्यता प्रदान करना (नालसा बनाम भारत संघ वाद, 2014), आपसी सहमति पर आधारित समलैंगिक संबंधों को अपराध की श्रेणी से बाहर करना (नवतेज सिंह जौहर बनाम भारत संघ, 2018), आदि शामिल हैं।

© Vision IAS

1.7. निःस्वार्थता (Selflessness)

निःस्वार्थता

- **अर्थ:** निःस्वार्थता **एक ऐसी अभिवृत्ति** है जो स्वयं और दूसरों की **आवश्यकताओं के बीच संतुलन** स्थापित करती है। इसका आशय यह नहीं है कि **कोई अपनी आवश्यकताओं को पूरी तरह से त्याग** दे।
- **शासन व्यवस्था (गवर्नेंस) में निःस्वार्थता** के विचार का आशय है कि सार्वजनिक भूमिकाओं का निर्वहन करने वाले व्यक्ति **पूरी तरह से लोक हित में कार्य करते** हैं। इसका मतलब है कि ऐसे **व्यक्तियों द्वारा उनकी खुद की निजी आवश्यकताओं की बजाय जनता की आवश्यकताओं पर अधिक प्राथमिकता** से ध्यान दिया जाता है।

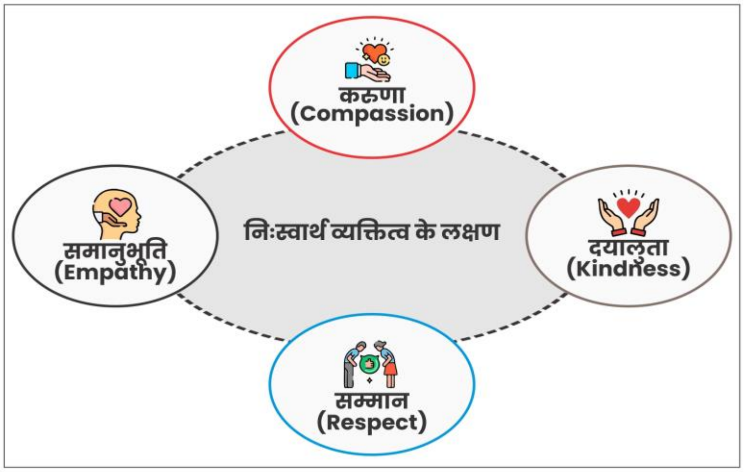

- निःस्वार्थता का सिद्धांत **सार्वजनिक क्षेत्रक के सेवा प्रदाता और प्राप्तकर्ता को मिलने वाले लाभ के बीच संभावित संघर्ष का समाधान करता है।**
- निःस्वार्थता के मूल्य का प्रदर्शन केवल महामारी जैसी चरम स्थितियों में ही नहीं किया जाता है, बल्कि **निःस्वार्थता सार्वजनिक क्षेत्रक के एक सक्रिय कर्मी के दैनिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है।**

जीवन में निःस्वार्थता से जुड़े उदाहरण

भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण में कार्यरत भारतीय इंजीनियरिंग सेवा के एक अधिकारी **सत्येंद्र दुबे** ने स्वर्णिम चतुर्भुज राजमार्ग निर्माण परियोजना में गंभीर भ्रष्टाचार को उजागर किया, जिसके चलते विरोधियों ने उनकी हत्या कर दी। यह एक लोक सेवक के रूप में उनकी सत्यनिष्ठा और निःस्वार्थता को दर्शाता है।

महाराष्ट्र पुलिस के तुकाराम ओम्बले ने **26/11 मुंबई हमलों** के दौरान अनुकरणीय साहस और निःस्वार्थता का परिचय दिया। उन्होंने एक आतंकवादी से लड़ते हुए अपने साथी सैनिकों को बचाया एवं स्वयं शहीद हो गए।

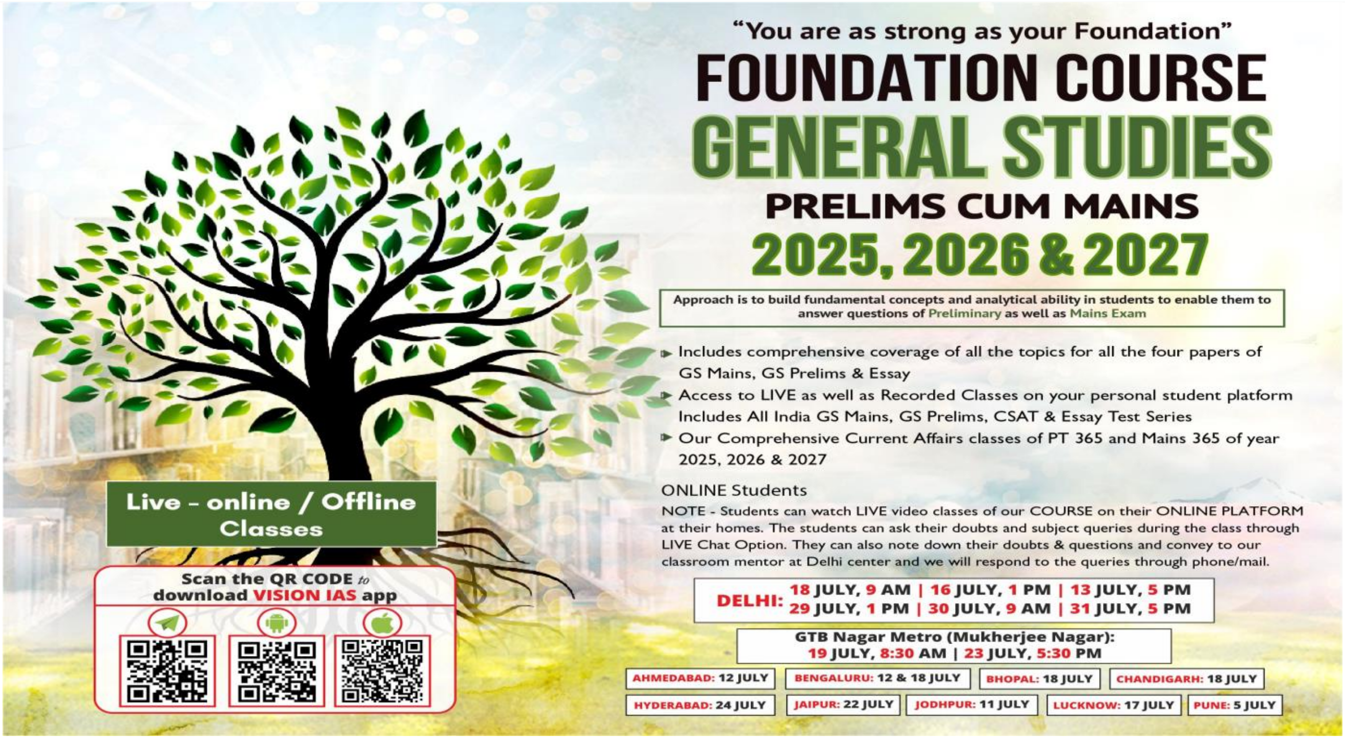

1.8. न्याय (Justice)

न्याय

- **अर्थ:** न्याय को अक्सर **"निष्पक्षता (Fairness)" या "समान व्यवहार (Equal treatment)"** के रूप में परिभाषित किया जाता है। हालांकि, अलग-अलग समूहों के लिए इसके अलग-अलग मायने होते हैं।
- परंपरागत रूप से, **न्याय को चार प्रमुख सद्गुणों (Cardinal virtues) में से एक** माना गया है। **जॉन रॉल्स** ने इसे **"सामाजिक संस्थाओं के प्रथम सद्गुण"** के रूप में वर्णित किया है।

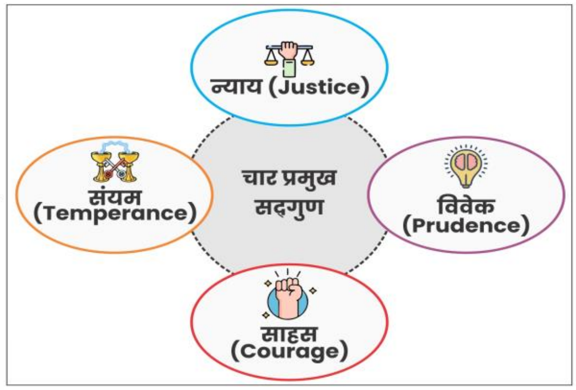

- **न्याय के विभिन्न प्रकार:**
  - **सामाजिक न्याय (Social justice):** जाति, धर्म या लिंग की परवाह किए बिना जब प्रत्येक व्यक्ति समान आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक अवसरों का हकदार हो जाता है तो उसे सामाजिक न्याय कहते हैं।
  - **वितरणात्मक न्याय (Distributive justice):** इसका तात्पर्य **समाज में संपत्ति के न्यायसंगत वितरण** से है।
  - **प्रतिशोधात्मक न्याय (Retributive justice):** गलत काम करने वालों को **वस्तुनिष्ठ और आनुपातिक रूप से दंडित करना** ही प्रतिशोधात्मक न्याय है।

जीवन में न्याय से जुड़े उदाहरण

सागरमल गोपा (प्रजा मंडल के नेतृत्वकर्ता) ने अपनी पुस्तक **"जैसलमेर में गुंडाराज" में जवाहर सिंह (जैसलमेर के शासक) के अत्याचारों का उल्लेख किया** और वे जैसलमेर के लोगों को न्याय दिलाने पर अडिग रहे थे।

पी. नरहरि (IAS अधिकारी, 2001 बैच) की ओर से ग्वालियर जिले में दिव्यांग व्यक्तियों, वरिष्ठ नागरिकों व महिलाओं को सार्वजनिक स्थानों तक सुगम्य पहुंच सुनिश्चित करने में मदद हेतु चलाया गया अभियान सामाजिक न्याय के मूल्य को प्रदर्शित करता है।

1.9. वस्तुनिष्ठता (Objectivity)

वस्तुनिष्ठता

- **अर्थ:** इसका अर्थ निष्पक्ष, न्यायपूर्ण और योग्यता के आधार पर सर्वोत्तम साक्ष्य का उपयोग करते हुए तथा बिना किसी भेदभाव या पूर्वाग्रह के कार्य करना और निर्णय लेना है।
  - इसमें सलाह देते समय या निर्णय लेते समय असुविधाजनक तथ्यों या प्रासंगिक विचारों को नजरअंदाज न करना भी शामिल है।
- **सिविल सेवाओं में वस्तुनिष्ठता:**
  - यह लोक सेवकों को कानून, तर्क, योग्यता और स्वीकृत मानकों, प्रथाओं और मानदंडों को बनाए रखने में सहायता करता है।
  - हालाँकि, नैतिक दृष्टिकोण से व्यावहारिक स्थिति में पूर्ण वस्तुनिष्ठता हमेशा वांछनीय नहीं हो सकती है।
  - वस्तुनिष्ठता को समानता, न्याय और निष्पक्षता के अंतिम मूल्यों को प्राप्त करने के लिए एक औसत मूल्य के रूप में माना जाता है।

जीवन में वस्तुनिष्ठता से जुड़े उदाहरण

पोषण ट्रैकर डैशबोर्ड पर आधारित पोषण अभियान के कार्यान्वयन के लिए साक्ष्य-आधारित निर्णय लेना, सार्वजनिक नीति निर्माण और उसके कार्यान्वयन में वस्तुनिष्ठता का एक उदाहरण प्रस्तुत करता है।

केंद्र सरकार के अधिकारियों के प्रदर्शन का आकलन करने के लिए **डिजिटल पोर्टल - प्रोबिटी, स्पैरो और सॉल्व -** कार्मिक प्रबंधन में वस्तुनिष्ठता का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

1.10. नेतृत्व (Leadership)

नेतृत्व (लीडरशिप)

अर्थ: एक व्यक्ति, जो अपने सहयोगियों का किन्हीं विशेष साध्य या लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सफलतापूर्वक मार्गदर्शन करता है, नेतृत्वकर्ता (लीडर) कहलाता है। जॉन मैक्सवेल के अनुसार, **"नेतृत्वकर्ता वह है जो अपने मार्ग के बारे में जानता है, उस मार्ग पर चलता है और अपने सहयोगियों का मार्गदर्शन करता है।"**

लीडरशिप की भावना किसी अधिकार या शक्ति के बजाय **सामाजिक प्रभाव से उत्पन्न** होती है और इसमें **इच्छित परिणाम के साथ-साथ एक लक्ष्य** भी शामिल होता है।

लीडरशिप सुशासन का एक महत्वपूर्ण घटक है।

एक प्रभावी नेतृत्वकर्ता **निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया में लोगों की भागीदारी** सुनिश्चित करता है तथा **विधि के शासन को समान रूप से लागू** करता है। इसके अलावा, वह **पारदर्शिता एवं जवाबदेही को बनाए रखता** है और उन **लोगों के प्रति उत्तरदायी होता है जिनकी वह सेवा** करता है।

ट्रांसफॉर्मेशनल लीडरशिप (परिवर्तनकारी नेतृत्व) एक प्रेरक शैली है जिसमें लीडर्स अपनी टीम/ फॉलोअर्स को प्रेरित करते हैं और उन्हें संगठन के लक्ष्यों को प्राप्त करने तथा सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

ट्रांसफॉर्मेशनल लीडरशिप

बौद्धिक प्रोत्साहन (इंटेलेक्चुअल स्टीमुलेशन)
- नवाचार
- रचनात्मकता
- लक्ष्य
- चुनौती

व्यक्तिगत विचार (इंडिविजुअल कंसिडरेशन)
- मेंटरशिप
- समानुभूति
- उद्देश्य
- क्षमता एवं कौशल

आदर्श प्रभाव (आइडियलाइज्ड इन्फ्लुएंस)
- रोल मॉडल
- वॉक द वॉक
- उत्साह
- मूल्यों का अनुकरण

प्रेरणादायक प्रोत्साहन (इंस्पिरेशनल मोटिवेशन)
- स्पष्ट दृष्टि
- आशावाद
- समावेश
- उत्पादकता

इससे टीम का मनोबल बढ़ाने, तीव्र विचार-विमर्श को प्रोत्साहित करने, संघर्ष समाधान में सहायता करने, असंतोष को कम करने तथा टीम के भीतर ओनरशिप यानी स्वामित्व की भावना पैदा करने में सहायता मिलती है।

जीवन में नेतृत्व से जुड़े उदाहरण

डॉ. वर्गीस कुरियन को भारत में **श्वेत क्रांति का जनक** माना जाता है। उन्होंने एक **सफल सहकारी संगठन "अमूल" की स्थापना** की। इस सहकारी संगठन का **स्वामित्व किसी एक व्यक्ति के पास नहीं होकर सभी उत्पादक सदस्यों के पास** है और वे प्रत्येक स्तर पर हितधारक तथा निर्णयकर्ता होते हैं।

ई. श्रीधरन को **"भारत के मेट्रो मैन"** के नाम से भी जाना जाता है। सूक्ष्मदृष्टि यानी चीजों की बारीकियों पर ध्यान, समय-सीमा के मामले में प्रतिबद्धता और गुणवत्ता पर ध्यान देने जैसे गुणों ने उन्हें प्रभावी परियोजना प्रबंधक और इंजीनियरिंग नेतृत्व का प्रतीक बना दिया है।

VISIONIAS INSPIRING INNOVATION
A.I.T.S
GS PRELIMS TEST SERIES 2024
ऑल इंडिया GS प्रीलिम्स टेस्ट सीरीज़ एवं मेंटरिंग प्रोग्राम
कॉम्प्रिहेंसिव रिवीजन, अभ्यास और मेंटरिंग के साथ बेहतर प्रदर्शन के लिए एक इनोवेटिव मूल्यांकन प्रणाली
30 टेस्ट
5 फंडामेंटल टेस्ट | 15 एप्लाइड टेस्ट
10 फुल लेंथ टेस्ट
ENGLISH MEDIUM 2025: 14 JULY
हिन्दी माध्यम 2025: 14 जुलाई

© Vision IAS

1.11. लोक सेवा के प्रति समर्पण (Dedication to Public Service)

लोक सेवा के प्रति समर्पण

- **अर्थ:** किस महत्वपूर्ण लक्ष्य को पाने के लिए अपना **समय और पूरी ताकत झोंक देना ही समर्पण** कहलाता है। लोक सेवा के प्रति समर्पण का अर्थ है **"लोक हित को व्यक्तिगत हित से पहले प्राथमिकता देना।"**
- लोक सेवक सरकार और नागरिकों के लिए काम करते हैं, इसलिए उन्हें लोगों की आकांक्षाओं को बेहतर ढंग से पूरा करने के लिए **सेवा की उच्च भावना** (समाज या देश के लिए योगदान की भावना) **और त्याग की आवश्यकता** होती है।

कांट के अनुसार, **कर्तव्य की भावना से प्रेरित होकर किए गए किसी कार्य का नैतिक मूल्य** उस कार्य द्वारा प्राप्त किए जाने वाले या इच्छित परिणाम में नहीं बल्कि उस नैतिक सिद्धांत में निहित होता है जिसके अनुसार कार्य पर निर्णय लिया जाता है। कांट के अनुसार, नैतिक मूल्य एक नैतिक सिद्धांत या "मैक्सिम (Maxim)" से आता है - वो सिद्धांत जो किसी के कर्तव्य को पूरा करने पर जोर देता है, चाहे वो कर्तव्य कुछ भी हो।

जीवन में लोक सेवा के प्रति समर्पण से जुड़े उदाहरण

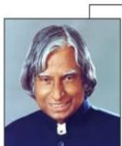

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने **अपना जीवन अनेक रूपों में देश की सेवा में समर्पित** किया। डॉ. कलाम का सबसे महत्वपूर्ण कार्य **भारत के स्वदेशी मिसाइल कार्यक्रम की शुरुआत और परमाणु कार्यक्रम में योगदान** है।

डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन ने अपना जीवन अनेक रूपों में लोक सेवा हेतु समर्पित कर दिया। इनमें शामिल हैं: भारत में हरित क्रांति के लिए डॉ. नॉर्मन बोरलॉग के साथ सहयोग; राष्ट्रीय किसान आयोग के अध्यक्ष के रूप में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम जैसी महत्वपूर्ण सिफारिशें देना; आदि।

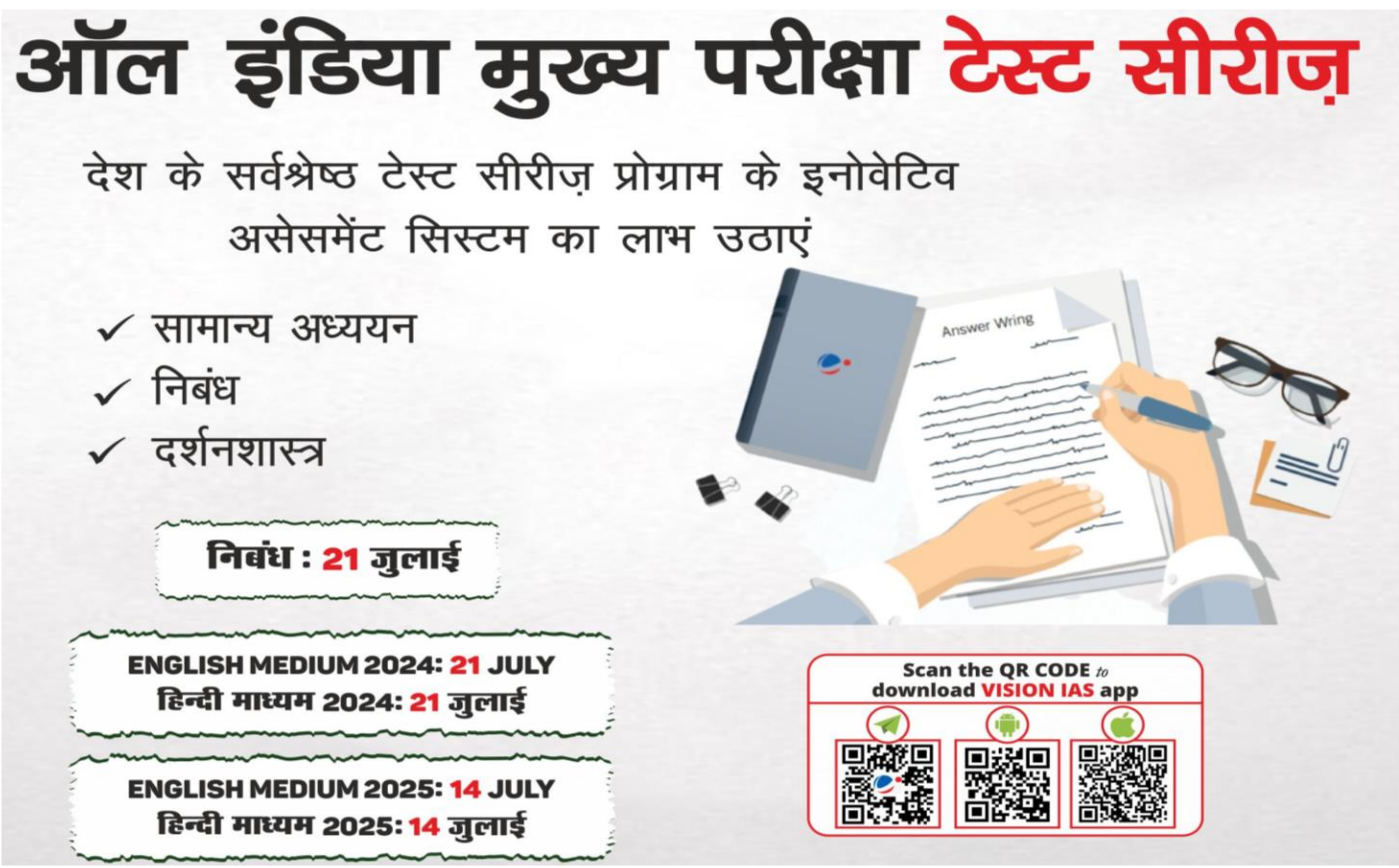

1.12. निष्पक्षता और गैर-पक्षपात (Impartiality and Non-Partisanship)

निष्पक्षता और गैर-पक्षपात

- **अर्थ: किसी व्यक्ति या समूह को दूसरों की तुलना में वरीयता न देना तथा व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों को अपने कार्यों में शामिल न करना ही निष्पक्षता है।** दूसरी ओर, **गैर-पक्षपात** का एक विशेष अर्थ है जो एक सिविल सेवक द्वारा **'गैर-राजनीतिक व्यवहार'** को दर्शाता है।
- सिविल सेवकों को राजनीतिक प्रतिनिधियों की मदद करने और उन्हें तकनीकी सलाह देने के लिए तैयार रहना चाहिए तथा स्वयं को राजनीति से दूर रखना चाहिए।
- **सिविल सेवाओं में निष्पक्षता और गैर-पक्षपात:**
  - सिविल सेवक भारत के संविधान के तहत कार्य करने हेतु बाध्य होते हैं और अनुच्छेद 15 जैसे प्रावधान सिविल सेवकों के लिए निष्पक्षता का पालन करना अनिवार्य करते हैं।
    - हालांकि, **असमान परिस्थितियों** में निष्पक्षता की जगह गैर-पक्षपात और न्याय सुनिश्चित करने का प्रयास किया जा सकता है। उदाहरण के लिए- **सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण।**
  - एक संस्था के रूप में सिविल सेवाओं के गैर-राजनीतिक चरित्र में जनता का विश्वास बनाए रखने के लिए सिविल सेवकों को गैर-पक्षपातपूर्ण होना आवश्यक है।
    - एक सिविल सेवक गैर-पक्षपातपूर्ण होने पर ही राजनीतिक प्रतिनिधियों को वैकल्पिक नीतियों का सुझाव देने का प्रयास कर सकता है।

जीवन में गैर-पक्षपात से जुड़े उदाहरण

भारत के पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त **टी. एन. शेषन (1990-1996)** ने चुनाव संबंधी कई सुधारों को लागू किया और किसी भी राजनीतिक दबाव के आगे झुके बिना गैर-पक्षपातपूर्ण तरीके से स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित किए।

भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (UIDAI) के पूर्व अध्यक्ष **नंदन नीलेकणी** ने आधार के तकनीकी और प्रशासनिक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए केंद्र में सत्तारूढ़ पार्टी की परवाह किए बिना विभिन्न सरकारों के साथ मिलकर काम किया। यह भारत में शासन के प्रति नीलेकणी के गैर-पक्षपाती दृष्टिकोण के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

VISIONIAS INSPIRING INNOVATION
SANDHAN
Vision IAS की ओर से पर्सनलाइज्ड टेस्ट सीरीज
(UPSC प्रीलिम्स के लिए स्मार्ट रिवीजन, प्रैक्टिस और समग्र तैयारी हेतु ऑल इंडिया GS प्रीलिम्स टेस्ट सीरीज के तहत एक पर्सनलाइज्ड टेस्ट सीरीज)
- UPSC द्वारा विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्नों के साथ-साथ VisionIAS द्वारा तैयार किए गए 15,000 से अधिक उच्च गुणवत्ता वाले प्रश्नों का विशाल संग्रह
- अपनी जरूरत के अनुसार विषयों और टॉपिक्स का चयन करके पर्सनलाइज्ड टेस्ट तैयार करने की सुविधा
- परफॉर्मेंस इंप्रूवमेंट टेस्ट (PIT)
- टेस्ट में अभ्यर्थी के प्रदर्शन के आधार पर, सुधार की गुंजाइश वाले क्षेत्रों पर फीडबैक
प्रारंभ: 14 जुलाई
अधिक जानकारी के लिए दिए गए QR कोड को स्कैन कीजिए

1.13. अभिवृत्ति (Attitude)

अभिवृत्ति

अर्थ: अभिवृत्ति को किसी व्यक्ति के किसी विषय या किसी अन्य **व्यक्ति को देखने** और उसका **मूल्यांकन** करने के तरीके के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यह किसी **निश्चित विचार, वस्तु, व्यक्ति या स्थिति** के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक प्रतिक्रिया करने की प्रवृत्ति या पूर्वधारणा होती है।

अभिवृत्ति के घटक

संज्ञानात्मक (Cognitive)	व्यवहारात्मक (Behavioural)	भावात्मक (Affective)
यह किसी व्यक्ति के ज्ञान को दर्शाता है, जिसमें सत्य या असत्य, अच्छा या बुरा, वांछनीय या अवांछनीय चीजों के बारे में निश्चितता के अलग-अलग स्तर होते हैं।	यह किसी व्यक्ति द्वारा किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थिति के प्रति उनकी संज्ञानात्मक और भावात्मक प्रतिक्रिया पर आधारित व्यवहार करना है।	यह एक भावनात्मक घटक है जो मनोवृत्तिगत अभिप्राय जैसे पसंद और नापसंद, या उत्पन्न भावनाओं के प्रति चेतना का निर्माण करता है।

अभिवृत्ति को निर्धारित करने वाले कारक

क्लासिकल कंडीशनिंग: बार-बार अनुभवहीन प्रोत्साहन के चलते एक तटस्थ प्रोत्साहन भी वही अनुभवहीन प्रतिक्रिया पैदा करने लगता है।
- **उदाहरण के लिए-** शीतल पेय के विज्ञापनों में अक्सर खुशी, दोस्ती और उत्सव की छवियां दिखाई जाती हैं। इस कारण, समय के साथ-साथ लोग शीतल पेय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति अपना सकते हैं, तथा उसे सुखद भावनाओं से जोड़ सकते हैं।

इंस्ट्रूमेंटल कंडीशनिंग: व्यक्ति उन व्यवहारों को सीखते हैं जिसे **पुरस्कृत** किया जाता है तथा ऐसे व्यवहारों का अनुसरण करने की संभावना बढ़ जाती है। इसके विपरीत जिन व्यवहारों को पुरस्कृत नहीं किया जाता है उनका अनुसरण करने की संभावना घट जाती है।
- **उदाहरण के लिए-** बच्चे यह सीखते हैं कि वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए माता-पिता के समान अभिवृत्ति का अनुसरण करना महत्वपूर्ण है।

कॉग्निटिव अप्रेजल्स: अभिवृत्ति का विकास करने के लिए जानकारी और अनुभवों का मूल्यांकन करना आवश्यक होता है।
- **उदाहरण के लिए-** मतदाता राजनीतिक उम्मीदवारों की नीतियों और बहस के प्रदर्शन का विश्लेषण करके उनके बारे में अपनी राय बनाते हैं।

ऑब्ज़र्वेशनल लर्निंग: सहकर्मियों के व्यवहार और उनके परिणामों के जरिए अभिवृत्ति का विकास करना।
- **उदाहरण के लिए-** छात्र परिवार के सदस्यों की जीवन शैली और नौकरी से संतुष्टि के आधार पर व्यवसायों के बारे में अपनी अभिवृत्ति विकसित करते हैं।

पर्सुएशंस: संचार के जरिए अभिवृत्ति को **बदलने के लिए** जानबूझकर किए गए प्रयास।
- **उदाहरण के लिए-** आकर्षक विज्ञापन देखने के बाद किसी उत्पाद के प्रति उपभोक्ताओं की अभिवृत्ति में बदलाव हो सकता है।

अभिवृत्ति की कार्य-प्रणाली

ज्ञान: इससे नई जानकारियों को व्यवस्थित रूप से स्वीकार करने और उनका विश्लेषण करने में मदद मिलती है। इससे हम अपने आस-पास के माहौल और स्थिति को समझ एवं उसके अनुसार कार्य कर सकते हैं।

- **उदाहरण के लिए-** किसी व्यक्ति के बारे में जानकारी के अभाव में लोग उस व्यक्ति के बारे में निर्णय लेने के लिए पूर्वाग्रह से ग्रसित अभिवृत्ति अपनाते हैं।

उपयोगितावादी: यह हमारे सामाजिक और भौतिक परिवेश से अधिकतम लाभ प्राप्त करने तथा लागत को कम करने वाले तरीकों को अपनाकर हमारे व्यवहार का मार्गदर्शन करता है।

- **उदाहरण के लिए- ISRO के सफल अंतरिक्ष मिशनों के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति** विज्ञान, शिक्षा और STEM (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग तथा गणित) के क्षेत्र में करियर बनाने के लिए प्रोत्साहन प्रदान करके एक उपयोगितावादी कदम के रूप में काम कर सकती है।

अहम् की रक्षा: यह **आत्म-सम्मान** की रक्षा करने, एक सकारात्मक **आत्म-अवधारणा** को बनाए रखने और भावनात्मक संघर्षों से निपटने में मदद करता है।

- **उदाहरण के लिए-** अवास्तविक सौंदर्य मानकों द्वारा पोषित अधूरेपन की भावनाओं से रक्षा करते हुए बॉडी पॉजिटिविटी मूवमेंट ने शरीर के विविध प्रकारों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को प्रोत्साहन दिया है।

मूल्यों की अभिव्यक्ति: इससे हमारी स्वयं की व्यक्तिगत भावनाओं को सत्यापित कर दूसरों को **हमारे मूल्यों को संप्रेषित करना सुलभ** हो जाता है।

- **उदाहरण के लिए-** बिश्नोई समुदाय द्वारा प्रकृति के साथ शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का मूल्य पर्यावरण संरक्षण के प्रति उनके सकारात्मक अभिवृत्ति में परिलक्षित होता है।

1.14. सामाजिक प्रभाव और अनुनय (Social Influence And Persuasion)

सामाजिक प्रभाव और अनुनय

अर्थ: सामाजिक प्रभाव वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अन्य लोगों के साथ सामाजिक संपर्क के परिणामस्वरूप अपनी राय या व्यवहार को बदलते हैं अथवा अपनी मान्यताओं को संशोधित करते हैं।

सामाजिक प्रभाव के मॉडल

	व्यवहार	अभिवृत्ति	मूल्य
अनुपालन (Compliance)	✔	✘	✘
पहचान (Identification)	✔	✔	✘
आत्मसात्करण (Internalization)	✔	✔	✔

सामाजिक प्रभाव के विभिन्न प्रकार

अनुरूपता (Conformity): किसी समूह या समाज के मानदंडों, विचारों या व्यवहारों के साथ खुद को ढाल लेना।
- **उदाहरण के लिए-** सरकारी कार्यालयों में बायोमेट्रिक उपस्थिति प्रणाली की शुरुआत करना, ताकि समय की पाबंदी के मानदंड को व्यापक रूप से अपनाया जा सके।

स्व-पूर्ति की भविष्यवाणी यानी व्यवहारिक पुष्टि (Self-fulfilling prophecy): एक ऐसी भविष्यवाणी जो लोगों की मान्यताओं और परिणामी व्यवहारों के कारण सच साबित होती है। ऐसी भविष्यवाणी किसी व्यक्ति या समूह के व्यवहार को प्रभावित करती है, जिससे भविष्यवाणी अंततः सच हो जाती है।
- **उदाहरण के लिए-** कुछ शहरों (जैसे आई.टी. के लिए बेंगलुरु या वित्त बाजार के लिए मुंबई) के बारे में लोगों की धारणा एक उद्योग केंद्र के रूप में बनी हुई है। ये शहर और अधिक कंपनियों एवं कुशल पेशेवरों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं, जिससे उनकी स्थिति और अधिक मजबूत होती है।

आज्ञाकारिता (Obedience): किसी प्राधिकरण के निर्देश या अधिकारी के सीधे आदेश दिए जाने के कारण अपने व्यवहार में बदलाव लाना।
- **उदाहरण के लिए-** उच्च अधिकारियों से नीतिगत निर्देश प्राप्त होने पर उसका कार्यान्वयन करना, जैसे कि कोविड-19 महामारी के दौरान अचानक ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली को अपनाना।

अनुनय (Persuasion): किसी व्यक्ति के विचारों को बदलने या जानकारी, भावनाओं या तर्क के जरिए उसे किसी ख़ास तरह से कार्य करने के लिए प्रेरित करने का प्रयास करना।

अनुनय के तरीके

इथोस (Ethos) (विश्वसनीयता के आधार पर अपील करना)	पैथोस (Pathos) (भावनाओं के आधार पर अपील करना)	लोगोस (Logos) (तर्क के आधार पर अपील करना)
उदाहरण के लिए- नए निष्कर्ष प्रस्तुत करने से पहले शोधकर्ता अपनी योग्यता और कार्य के अनुभव का हवाला देते हैं।	**उदाहरण के लिए-** गर्व और एकता का भाव जगाने के लिए राष्ट्रीय प्रतीकों या ऐतिहासिक घटनाओं का उपयोग करना।	**उदाहरण के लिए-** तंबाकू विरोधी अभियानों में धूम्रपान को हतोत्साहित करने के लिए फेफड़ों के कैंसर के बढ़ते मामलों से जुड़े आंकड़े प्रदर्शित करना।

अनुनय को प्रभावित करने वाले कारक

स्रोत: स्रोत की विश्वसनीयता, स्रोत के प्रति निष्ठा, स्रोत के विषय में विशेषज्ञता तथा स्रोत का अधिकार क्षेत्र आदि।
- **उदाहरण के लिए–** एम्स के पूर्व निदेशक डॉ. रणदीप गुलेरिया ने कोविड-19 से बचाव के लिए किए जाने वाले उपायों के बारे में बताया था।

लक्षित लोगों की विशेषताएं: दर्शकों की मौजूदा मान्यताएं और जानकारी का स्तर, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि आदि।
- **उदाहरण के लिए–** अलग-अलग जनसांख्यिकी के लिए समर्पित वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों को तैयार करना, ग्रामीण क्षेत्रों के लिए सरल शब्दों में संदेश तैयार करना तथा शहरी पेशेवरों के लिए अधिक परिष्कृत सामग्री तैयार करना।

संदेश सामग्री: दर्शकों के लिए संदेश की प्रासंगिकता, संदेश की स्पष्टता और अस्पष्टता आदि।
- **उदाहरण के लिए–** स्वच्छता तथा स्वास्थ्य और गरिमापूर्ण जीवन पर इसके प्रभाव के बारे में स्पष्ट और प्रासंगिक संदेशों का प्रसार करके स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की गई।

पारस्परिकता: अनुरोध करने से पहले कुछ मूल्यवान चीज़ की पेशकश करना।
- **उदाहरण के लिए–** 'गिव इट अप' अभियान के बाद पी.एम. उज्ज्वला योजना की शुरुआत करना।

सामाजिक प्रमाण: यह प्रदर्शित करना कि अन्य लोगों ने पहले से ही इस विश्वास या व्यवहार को अपना लिया है।
- **उदाहरण के लिए–** 'आदर्श ग्राम योजना' के तहत कुछ गांवों को आदर्श गांव के रूप में विकसित करना ताकि उसके आस-पास के गांवों को समान विकास प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया जा सके।

समय और संदर्भ: वह माहौल जिसमें संदेश दिया जाता है, वर्तमान मुद्दे, आदि।
- **उदाहरण के लिए–** महामारी के दौरान जब आर्थिक आत्मनिर्भरता को लेकर चिंताएं अधिक थीं तब "वोकल फॉर लोकल अभियान" की शुरुआत की गई।

यहां स्कैन करें

एथिक्स
क्रैश कोर्स 2024
(अवधारणात्मक समझ के साथ प्रभावी उत्तर लेखन और बेहतर विश्लेषणात्मक क्षमता के लिए एक मजबूत आधार तैयार कीजिए)
9 जुलाई, 1:00 PM
क्लास में संरचित और इंटरैक्टिव अध्ययन
स्टूडेंट पोर्टल पर लाइव और रिकॉर्डेड क्लासेज का एक्सेस
अवधारणात्मक स्पष्टता के साथ व्यावहारिक अनुप्रयोग पर फोकस
केस स्टडीज में विषयगत और समसामयिक नैतिक मुद्दे
वन टू वन मेंटरिंग सहयोग और मार्गदर्शन
संपूर्ण एथिक्स सिलेबस की SMART कवरेज
डेली क्लास असाइनमेंट, मिनी टेस्ट और डिस्कसन
उत्तर लेखन अभ्यास के साथ प्रदर्शन मूल्यांकन और फीडबैक
SMART और काम्प्रीहेन्सिव स्टडी मटेरियल (केवल सॉफ्ट कॉपी)

1.15. भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence)

भावनात्मक बुद्धिमत्ता

अर्थ: भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) किसी व्यक्ति की स्वयं और दूसरों की भावनाओं को पहचानने, समझने और प्रबंधित करने की क्षमता है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता के क्षेत्र और क्षमताएं

आत्म-जागरूकता	आत्म-प्रबंधन	सामाजिक-जागरूकता	संबंध-प्रबंधन
भावनात्मक आत्म-जागरूकता	भावनात्मक आत्म-नियंत्रण	समानुभूति	प्रभाव
	अनुकूलनशीलता		प्रशिक्षक और मार्गदर्शक
			संघर्ष-प्रबंधन
	लक्ष्य-उन्मुख	संगठनात्मक जागरूकता	टीम वर्क
	सकारात्मक दृष्टिकोण		प्रेरणात्मक नेतृत्व

गवर्नेंस में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का महत्त्व

नेतृत्व में प्रभावशीलता: उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले लीडर्स अपनी टीमों को बेहतर ढंग से प्रेरित और प्रोत्साहित कर सकते हैं।
- उदाहरण के लिए- न्यूजीलैंड की पूर्व प्रधान मंत्री जैसिंडा अर्डर्न ने संकट के दौरान देश को एकजुट करने में मदद करने के लिए क्राइस्टचर्च मस्जिद गोलीबारी (2019) के प्रति अपनी प्रतिक्रिया में उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन किया था।

निर्णय लेना: भावनात्मक बुद्धिमत्ता से प्रशासकों को नीतियों और निर्णयों के भावनात्मक प्रभाव को समझने में मदद मिलती है। साथ ही, यह हितधारकों के लिए समानुभूति के साथ संतुलित व तर्कसंगत विश्लेषण करने में सहायता भी करती है।
- उदाहरण के लिए- GST के क्रियान्वयन के लिए केंद्र सरकार की ओर से विभिन्न राज्यों, व्यवसायों आदि की भावनाओं तथा चिंताओं को दूर करने के लिए उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता की आवश्यकता थी।

संचार: भावनात्मक बुद्धिमत्ता संदेशों को स्पष्ट और प्रेरक ढंग से व्यक्त करने की क्षमता को बढ़ाती है तथा सक्रिय रूप से सुनने से संबंधित कौशल में भी सुधार करती है।
- उदाहरण के लिए- कोविड-19 महामारी के दौरान स्वास्थ्य दिशा-निर्देशों के बारे में स्पष्ट और सहानुभूतिपूर्ण संचार ने भय और सार्वजनिक चिंता के प्रभावी प्रबंधन में मदद की।

विवादों का समाधान: भावनात्मक बुद्धिमत्ता के चलते विभागों, कर्मचारियों या जनता के बीच विवादों को बेहतर तरीके से प्रबंधित करने में मदद मिलती है, जिससे सभी के लिए फायदेमंद समाधान खोजने में आसानी होती है।
- उदाहरण के लिए- नागा शांति समझौते की वार्ता में सरकार और नागा समूहों के बीच जटिल ऐतिहासिक तथा भावनात्मक मुद्दों को सुलझाने के लिए उच्च स्तरीय भावनात्मक बुद्धिमत्ता की आवश्यकता थी।

सार्वजनिक सहभागिता और परिवर्तन-प्रबंधन: समानुभूतिपूर्ण वार्ता के माध्यम से जनता में विश्वास को बढ़ाना और परिवर्तन के खिलाफ प्रतिरोध को प्रेरित करने वाली अंतर्निहित भावनाओं की पहचान कर उनका प्रबंधन करना।

- उदाहरण के लिए- टी.एन. शेषन (पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त) ने चुनावों की अखंडता में सुधार करने के लिए जमीनी हकीकत की समझ के साथ नियमों के सख्त प्रवर्तन को संतुलित करने के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल किया था।

सामाजिक बुद्धिमत्ता

- **अर्थ:** यह किसी व्यक्ति की पारस्परिक संबंधों को समझने और प्रबंधित करने की क्षमता को संदर्भित करती है।

सामाजिक बुद्धिमत्ता के पहलू

सामाजिक जागरूकता:

- **आदिम समानुभूति:** शारीरिक हाव-भाव के माध्यम से दूसरों की भावनाओं को समझना।
- **सामंजस्य:** पूर्ण ग्रहणशीलता के साथ सुनना; व्यक्ति के साथ सामंजस्य बिठाना।
- **सटीक समानुभूति:** दूसरे व्यक्ति के विचारों, भावनाओं और इरादों को समझना।
- **सामाजिक अनुभूति:** यह समझना कि सामाजिक दुनिया कैसे चलती है।

सामाजिक सुविधा:

- **समन्वयता:** शारीरिक हाव-भाव या अशाब्दिक स्तर पर दूसरों के साथ आसानी से वार्ता करना।
- **आत्म-प्रस्तुति:** खुद को अच्छी तरह से प्रस्तुत करना।
- **प्रभाव:** सामाजिक अंतःक्रिया के निष्कर्षों को आकार देना।
- **चिंता:** दूसरों की जरूरतों का ख्याल रखना और उसके अनुसार कार्य करना।

Lakshya
MAINS MENTORING PROGRAM 2024
16 जुलाई 2024
(मुख्य परीक्षा – 2024 के लिए एक लक्षित रिवीजन, प्रैक्टिस और परामर्श कार्यक्रम)
50 दिवसीय विशेषज्ञ परामर्श
मेंटर्स की अत्यधिक अनुभवी और योग्य टीम
GS मुख्य परीक्षा, निबंध और नीतिशास्त्र के प्रश्न–पत्रों के लिए रिवीजन और प्रैक्टिस की सुनियोजित योजना
शोध आधारित विषयवार रणनीतिक दस्तावेज
स्ट्रेटेजिक डिस्कशन, लाइव प्रैक्टिस और सहपाठियों के साथ चर्चा के लिए निर्धारित ग्रुप सेशन
अधिक अंकदायी विषयों पर विशेष बल
लक्ष्य मेन्स प्रैक्टिस टेस्ट की सुविधा
मेंटर्स के साथ वन–टू–वन सेशन
निरंतर प्रदर्शन मूल्यांकन और निगरानी

सिविल सेवा मुख्य परीक्षा के लिए उत्तर लेखन

UPSC मुख्य परीक्षा में सबसे ज्यादा उत्तर लेखन का कौशल मायने रखता है। इसका कारण यह है कि उत्तर लिखने की कला ही अभ्यर्थियों के लिए अपने ज्ञान, समझ, विश्लेषणात्मक क्षमता और टाइम मैनेजमेंट के कौशल को प्रदर्शित करने के एक प्राथमिक साधन के रूप में कार्य करती है। मुख्य परीक्षा में प्रभावी उत्तर लेखन, इन्फॉर्मेशन को सही तरीके से पेश करने, विविध दृष्टिकोणों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने और संतुलित तर्क प्रस्तुत करने की क्षमता प्रदर्शित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। कुशलतापूर्वक एवं समग्रता से लिखा गया उत्तर, परीक्षा में अधिकतम अंक प्राप्त करने एवं इस प्रतिस्पर्धी माहौल में अभ्यर्थियों को भीड़ से अलग करने में सहायक होता है, जो अंततः UPSC मुख्य परीक्षा में उनकी सफलता का निर्धारण करता है।

प्रभावशाली उत्तर लेखन के प्रमुख घटक

संदर्भ की पहचानः प्रश्न के थीम या टॉपिक को समझना एवं उस टॉपिक के संदर्भ में ही अपना उत्तर लिखना।

सटीक एवं प्रभावी इंट्रोडक्शनः उत्तर शुरू करने के लिए भूमिका को आकर्षित ढंग से लिखने से, परीक्षक का ध्यान आकर्षित होता है एवं इससे उत्तर के आगे होने वाली चर्चाओं का संक्षिप्त विवरण मिलता है।

संतुलित निष्कर्षः मुख्य बिंदुओं को संक्षेप में लिखने का प्रयास करना चाहिए। यदि प्रश्न में पूछा गया हो तो अंतर्दृष्टि या सिफारिशें प्रस्तुत करनी चाहिए। साथ ही, अपने तर्क या चर्चा को संतोषजनक निष्कर्ष तक पहुंचाना भी आवश्यक होता है।

कंटेंट की प्रस्तुतीः विषय-वस्तु की व्यापक समझ का प्रदर्शन करना भी जरूरी होता है। इसके लिए प्रश्न से संबंधित सटीक तथ्यों, प्रासंगिक उदाहरणों एवं व्यावहारिक विश्लेषण को उत्तर में शामिल करना चाहिए।

संरचना एवं प्रस्तुतीकरणः उत्तर को क्लियर हेडिंग के साथ, सब-हेडिंग या बुलेट पॉइंट के माध्यम से व्यवस्थित तरीके से लिखना आवश्यक होता है। इसके अलावा, आसान समझ के लिए जानकारी को तार्किक ढंग से एवं बेहतर रूप से प्रस्तुत करना जरूरी होता है।

भाषाः संदर्भ के अनुरूप सटीक और औपचारिक भाषा का उपयोग करना आवश्यक होता है। साथ ही, शब्दजाल, आम बोलचाल की भाषा के इस्तेमाल या अस्पष्टता से बचते हुए अभिव्यक्ति में प्रवाह एवं स्पष्टता का प्रदर्शन करना आवश्यक होता है।

Vision IAS के "ऑल इंडिया GS मेन्स टेस्ट सीरीज़ और मेंटरिंग प्रोग्राम" से जुड़कर प्रभावशाली उत्तर लेखन की कला एवं रणनीति में महारत हासिल कीजिए। इस प्रोग्राम में शामिल हैं:

- उत्तर लेखन पर 'मास्टर क्लासेज'
- विस्तृत मूल्यांकन
- व्यक्तिगत मेंटरिंग
- फ्लेक्सिबल टेस्ट शेड्यूल
- व्यापक फीडबैक
- पोस्ट-टेस्ट डिस्कशन

यह हमेशा ध्यान रखिए कि **सिविल सेवा मुख्य परीक्षा UPSC CSE** की यात्रा का एक चरण मात्र नहीं है, बल्कि यह सिविल सेवाओं में प्रतिष्ठित पद तक पहुंचने का एक डायरेक्ट गेटवे है। इस प्रकार, यह परीक्षा आपकी आकांक्षाओं को वास्तविकता में बदल देता है।

"ऑल इंडिया GS मेन्स टेस्ट सीरीज़ और मेंटरिंग प्रोग्राम" के लिए रजिस्टर करने और ब्रोशर डाउनलोड करने हेतु QR कोड को स्कैन कीजिए।

टॉपर्स के एप्रोच और तैयारी की रणनीतियों को जानने के लिए QR कोड को स्कैन कीजिए

अहमदाबाद | भोपाल | चंडीगढ़ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची | सीकर

2. सरकारी और निजी संस्थानों से संबद्ध नैतिक चिंताएं और दुविधाएं (Ethical Concerns and Dilemmas in Government and Private Institutions)

2.1. विधि निर्माताओं की नैतिकता (Ethics of Lawmakers)

परिचय

विभिन्न अवसरों पर, भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में **विधि निर्माताओं के आचरण** को लेकर चिंताएं प्रकट की गई हैं। ऐसे उदाहरणों में संसद की आचार समिति (Ethics Committee) द्वारा **'प्रश्न पूछने के बदले पैसा'** (Cash for Query) लेने से जुड़े मामलों की जांच करना और सदन में मर्यादाहीन आचरण के लिए कुछ सांसदों को निलंबित किया जाना शामिल हैं। ऐसे मुद्दों के देखे जाने के मुख्य कारण **सार्वजनिक जीवन में मूल्यों का ह्रास** है।

हितधारक और उनकी भूमिका/ जिम्मेदारी		
हितधारक	**भूमिका**	**ज़िम्मेदारी**
नागरिक/ मतदाता	सांसदों का चुनाव करना और उन्हें जवाबदेह बनाना।	जागरूक मतदाता बनना, लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भाग लेना और **अपने निर्वाचित प्रतिनिधियों से नैतिक व्यवहार करने पर बल देना।**
राजनीतिक दल	उम्मीदवारों का चयन एवं समर्थन करना।	यह सुनिश्चित करना कि उम्मीदवार **नैतिक मानदंडों का पालन** करें और **सत्यनिष्ठा की संस्कृति को बढ़ावा** दें।
मीडिया	जनता को सूचित करना और विधि निर्माताओं एवं उनके कार्यों के बारे में जनता की राय को आकार देना।	सटीक और वस्तुनिष्ठ रिपोर्टिंग करना, खोजी पत्रकारिता के जरिए **विधि निर्माताओं को जवाबदेह** बनाना और सनसनीखेज या पक्षपातपूर्ण रिपोर्टिंग से बचना।
न्यायतंत्र	कानून की व्याख्या करना और उसका पालन सुनिश्चित करना, कानून निर्माताओं के कार्यों पर निगरानी रखना।	**कानूनी प्रक्रियाओं का पालन** सुनिश्चित करना और **भ्रष्टाचार या नैतिक उल्लंघन के मामलों** पर समय पर न्याय देना।
निर्वाचन आयोग	स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव कराना।	**चुनाव अभियानों की निगरानी** करना, निर्वाचन नियमों को लागू करना और यह सुनिश्चित करना कि उम्मीदवार नैतिक मानदंडों का पालन करें।

विधि निर्माताओं में नैतिक मूल्यों के ह्रास के कारक

- **संस्थागत सत्यनिष्ठा से समझौता:** इसके चलते रिश्वतखोरी, गबन और भ्रष्टाचार के मामले सामने आते हैं, जिससे संस्थाओं के ऊपर लोगों का विश्वास कम होता जाता है।
    - उदाहरण के लिए- राष्ट्रमंडल खेल घोटाला आदि।
- **राजनीति का अपराधीकरण:** 1995 में वोहरा समिति ने **आपराधिक गिरोहों, पुलिस, नौकरशाही और राजनेताओं के बीच सांठगांठ** की बात कही थी।
- **आपराधिक न्याय प्रणाली की सीमाएं:** मौजूदा आपराधिक न्याय प्रणाली विभिन्न आपराधिक गतिविधियों से निपटने में चुनौतियों का सामना कर रही है। इस तरह की गतिविधियों में **संगठित अपराध,** आर्थिक अपराध, आपराधिक सांठगांठ वाले गंभीर अपराध शामिल हैं।
- **हितों का टकराव:** उदाहरण के लिए- व्यावसायिक हित रखने वाला एक विधि निर्माता जो पर्यावरण नियमों में प्रस्तावित संशोधनों से महत्वपूर्ण लाभ प्राप्त करना चाहता है, ऐसे संशोधनों पर मतदान करने से बचेगा एवं यहाँ पर हितों का स्पष्ट टकराव प्रदर्शित होगा।
- **अन्य कारक: भाई-भतीजावाद और वंशवाद की राजनीति, हित समूहों का प्रभाव** (शक्तिशाली हित समूह, चाहे व्यावसायिक हों या सामाजिक, व्यक्तिगत या सामूहिक हितों के पक्ष में विधि निर्माताओं को अनुचित रूप से प्रभावित करते हैं)।

आगे की राह

- **विधिक उपायों को मजबूत करना:** व्हिसिलब्लोअर्स की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए कानूनी प्रावधानों को बेहतर करना और कठोर दंड के साथ भ्रष्टाचार-विरोधी कड़े कानूनों को लागू करना चाहिए।
- **आचार संहिता:** आचार संहिता, व्यवहार के कुछ मानक मानदंडों को विकसित करने में मदद कर सकती है। आचार संहिता का सार विधि निर्माताओं के बीच **आत्म-अनुशासन को प्रोत्साहित करना** है।

- **राजनीतिक दल के स्तर पर सुधार:** चुनाव आयोग ने राजनीतिक दलों को एक संगठन के रूप में कार्य करने के तरीके के तहत अपने पदाधिकारियों का औपचारिक और समय-समय पर चुनाव करने का निर्देश दिया है।
- **चुनाव सुधार:** चुनावों में धन बल की भूमिका को कम करने के उपाय अपनाने चाहिए। इसमें चुनाव खर्चों की सीमा आदि शामिल है।
- **सदन में दंड:** कई बार किसी सांसद/ विधायक के विरुद्ध **अनैतिक या अन्य कदाचार या संहिता के उल्लंघन** का आरोप साबित हो जाता है। ऐसी स्थिति में उसे कई तरह से दंडित किया जा सकता है, जैसे- सदन में निंदा प्रस्ताव; फटकारना; सदन से किसी विशिष्ट अवधि के लिए निलंबन करना या उसकी सदस्यता को समाप्त करना आदि।

> **निर्णय लेते समय दुविधा होने की स्थिति में सबसे बेहतर होता है न्यायोचित कदम उठाना और सबसे बुरा होता है कुछ न करना।**
>
> — थियोडोर रूजवेल्ट

2.2. राजनीतिक नैतिकता और हितों का टकराव (Political Ethics and Conflict of Interest)

प्रस्तावना

हाल ही में, कलकत्ता हाई कोर्ट के एक न्यायाधीश और पश्चिम बंगाल के एक वरिष्ठ आई.पी.एस. अधिकारी ने अपने पदों से इस्तीफा दे दिया और वे राजनीतिक दलों में शामिल हो गए। इससे एक बार फिर संवैधानिक प्राधिकारियों और नौकरशाही के स्वतंत्र काम-काज तथा उनके कर्तव्यों के निर्वहन के दौरान हितों के टकराव को लेकर कुछ प्रश्न उठाए गए हैं।

हितधारक और उनकी भूमिका/ हित	
हितधारक	**भूमिका/ हित**
न्यायाधीश/ नौकरशाह	व्यक्तिगत अधिकारों का प्रयोग, राजनीतिक आकांक्षाओं की पूर्ति, लोक सेवा की इच्छा, आदि।
राजनीतिक दल	शासन संबंधी ज्ञान के साथ अनुभवी व्यक्तियों को शामिल करना, न्यायाधीशों/ नौकरशाहों की सार्वजनिक छवि का लाभ उठाकर अपने दल की विश्वसनीयता बढ़ाना, आदि।
नागरिक/ नागरिक समाज	उचित और निष्पक्ष न्याय प्रणाली, कुशल और राजनीतिक रूप से तटस्थ नौकरशाही, उनके अधिकारों की सुरक्षा, आदि।
संस्थाएं (न्यायपालिका/लोक प्रशासन)	संस्थाओं में लोगों का विश्वास कम हो जाना, संस्थागत सत्यनिष्ठा की रक्षा करना, आदि।
सरकार	अपनी नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन, संस्थानों की विश्वसनीयता सुनिश्चित करना, स्वतंत्र नीति निर्माण की क्षमता रखना, आदि।

न्यायाधीशों और नौकरशाहों के राजनीति में शामिल होने के नैतिक निहितार्थ

- **संवैधानिक सिद्धांतों का उल्लंघन: शक्तियों का पृथक्करण** लोकतांत्रिक शासन में एक मौलिक **सिद्धांत** है। इसमें सत्ता/ शक्ति के संकेन्द्रण को रोकने और संतुलन बनाए रखने के लिए विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका को अलग रखा जाता है।
- **हितों का टकराव:** राजनीतिक आकांक्षाओं वाले न्यायाधीश या नौकरशाह अपने आधिकारिक कर्तव्यों का पालन करते समय राजनीतिक विचारों से प्रभावित हो सकते हैं। इससे उनकी स्वायत्तता और स्वतंत्र रूप से कार्य करने की क्षमता बाधित हो सकती है।
- **न्यायिक निष्पक्षता:** न्यायपालिका की विश्वसनीयता जनता के समक्ष पारदर्शिता और निष्पक्षता की धारणा पर ही निर्भर करती है। ऐसे में **सेवानिवृत्ति के बाद किसी राजनीतिक दल से जुड़ाव न्यायाधीश द्वारा पक्षपात की धारणा को प्रबल बनाती** है, भले ही पूर्व में न्यायाधीश के **वास्तविक इरादे कुछ भी रहे हों।**

- **नौकरशाही तटस्थता:** लोक सेवकों की राजनीतिक संबद्धता **लोक सेवाओं के राजनीतिकरण और नीतियों के कार्यान्वयन** में विकृतियों को जन्म दे सकती है।

न्यायपालिका का मार्गदर्शन करने वाले नैतिक सिद्धांत

- **संवैधानिक शपथ:** न्यायाधीश बनने वाले व्यक्ति को संविधान की तीसरी अनुसूची के तहत शपथ लेनी होती है कि वह बिना किसी भय या पक्षपात, स्नेह या द्वेष के अपने कर्तव्यों का पालन करेगा।
- **बेंगलुरु प्रिंसीपल्स ऑफ ज्यूडीशियल कंडक्ट (2002):** ये न्यायाधीशों के नैतिक आचरण के लिए मानक स्थापित करने के लिए बनाए गए हैं।

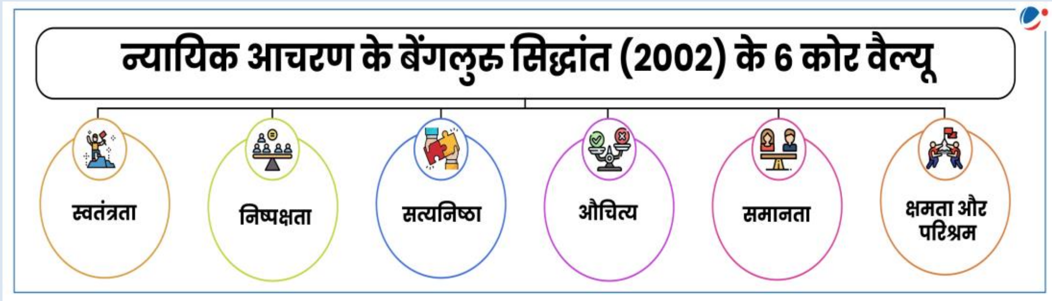

आगे की राह

- **कूलिंग-ऑफ अवधि:** यह सुझाव दिया जाता है कि सेवानिवृत्ति और राजनीतिक/ अन्य नियुक्तियों में शामिल होने के बीच **कम-से-कम दो साल की कूलिंग-ऑफ अवधि** होनी चाहिए।
  - **चुनाव आयोग ने 2012 में केंद्र सरकार से सिफारिश** की थी कि सेवानिवृत्ति के बाद **शीर्ष नौकरशाहों के लिए** राजनीतिक दलों में शामिल होने और चुनाव लड़ने से पहले **कूलिंग-ऑफ अवधि** की शर्त रखी जाए। हालांकि, सरकार ने इस सिफारिश को खारिज कर दिया था।
    - वर्तमान में, **अखिल भारतीय सेवाओं और केंद्रीय सेवा समूह 'ए' में सेवारत नौकरशाह** एक वर्ष की कूलिंग-ऑफ अवधि के बाद किसी भी व्यावसायिक प्रतिष्ठान में शामिल हो सकते हैं। **{केंद्रीय सिविल सेवा (पेंशन) नियम, 2021}**
  - सुप्रीम कोर्ट ने यह निर्धारित करने ज़िम्मेदारी विधायिका पर छोड़ दिया था कि सेवानिवृत्ति के बाद राजनीति में शामिल होने से पहले नौकरशाहों के लिए कूलिंग-ऑफ अवधि की आवश्यकता है या नहीं। वर्तमान में, व्यावसायिक नियोजन में शामिल होने की इच्छा रखने वाले नौकरशाहों के लिए भी एक वर्ष की कूलिंग-ऑफ अवधि का प्रावधान है।
- **नौकरशाहों के लिए आचार संहिता: द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग** द्वारा सिफ़ारिश की गई आचार संहिता निर्धारित की जानी चाहिए। इसमें लोक प्राधिकारियों के लिए अच्छे व्यवहार और शासन के व्यापक मार्गदर्शक सिद्धांत शामिल होने चाहिए।
- **हितों के टकराव का समाधान:** लोक प्राधिकारियों और न्यायाधीशों को अपने कर्तव्यों के निर्वहन के दौरान उत्पन्न होने वाले हितों के टकराव का समाधान सुनिश्चित करना चाहिए। इसे त्याग, पारदर्शिता और प्रकटीकरण[1] के माध्यम से सुनिश्चित किया जा सकता है।
  - **नीदरलैंड आचार संहिता या मानकों के कोड** के ज़रिए हितों के टकराव को नियंत्रित करता है, जबकि फ्रांस **कानूनों और संहिताओं के मिश्रण** के ज़रिए इसे नियंत्रित करता है।

2.3. भगवद गीता और प्रशासनिक नैतिकता के लिए सीख (Bhagavad Gita And The Learnings For Administrative Ethics)

परिचय

गुजरात सरकार ने शैक्षणिक वर्ष 2022-23 से राज्य के स्कूली पाठ्यक्रम में (कक्षा 6 से 12 तक) भगवत गीता को शामिल किया है।

इस धर्मग्रंथ द्वारा प्रतिपादित नैतिक आचरण के सिद्धांत एवं विचार न केवल स्कूली शिक्षा के लिए बल्कि अन्य क्षेत्रों जैसे व्यावसायिक नैतिकता, चिकित्सीय नैतिकता आदि के लिए भी उपयोगी हैं। इसकी व्यापक उपयोगिता को देखते हुए इसे प्रशासनिक नैतिकता में भी शामिल किया जा सकता है, जो व्यवस्था और प्रशासकों को समान रूप से मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है।

प्रशासन और शासन व्यवस्था से जुड़े नैतिक मुद्दे

- **भ्रष्टाचार,** अर्थात् प्राधिकार का दुरुपयोग और सार्वजनिक धन की बर्बादी। उदाहरण के लिए, भाई-भतीजावाद और रिश्वतखोरी के कारण भारत अभी भी भ्रष्टाचार बोध सूचकांक (CPI)[2] में 85वें स्थान पर है।

---

[1] Recusal, divestiture, and disclosure

[2] Corruption Perception Index

- राजनीतिक हस्तक्षेप और **हेगेलियन एप्रोच** के अनुसरण के कारण **निर्णय लेने में निष्पक्षता का अभाव** देखा जाता रहा है। हेगेलियन एप्रोच के अनुसार, प्राधिकार प्राप्त व्यक्ति खुद को समाज के सार्वभौमिक हित का प्रतिनिधित्व करने वाला समझता है।
    - इससे **निष्क्रियता, प्रक्रियाओं की जटिलता, जनता में अविश्वास, नीरसता** आदि को बढ़ावा मिलता है।
- **अप्रभावी नेतृत्व** या ख़राब निगरानी के चलते उच्च अधिकारी अपने सभी अधीनस्थों से संवैधानिक मूल्यों या न्यूनतम आचार संहिता का अनुपालन करवाने में विफल रहते हैं।
- **प्रशासन तक लोगों का पहुंच नहीं होना और जवाबदेही की कमी** भी इन मुद्दों में शामिल हैं, जैसे कि अधिकारी को लोक सेवक की जगह शासक के दर्जे के रूप में देखा जाता है।
- सूचना के अधिकार जैसे कानूनों के बावजूद **पारदर्शिता और जवाबदेही का अभाव** बना हुआ है।

भगवद गीता की शिक्षाएं, प्रशासन एवं शासन व्यवस्था को बेहतर बनाने में कैसे सहायता कर सकती हैं?

भगवद गीता की शिक्षाएं नैतिक व्यवहार या आचरण के संबंध में लोक सेवकों का मार्गदर्शन करके **प्रभावी**, **जवाबदेह और समावेशी शासन** की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। इससे निर्णयन संबंधी मुद्दों से निपटने और नीतिगत कार्यस्थल का निर्माण करने में मदद मिलेगी:

- **कार्यप्रणाली या व्यवहार में सत्यनिष्ठा:** भगवद गीता में सकाम कर्म की जगह निष्काम कर्म पर बल दिया गया है जो इस ग्रंथ का मूल दर्शन है।
    - **निष्काम कर्म** फल की प्राप्ति की इच्छा के बिना कर्म करना है। यह व्यक्तिगत उत्थान को ध्यान में रखते हुए मोह, अहंकार या निष्क्रियता को दूर कर सत्यनिष्ठा और पवित्रता की ओर ले जाता है। यह **स्व-हित** और **सार्वजनिक लाभ के मध्य उत्पन्न होने वाली नैतिक दुविधाओं को हल करने** में भी मदद करता है।

- **निर्णय लेने में निष्पक्षता:** भगवद गीता की शिक्षाएं **समाज में एकता** को बढ़ावा देती हैं, यानी **सभी को एक साथ/ संगठित बनाए रखने पर जोर** देती हैं।
    - इसकी शिक्षाएं मन की दृढ़ता और **प्रेय पर श्रेय,** अर्थात् आनंद या प्रसन्नता पर अच्छाई या निष्पक्षता को वरीयता देकर **सार्वभौमिक कल्याण (समावेशी और संधारणीय विकास**) की प्रेरणा देती हैं।
- **नेतृत्व विकास:** भगवद गीता **स्वधर्म** अर्थात् **अपने कर्तव्य या धर्म** का पालन करने पर बल देती है।
    - जब नेतृत्व सदाचारी ढंग से अपने कर्तव्यों का पालन करता है, तो अधीनस्थ भी नेतृत्व को मान्यता देते हैं और उसका सम्मान करते हैं और उसके पथ निर्देशन का अनुसरण करते हैं।
- **अभिप्रेरणा:** भगवद गीता मन पर केंद्रित है तथा **सभी में सत्व** और **देवत्व** को बढ़ावा देने के लिए **अवचेतन व चेतन कार्यों** के मध्य अंतर को रेखांकित करती है, ईर्ष्या को दूर करने में मदद करती है और कार्य करने के लिए प्रेरित करती है।
- भगवद गीता प्रशासकों को अलग-अलग गुण विकसित करने में मदद कर सकती है, जैसे-
    - **भावनात्मक बुद्धिमत्ता:** भगवद गीता **स्थितप्रज्ञ** होने अर्थात् समभाव या दृढ़ संकल्प के साथ धीरज रखने पर जोर देती है। यह प्रशासकों को अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण रख कर अपने लक्ष्यों/ उद्देश्यों को दृढ़ संकल्प के साथ हासिल करने में मदद कर सकती है।
    - **करुणा: सत्व** और **मन की शुद्धि** सभी जीवों के प्रति करुणा का भाव रखने में मदद करती है। यह **लोगों की समस्याओं** का समाधान करने की दिशा में आधिकारिक कर्तव्यों का निर्वहन करने के लिए **मन की स्पष्टता** तथा **प्रेरणा** के माध्यम से पूर्वाग्रहों पर विजय प्राप्त करने में प्रशासकों की मदद कर सकती है।

> **जब मैंने "भगवद गीता" जैसे अपने प्राचीन ग्रंथ को पढ़ना शुरू किया, तो मैंने महसूस किया कि यह दैनिक जीवन के लिए उपयोगी हो सकता है, इसलिए मैंने इसका अभ्यास करना शुरू कर दिया। मैं इसको एक प्रशासनिक सिद्धांत मानता हूँ, जो आपको संगठन संचालन जैसे कार्यों में मदद कर सकता है।**
>
> — ई. श्रीधरन

2.4. चरित्र के बिना ज्ञान (Knowledge Without Character)

प्रस्तावना

"डार्क वेब का उपयोग मादक पदार्थों की तस्करी जैसी गैर-कानूनी गतिविधियों के लिए किया जाता है"..। "रूस-यूक्रेन युद्ध और इजराइल-फिलिस्तीन संघर्ष में घातक हथियारों की खरीद बिक्री के लिए भी डार्क वेब का उपयोग किया जा रहा है"..। ऐसे अनगिनत उदाहरणों से यह सिद्ध होता है कि **कैसे चरित्र (नैतिक मूल्य) के बिना ज्ञान हानिकारक हो सकता है।**

आंतरिक चरित्र के विकास के बिना केवल बौद्धिक विकास शायद ही कभी समाज के कल्याण में योगदान दे सकता है। एक व्यक्ति को चरित्रवान तब कहा जाता है, जब उसमें ईमानदारी, परोपकारिता, उदारता, करुणा जैसे नैतिक मूल्य भी अंतर्निहित हों।

हितधारक और उनके हित	
हितधारक	हित
नागरिक/ व्यक्ति/ समाज	• वे हमेशा चाहते हैं कि ज्ञान का उपयोग सभी के कल्याण के लिए किया जाए। प्रत्येक कार्य **"सर्वे भवन्तु सुखिनः" (सभी लोग सुखी हों)** की प्राप्ति के लिए होना चाहिए।
राज्य/ सरकारें	• यदि ज्ञान का उपयोग चरित्रवान व्यक्ति द्वारा किया जाएगा तो हर कोई समृद्ध होगा। इससे **समाज में शांति और स्थिरता को बढ़ावा** मिलेगा।
संस्थान (स्कूल अनुसंधान संस्थान, आदि)	• संस्थानों का लक्ष्य छात्रों/ प्रतिभागियों को अच्छे गुणों से युक्त बनाने के साथ-साथ **उनके बौद्धिक विकास को बढ़ावा** देना है, ताकि वे **अच्छे नागरिक बन** सकें।

चरित्र के बिना ज्ञान का उपयोग किए जाने पर उत्पन्न नैतिक मुद्दे/ चिंताएं:

- **अन्यायपूर्ण निर्णय लेना:** चरित्र में समानता और समानुभूति की भावना का अभाव **पक्षपातपूर्ण निर्णय लेने** का कारण बन सकता है। इसके तहत किसी चीज का निष्पक्ष मूल्यांकन करते समय **व्यक्तिगत पूर्वाग्रह** या **स्वार्थ** मौजूद **विकल्पों को प्रभावित** करते हैं।
  - उदाहरण के लिए- **समाज में बढ़ता कट्टरवाद और भेदभाव।**
- **अनैतिक गतिविधियों को बढ़ावा:** यदि ज्ञान का उपयोग छिपे हुए उद्देश्यों के साथ किया जाता है, तो यह **असहिष्णुता, नस्लवाद, जेनोफोबिया, रूढ़िवादिता** को बढ़ावा देता है। साथ ही यह समाज के अन्य लोगों के प्रति **गैर-उद्देश्यपूर्ण एवं भेदभाव पूर्ण व्यवहार की प्रवृत्ति** को जन्म दे सकता है।
- **उचित साधन (Means) और साध्य (End) के बीच अस्पष्टता:** यदि ज्ञान का उपयोग केवल स्वार्थ के लिए किया जाता है, तो व्यक्ति **केवल साध्य (उद्देश्य) को प्राप्त करने पर ध्यान** केंद्रित करता है और **साधन (तरीके) की ओर अधिक ध्यान नहीं देता** है।
  - उदाहरण के लिए- उदाहरण के लिए, भू-सामरिक बढ़त हासिल करने के लिए परमाणु क्षेत्र में हुई वैज्ञानिक प्रगति का इस्तेमाल परमाणु हथियारों के विकास में करना।
- **जवाबदेही की कमी:** यदि किसी संगठन या सरकार में **अधिकृत/ नेतृत्वकर्ता** व्यक्ति में चरित्र निर्माण के प्रमुख तत्वों जैसे सहकर्मियों के प्रति सम्मान आदि की कमी है, तो **वह अपने कार्यों के लिए लोगों के प्रति जवाबदेह** नहीं होगा।

आगे की राह

- **ज्ञान को चरित्र के साथ जोड़ना:** राष्ट्रीय पाठ्यचर्या और शैक्षणिक प्रक्रियाओं का उद्देश्य **व्यक्तियों का समग्र व्यक्तित्व संबंधी विकास (चरित्र और ज्ञान दोनों) करना** चाहिए।
- **समालोचनात्मक विचारशीलता और बुद्धि का विकास करना:** परिवार के सदस्यों और सहकर्मी समूहों को इसमें रचनात्मक भूमिका निभानी होगी। यह **जानकारी का समालोचनात्मक मूल्यांकन करके और प्रश्न पूछने की प्रवृत्ति** को प्रोत्साहित करके किया जा सकता है।
- **भावनात्मक बुद्धिमत्ता को बढ़ावा देना:** उदाहरण के लिए- स्कूल और माता-पिता सामाजिक जागरूकता को बढ़ाने की योजना बना सकते हैं, जैसे कि बच्चों को मलिन बस्तियों, अनाथालयों, वृद्धाश्रमों आदि जगहों पर ले जाकर उनमें इन लोगों के प्रति सहानुभूति विकसित कर सकते हैं।
- **स्व-हित और संकीर्ण मानसिकता को बदलना:** उदाहरण के लिए- भारत किस प्रकार **वसुधैव कुटुंबकम (दुनिया एक परिवार है)** के विचार को बढ़ावा दे रहा है।

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION
SANDHAN

संधान के जरिए पर्सनलाइज्ड तरीके से UPSC प्रीलिम्स की तैयारी कीजिए

(ऑल इंडिया GS प्रीलिम्स टेस्ट सीरीज के तहत पर्सनलाइज्ड टेस्ट सीरीज)

UPSC प्रीलिम्स की तैयारी के लिए सिर्फ मॉक टेस्ट देना ही काफी नहीं होता है; बल्कि इसके लिए स्मार्ट तरीके से टेस्ट की प्रैक्टिस भी जरूरी होती है।

अभ्यर्थियों की तैयारी के अलग-अलग स्तरों और उनकी जरूरतों को ध्यान में रखते हुए, हमने संधान टेस्ट सीरीज को डिजाइन किया है। यह ऑल इंडिया GS प्रीलिम्स टेस्ट सीरीज के तहत ही एक पर्सनलाइज्ड टेस्ट सीरीज है।

संधान की मुख्य विशेषताओं पर एक नज़र

प्रश्नों का विशाल संग्रह: इसमें UPSC द्वारा विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्नों (PYQs) के साथ-साथ VisionIAS द्वारा तैयार किए गए 15,000 से अधिक उच्च गुणवत्ता वाले प्रश्न उपलब्ध हैं।

प्रश्नों के चयन में फ्लेक्सिबिलिटी: अभ्यर्थी टेस्ट के लिए Vision IAS द्वारा तैयार किए गए प्रश्नों या UPSC के विगत वर्षों के प्रश्नों में से चयन कर सकते हैं।

प्रदर्शन में सुधार: टेस्ट में अभ्यर्थी के प्रदर्शन के आधार पर, सुधार की गुंजाइश वाले क्षेत्रों पर पर्सनलाइज्ड फीडबैक दिया जाएगा।

पर्सनलाइज्ड टेस्ट: अभ्यर्थी अपनी जरूरत के अनुसार विषयों और टॉपिक्स का चयन करके पर्सनलाइज्ड टेस्ट तैयार कर सकते हैं।

समयबद्ध मूल्यांकन: अभ्यर्थी परीक्षा जैसी स्थितियों को ध्यान में रखते हुए तय समय-सीमा में टेस्ट के जरिए अपने टाइम मैनेजमेंट स्किल का मूल्यांकन कर उसे बेहतर बना सकते हैं।

स्टूडेंट डैशबोर्ड: स्टूडेंट डैशबोर्ड की सहायता से अभ्यर्थी हर विषय में अपने प्रदर्शन और ओवरऑल प्रगति को ट्रैक कर सकेंगे।

संधान के मुख्य लाभ

अपनी तैयारी के अनुरूप प्रैक्टिस: अभ्यर्थी अपनी जरूरतों के हिसाब से विषयों और टॉपिक्स का चयन कर सकते हैं। इससे अपने मजबूत पक्षों के अनुरूप तैयारी करने में मदद मिलेगी।

कॉम्प्रिहेंसिव कवरेज: प्रश्नों के विशाल भंडार की उपलब्धता से सिलेबस की संपूर्ण तैयारी सुनिश्चित होगी।

प्रभावी समय प्रबंधन: तय समय सीमा में प्रश्नों को हल करने से टाइम मैनेजमेंट के लिए कौशल विकसित करने में मदद मिलेगी।

पर्सनलाइज्ड असेसमेंट: अभ्यर्थी अपनी आवश्यकता के अनुसार टेस्ट तैयार करने के लिए Vision IAS द्वारा तैयार प्रश्नों या UPSC में पिछले वर्षों में पूछे गए प्रश्नों का चयन कर सकते हैं।

लक्षित तरीके से सुधार: टेस्ट के बाद मिलने वाले फीडबैक से अभ्यर्थियों को यह पता लग सकेगा कि उन्हें किन विषयों (या टॉपिक्स) में सुधार करना है। इससे उन्हें तैयारी के लिए बेहतर रणनीति बनाने में सहायता मिलेगी।

आत्मविश्वास में वृद्धि: कस्टमाइज्ड सेशन और फीडबैक से परीक्षा के लिए अभ्यर्थियों की तैयारी का स्तर तथा उनका आत्मविश्वास बढ़ता है।

यह अपनी तरह की एक इनोवेटिव टेस्ट सीरीज है। संधान के जरिए, अभ्यर्थी तैयारी की अपनी रणनीति के अनुरूप टेस्ट की प्रैक्टिस कर सकते हैं। इससे उन्हें UPSC प्रीलिम्स पास करने के लिए एक समग्र तथा टार्गेटेड अप्रोच अपनाने में मदद मिलेगी।

रजिस्ट्रेशन करने और "ऑल इंडिया GS प्रीलिम्स टेस्ट सीरीज" का ब्रोशर डाउनलोड करने के लिए दिए गए QR कोड को स्कैन कीजिए

संधान पर्सनलाइज्ड टेस्ट कैसे एक परिवर्तनकारी प्लेटफ़ॉर्म बन सकता है, यह जानने के लिए QR कोड को स्कैन कीजिए

अहमदाबाद | बेंगलूरु | भोपाल | चंडीगढ़ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | राँची

3. नैतिकता और प्रौद्योगिकी (Ethics and Technology)

3.1. कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुड़ी नैतिकता (Ethics of Artificial Intelligence)

परिचय

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुकी है। इस कारण हमारे समक्ष कई तरह की दुविधाएं पैदा हो गई हैं। इस संदर्भ में, यूनेस्को इस बात पर विचार कर रहा है कि सरकार और टेक कंपनियों द्वारा AI का उपयोग किस तरह किया जाना चाहिए।

प्रमुख हितधारक और उनके हित	
हितधारक	**हित**
उपयोगकर्ता	प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से AI प्रणाली का उपयोग करना। अपने डेटा की **निजता**, सिस्टम आधारित पूर्वानुमान की **सटीकता** और सिस्टम द्वारा **पक्षपातपूर्णता परिणाम प्रदर्शित करने की संभावना** से जुड़े मुद्दे।
डेवलपर्स	AI सिस्टम विकसित करना और इसे बनाए रखना। **AI सिस्टम को विकसित करने और संचालित करने की लागत** तथा **सिस्टम की सुरक्षा** से जुड़ी चिंताएं।
निवेशक	AI सिस्टम के विकास के लिए **वित्तीय सहायता** प्रदान करना।
राज्य और विनियामक	AI सिस्टम के विकास और उपयोग को विनियमित करने वाले **कानून व नियम** निर्धारित करना।
नागरिक समाज संगठन (CSOs)	**AI सिस्टम के दायित्वपूर्ण विकास और उपयोग** पर जोर देना।

AI से जुड़ी नैतिक समस्याएं क्या हैं?

- **निजता और निगरानी:** AI के आने से, पहले से विद्यमान समस्याओं को अधिक बढ़ावा मिला है। इसमें डेटा की निगरानी, चोरी, प्रोफाइलिंग आदि शामिल हैं।
  - उदाहरण के लिए- AI आधारित इमेज प्रोसेसिंग का उपयोग करके फ़ोटो और वीडियो में चेहरा पहचानने की तकनीक व्यक्तियों की प्रोफाइलिंग करने और उन्हें खोजने में मदद करेगी।
- **बेरोजगारी:** AI ऑटोमेशन के कारण औद्योगिक गतिविधियों में आमूलचूल परिवर्तन होने और लोगों के नौकरी से वंचित होने की संभावना है।
- **हेरफेर और डीपफेक:** AI का वास्तविक दिखने वाले सिंथेटिक मीडिया के निर्माण के लिए उपयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए- डीपफेक वीडियो या ऑडियो प्रतिरूपण (Impersonation), जिनका गलत सूचना फैलाने, धोखाधड़ी या राजनीतिक हेरफेर जैसे दुर्भावनापूर्ण उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जा सकता है।
- **AI प्रणाली का अपारदर्शी होना:** AI प्रणाली द्वारा लिए गए निर्णय पारदर्शी नहीं होते हैं। इस अस्पष्टता के कारण सिस्टम को जवाबदेह और ईमानदार बनाए रखने की संभावना समाप्त हो जाती है। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि यह लोगों के बीच अविश्वास पैदा करती है।
- **पक्षपात/ पूर्वाग्रह:** यदि प्रशिक्षण डेटा में नस्ल, लिंग आदि से संबंधित पूर्वाग्रह शामिल हैं, तो ऐसे में AI प्रणाली में भी इनके बने रहने और आगे प्रसारित होने की संभावना है। इसके परिणामस्वरूप, अनुचित व्यवहार और भेदभाव को बढ़ावा मिल सकता है।
  - उदाहरण के लिए- प्रिडिक्टिव पुलिसिंग द्वारा विकसित किए गए ट्रायल एप्लीकेशंस में कुछ समुदायों के लोगों को संभावित खतरे के रूप में दर्शाने की प्रवृत्ति रहती है (यानी, **नस्लवादी या जातिवादी रोबोट**)।

संभावित समाधान

यूनेस्को में सामूहिक रूप से 193 देशों ने AI के नैतिक उपयोग के लिए उसके डिजाइन के निम्नलिखित सिद्धांतों को अंतिम रूप दिया है:

- **आनुपातिकता आधारित और हानि रहित:** AI प्रणाली का उपयोग करते समय यह भी ध्यान रखना चाहिए कि इसके कारण मानव अधिकारों का उल्लंघन न हो।

- **न्यायसंगतता और भेदभाव रहित:** AI डेवलपर्स को सामाजिक न्याय को बढ़ावा देना चाहिए। साथ ही उन्हें अंतर्राष्ट्रीय कानून का अनुपालन करते हुए हर प्रकार की न्यायसंगतता तथा भेदभाव-रहित व्यवहार का संरक्षण करना चाहिए।
- AI प्रौद्योगिकियों के **मानवीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और पर्यावरणीय प्रभावों का निरंतर मूल्यांकन** किया जाना चाहिए।
- **निजता का अधिकार और डेटा संरक्षण:** इसमें AI के उपयोग के सामाजिक और नैतिक मुद्दों पर विचार करना भी शामिल है।
- **मानव निरीक्षण और अवधारण:** यह सुनिश्चित करना चाहिए कि AI प्रणाली के जीवन चक्र के किसी भी चरण के लिए भौतिक व्यक्तियों या मौजूदा कानूनी संस्थाओं को नैतिक और कानूनी रूप से जिम्मेदार ठहराया जा सकता है।
- **बहु-हितधारक और अनुकूल कार्यप्रणाली एवं सहयोग:** इससे इसके लाभों को सभी के साथ साझा किया जा सकेगा और इसके संधारणीय विकास में योगदान दिया जा सकेगा।

> मानवीय मूल्यों और भावनाओं के साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता में नैतिक नजरिया शामिल करना भावी कृत्रिम बुद्धिमत्ता को मूलभूत आधार प्रदान करेगा।
>
> — अमित रे

3.2. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मानवाधिकार (AI and Human Rights)

परिचय

मानवाधिकारों को लेकर किए एक ऑनलाइन वार्षिक अध्ययन **"फ्रीडम ऑन द नेट"** में कहा गया है कि ऑनलाइन क्षेत्र में मानवाधिकारों की स्थिति बिगड़ रही है। यह निष्कर्ष इस बात पर प्रकाश डालता है कि **AI प्रौद्योगिकियों** में न केवल **मानव अधिकारों को बढ़ावा देने** बल्कि **उनका उल्लंघन करने की भी क्षमता** है। इन दोनों के बीच मौजूद नाजुक संतुलन की समझ समय की मांग है।

हितधारक और उनके हित	
हितधारक	**हित**
सरकार	• इनके हित राष्ट्रीय सुरक्षा, कानून प्रवर्तन और लोक प्रशासन से जुड़े हैं। सरकारें **AI क्षेत्र में नवाचार** और **आर्थिक विकास को भी बढ़ावा** देना चाहती है।
AI के उपयोगकर्ता (नागरिक)	• नागरिकों का हित यह सुनिश्चित करने से संबंधित है कि AI प्रौद्योगिकियों का उपयोग उन तरीकों से किया जाए जो मौलिक अधिकारों, जैसे कि **निजता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और भेदभाव से सुरक्षा का सम्मान** करते हैं।
सिविल सोसाइटी और कार्यकर्ता	• इनका मुख्य कार्य मानवाधिकार के मुद्दों के बारे में **जागरूकता बढ़ाना** और किसी भी **उल्लंघन के लिए सरकारों और कॉर्पोरेट्स** की जिम्मेदारी तय करना है।
AI डेवलपर्स और इंजीनियर्स	• इनके हित अपने **क्षेत्रक के विकास, जटिल समस्याओं को हल करने का** लक्ष्य और **एल्गोरिथम के पूर्वाग्रह एवं निष्पक्षता जैसे चिंताजनक मुद्दों से संबंधित** हैं।
अंतर्राष्ट्रीय संगठन	• अंतर्राष्ट्रीय निकायों जैसे कि संयुक्त राष्ट्र का हित **वैश्विक शांति, सुरक्षा और विकास** में निहित है।

क्या AI मानवाधिकारों को नुकसान पहुंचाता है?

- **जानकारी तक पहुंच:** प्लेटफ़ॉर्म एल्गोरिदम ने विश्वसनीय जानकारी की बजाय **भड़काऊ कंटेंट** को बढ़ावा दिया है।
  - उदाहरण के लिए, जांच से पता चला है कि यूट्यूब के AI-संचालित एल्गोरिदम ने अधिक विश्वसनीय जानकारी की बजाय विवादास्पद, अतिवादी या भ्रामक कंटेंट को बढ़ावा दिया है।
- **भेदभाव:** एल्गोरिथम प्रणालियां उनके प्रशिक्षण डेटा में **अंतर्निहित पूर्वाग्रह** को कायम रख सकती हैं और नस्ल, लिंग, जाति आदि के आधार पर **लंबे समय से चले आ रहे भेदभाव को बढ़ा** सकती हैं।

   - उदाहरण के लिए, अमेज़ॅन के AI-आधारित हायरिंग टूल (2014-15) को लेकर काफी विवाद हुआ था। इस टूल ने महिला आवेदकों के प्रति महत्वपूर्ण लैंगिक पूर्वाग्रह प्रदर्शित किया था।
- **निजता के अधिकार का उल्लंघन:** बिग-डेटा निगरानी प्रणालियां बड़ी मात्रा में **व्यक्तिगत डेटा एकत्र करती हैं और उसका विश्लेषण** करती हैं। इसमें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का उल्लंघन करने की क्षमता है।
   - उदाहरण के लिए, मेटा की AI-संचालित फेसिअल रिकग्निशन सिस्टम फेसबुक पर अपलोड की गई फोटो में लोगों को स्वचालित रूप से पहचान सकती है और टैग कर सकती है।
- **संघ बनाना और सभा करना: चेहरे की पहचान** करने की क्षमता से युक्त AI सिस्टम **संभावित प्रदर्शनकारियों** की पहचान कर सकते हैं और उन्हें ट्रैक कर सकते हैं। इससे **राज्य के सुरक्षा बलों को उन्हें गिरफ्तार करने** और उनके खिलाफ जवाबी कार्रवाई करने में सहायता मिलती है।
- **डिजिटल तरीके से चुनावों में हस्तक्षेप करना:** AI का उपयोग दुष्प्रचार के अभियानों को बढ़ावा देने, **संदेह पैदा करने** के लिए डीप फेक बनाने के लिए किया जा रहा है।
   - उदाहरण के लिए- 2016 के अमेरिकी चुनाव और 2017 के फ्रांसीसी चुनाव सहित विश्व स्तर पर अलग-अलग देशों में आयोजित चुनावों के दौरान गलत सूचना फैलाने के लिए स्वचालित ट्विटर बॉट एकाउंट्स का इस्तेमाल किया गया था।

क्या AI मानवाधिकारों को मजबूत करता है?

- **समानता का अधिकार:** AI एल्गोरिदम को **निर्णय-निर्माण प्रक्रियाओं में पूर्वाग्रहों को कम करने** के लिए डिज़ाइन किया जा सकता है।
   - उदाहरण के लिए, लिंक्डइन का AI-संचालित जॉब मैचिंग एल्गोरिदम जेंडर-कोडेड लैंग्वेज के लिए जॉब पोस्टिंग्स का विश्लेषण करता है और भर्ती करने वाले व्यक्ति या संगठन को अधिक तटस्थ विकल्प सुझाता है।
- **निजता की सुरक्षा:** AI प्रौद्योगिकियों का उपयोग **निजता की सुरक्षा हेतु उन्नत तंत्र** विकसित करने के लिए किया जा सकता है। इसमें सुरक्षित **डेटा एन्क्रिप्शन, पहचान सुरक्षा और सुरक्षित संचार** शामिल हैं, जो **व्यक्तिगत स्वतंत्रता की सुरक्षा** के लिए आवश्यक हैं।
- **जवाबदेही सुनिश्चित करना:** उदाहरण के लिए- चेहरे की पहचान तकनीक का उपयोग **पुलिस की क्रूरता का दस्तावेजीकरण करने** और उसे उजागर करने तथा **पुलिस की पारदर्शिता व जवाबदेही** सुनिश्चित करने के लिए किया जा सकता है।
- **शासन को सक्षम बनाकर सामूहिक अधिकारों की रक्षा करना:** उदाहरण के लिए-
   - **पूर्वानुमानयुक्त पुलिसिंग (Predictive Policing):** AI कानून प्रवर्तन एजेंसियों को **संसाधनों को अधिक प्रभावी ढंग से आवंटित करने, अपराध को घटित होने से पहले रोकने** और **वस्तुनिष्ठ निर्णय लेने** में मदद कर सकता है।
      - हालांकि, अनैतिक रूप से उपयोग किए जाने पर **पूर्वानुमानयुक्त पुलिसिंग के दुरुपयोग** से जुड़ी चिंताएं भी हैं।

निष्कर्ष

AI को कवर करने वाले विनियमों में वैधता, आवश्यकता और आनुपातिकता जैसे मानवाधिकार सिद्धांतों को शामिल किया जाना चाहिए। इसके अलावा, पब्लिक तथा हितधारकों को जनता, हितधारकों और विशेषज्ञों के साथ खुली एवं समावेशी वार्ता में भागीदारी करनी चाहिए। इससे यह सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी कि AI प्रौद्योगिकियां मानवाधिकारों का सम्मान करती हैं।

> **प्रभावी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) बनाने में सफलता हमारी सभ्यता के इतिहास की सबसे बड़ी घटना हो सकती है या सबसे बुरी घटना हो सकती है। हम इसके बारे में नहीं जानते हैं।**
>
> — स्टीफन हॉकिंग

3.3. आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस और क्रिएटिविटी (AI and Creativity)

परिचय

हाल ही में, एक **म्यूजिक कंपोजर ने मृत गायकों की आवाज़ को पुनः उत्पन्न करने** के लिए **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) सॉफ़्टवेयर का उपयोग** किया। जैसे-जैसे AI विभिन्न कलात्मक प्रक्रियाओं में एकीकृत होता जा रहा है, इसके उपयोग को नियंत्रित करने वाली **नैतिक और कानूनी सीमाओं के संबंध में प्रश्न** उठने लगे हैं।

रचनात्मक कृतियों में AI से जुड़े सकारात्मक पहलू

- **बेहतर उत्पादकता:** **क्रिएटिव वर्कफ्लो को सुव्यवस्थित** करना, दोहराए जाने वाले कार्यों को स्वचालित करना आदि
- **नवीन तरीका:** यह कलाकारों को **नए क्रिएटिव विकल्प** तलाशने में सक्षम बनाता है
- **सहयोगात्मक क्षमता:** **यह क्रिएटर्स और इंटेलीजेंट प्रणालियों के बीच सहयोग को सुगम** बनाता है
- **गुणवत्ता में सुधार:** यह **कलात्मक परिणाम की गुणवत्ता और स्थिरता में सुधार** करता है

रचनात्मक क्षेत्र में AI से जुड़े नैतिक मुद्दे

- **कलात्मक पवित्रता के लिए सम्मान:** जब मानव-निर्मित और AI-जनित कृतियों के बीच अंतर करना मुश्किल हो, तब AI-जनित कृतियां कलात्मक अभिव्यक्ति की प्रामाणिकता और पवित्रता को संरक्षित करने के बारे में चिंताएं बढ़ा सकती हैं।
- **सहमति और स्वामित्व:** AI-संचालित परियोजनाओं में शामिल कलाकारों, क्रिएटर्स और प्रतिभागियों के अधिकारों के संबंध में प्रश्न उठते हैं। इनमें बौद्धिक संपदा, स्वामित्व और व्यक्तिगत डेटा या क्रिएटिव योगदान का उपयोग करने के लिए सहमति से संबंधित मुद्दे शामिल हैं।
- **संरक्षण बनाम दोहन:** यदि AI मृत हस्तियों की आवाज़ों या कलात्मक शैलियों को पुनर्जीवित कर सकता है, तो इस पर नैतिक प्रश्न उठता है कि क्या ऐसे प्रयासों का उद्देश्य सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करना है या व्यावसायिक लाभ के लिए व्यक्तियों की पहचान एवं उनकी विरासत का दोहन करना है।
- **तकनीकी नियतिवाद (निर्धारणवाद) और संज्ञानात्मक न्याय:** क्रिएटिव इंडस्ट्री में AI को व्यापक रूप से अपनाने से ह्यूमन क्रिएटिविटी और नवाचार पर प्रभाव पड़ सकता है। इससे संभावित रूप से होमोजेनाइजेशन, विविधता की हानि, या फॉर्मूला आधारित दृष्टिकोण पर निर्भरता बढ़ सकती है।
- **विनियामकीय निगरानी:** विनियामकीय प्रावधानों की कमी के कारण निजता की सुरक्षा, भेदभाव को रोकने तथा विकसित प्रौद्योगिकियों के मामले में नियमों के पालन, प्रवर्तन और अनुकूलन में चुनौतियां उत्पन्न होती हैं।

आगे की राह

- **AI-संचालित क्रिएटिव प्रॉसेस में पारदर्शिता और प्रकटीकरण सुनिश्चित करना** चाहिए। इसमें **AI-जनित कंटेंट का स्पष्ट श्रेय देना और सभी शामिल पक्षों से सूचित सहमति** प्राप्त करना शामिल है।
- **कलात्मक अभिव्यक्ति की प्रामाणिकता और अखंडता को बनाए रखना,** क्रिएटर्स के योगदान को स्वीकार करना और अपनी कृतियों के नियंत्रण एवं उचित रूप से श्रेय दिए जाने के उनके अधिकारों का सम्मान करना चाहिए।
- सहमति, स्वामित्व, निष्पक्षता और जवाबदेही जैसे मुद्दों को संबोधित करते हुए **क्रिएटिव प्रॉसेस में AI के नैतिक उपयोग के लिए नैतिक दिशा-निर्देश और सर्वोत्तम अभ्यास** विकसित किए जाने चाहिए।
- नैतिक मानकों का पालन सुनिश्चित करने और AI-संचालित क्रिएटिव परियोजनाओं में शामिल व्यक्तियों के अधिकारों और हितों की रक्षा के लिए **नियामक निगरानी और शासन प्रणाली का सहयोग करना** चाहिए।
- सभी हितधारकों के बीच **AI नैतिकता की समझ बढ़ाने** के लिए **शिक्षा और जागरूकता को बेहतर करना,** क्रिएटिव इंडस्ट्री में नैतिक प्रथाएं लागू करने के लिए सूचित निर्णय प्रक्रिया और सहयोग को सक्षम करना चाहिए।

> **एक मशीन पचास साधारण आदमियों का काम कर सकती है। कोई भी मशीन एक असाधारण आदमी का काम नहीं कर सकती।**
>
> — एल्बर्ट हब्बार्ड

© Vision IAS

3.4. ऑनलाइन गेमिंग में नैतिकता (Ethics of Online Gaming)

परिचय

हाल ही में, ऑनलाइन गेमिंग उद्योग ने भारतीय गेमिंग कन्वेंशन (IGC) में एक **स्वैच्छिक 'ऑनलाइन गेमिंग मध्यस्थों के लिए आचार संहिता[3]'** पर हस्ताक्षर किए। इस कन्वेंशन को इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया (IAMAI) द्वारा आयोजित किया गया था।

ऑनलाइन गेमिंग मध्यस्थों (OGI) के लिए आचार संहिता के बारे में

- इस दस्तावेज पर **फेडरेशन ऑफ इंडियन फैंटेसी स्पोर्ट्स (FIFS), ई-गेमिंग फेडरेशन (EGF) और ऑल-इंडिया गेमिंग फेडरेशन (AIGF)** ने हस्ताक्षर किए हैं। गौरतलब है कि भारत के गेमिंग उद्योग में इनकी हिस्सेदारी काफी अधिक है।
    - इस संहिता का पालन **स्वैच्छिक** है और यह हस्ताक्षरकर्ताओं पर लागू मौजूदा कानूनों को ओवरराइड या प्रतिस्थापित नहीं करता है।
- **उद्देश्य:**
    - **उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा करना** और उन्हें ऑनलाइन गेम के बारे में तथ्यों के आधार पर विकल्प चुनने में सक्षम बनाना।
    - **भारत में ऑनलाइन गेम के लिए एक स्वस्थ वातावरण बनाना** और जिम्मेदार गेमिंग की संस्कृति को विकसित करना।
    - **उद्योग मानकों को ऊंचा उठाना** और हस्ताक्षरकर्ताओं की व्यावसायिक प्रथाओं में एकरूपता लाना।

हितधारक और उनके हित	
हितधारक	**हित**
गेम डेवलपर्स	• लाभप्रदता • बढ़ता उपयोगकर्ता आधार • लोकप्रियता में वृद्धि
गेम खेलने वाले	• मनोरंजन • निष्पक्ष गेमिंग • डेटा गोपनीयता और सुरक्षा • सकारात्मक गेमिंग वातावरण
विनियामक निकाय	• उपभोक्ता संरक्षण • नैतिक गेमिंग वातावरण को बढ़ावा देना • निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना
विज्ञापनदाता/ प्रायोजक	• राजस्व को अधिकतम करना • ब्रांड दृश्यता बढ़ाना • निष्पक्ष विज्ञापन मानकों को बढ़ावा देना
कंटेंट निर्माता/ स्ट्रीमर	• मुद्रीकरण • प्रायोजक • इन्फ्लुएंस प्राप्त करना

इन चिंताओं को दूर करने के लिए संहिता में उल्लिखित प्रमुख सिद्धांत

- **जिम्मेदार गेमिंग:** ऑनलाइन गेमिंग मध्यस्थ (OGI) अपने उपयोगकर्ताओं को जिम्मेदार गेमिंग प्रथाओं का पालन करने और खेलते समय आवश्यक सावधानी बरतने की सलाह देंगे।
    - OGI उपयोगकर्ताओं को अपने लिए **समय या खर्च की सीमा निर्धारित करने का विकल्प** प्रदान करेगा।

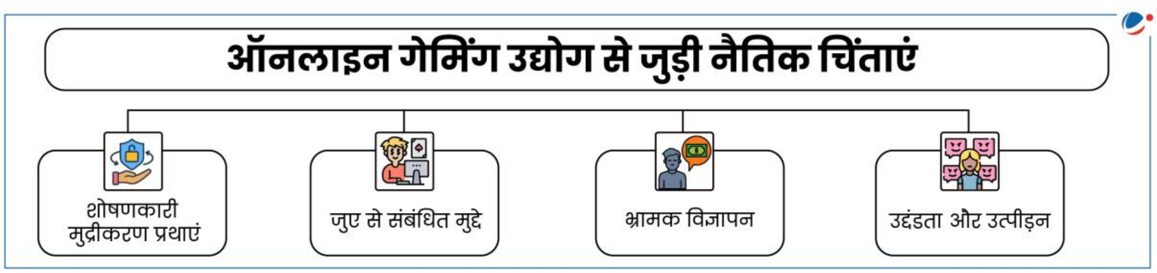

- **नाबालिगों के लिए सुरक्षा उपाय (आयु सीमा):** OGI द्वारा नाबालिगों की सुरक्षा के लिए सभी आवश्यक सुरक्षा उपाय किए जाएंगे। उदाहरण के लिए- **'केवल 18/18+' का चेतावनी संकेतक प्रदर्शित करना।**

[3] Code of Ethics for Online Gaming Intermediarie

- **निष्पक्ष गेमिंग:** OGI अपनी वेबसाइट/ प्लेटफॉर्म पर नियम और शर्तें, निजता बनाए रखने की नीति, ऑनलाइन गेम में सामग्री की प्रकृति आदि प्रकाशित करेगा।
    - **धोखाधड़ी-रोधी उपाय** यह सुनिश्चित करेंगे कि गेम या प्रतियोगिता केवल वास्तविक व्यक्तियों के बीच और बॉट्स जैसे स्वचालित सिस्टम के विरुद्ध ही खेले जाएं।
- **वित्तीय सुरक्षा उपाय:** OGI उन सभी सर्वोत्तम कार्य पद्धतियों को अपनाएगा, जिससे **मनी लॉन्ड्रिंग और अन्य अवैध गतिविधियों के लिए उनके प्लेटफॉर्म के उपयोग** का पता लगाया जा सके एवं उनकी रोकथाम हो सके।

आगे की राह

- **उपभोक्ता संरक्षण:** इन-गेम खरीदारी में ऑनलाइन गेमिंग प्लेटफॉर्म की निष्पक्षता का मूल्यांकन करने के लिए **मानक उपभोक्ता संरक्षण** उपायों को लागू करना चाहिए।
    - **'स्वीकार्य गुणवत्ता का परीक्षण'** एक ऐसा तरीका है जिसे अपनाया जा सकता है। यह परीक्षण उपयोगिता और मूल्य के औचित्य को पूरा करने के लिए किया जाता है।
- **समग्रता:** गेम डेवलपर्स को ऐसे समावेशी नैरेटिव और कैरैक्टर बनाने का प्रयास करना चाहिए जो विभिन्न प्रकार के खिलाड़ियों के अनुरूप हों, चाहे उनका जेंडर, उनकी नृजातीयता या पृष्ठभूमि कुछ भी हो।
- **नीतिगत उपाय:** नाबालिगों के बीच लत और शोषण को रोकने के लिए, कंपनियों को आयु सत्यापन, **साइबर-सुरक्षा उपायों** और जिम्मेदार गेमिंग टूल पर ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है। इसके लिए ऐसी नीतियों को लागू करने की आवश्यकता है जो इन उपायों को अनिवार्य बनाएं।
- **जवाबदेह विज्ञापन और मार्केटिंग को बढ़ावा देना:** लूट बॉक्स मैकेनिक्स और इन-ऐप खरीदारी में पारदर्शिता सुनिश्चित करने तथा शोषक मार्केटिंग प्रथाओं को नियंत्रित करने के लिए नियमों की आवश्यकता है।

> **"शिक्षा को गेमिंग के सकारात्मक पक्ष (जैसे- पुरस्कार, उपलब्धि और आनंद) से सीखना चाहिए।"**
>
> — सेबस्टियन थ्रुन

3.5. धार्मिक विश्वास और वैज्ञानिक प्रगति (Religious Beliefs and Evolving Scientific Advancements)

प्रस्तावना

धर्म और विज्ञान के बीच संबंध काफी गतिशील है। इससे संबंधित विमर्श लंबे समय से तनाव, बहस और अक्सर संघर्ष का कारण रहा है। दोनों ही संसार और वास्तविकता या सत्य को समझने के लिए अलग-अलग दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। धार्मिक विचारों को अक्सर ज्ञान के नए क्षेत्रों और वैज्ञानिक प्रगति से चुनौती मिलती है। इन चुनौतियों के बावजूद, धर्म लोगों के जीवन में एक अभिन्न और रचनात्मक भूमिका निभाता है। इस द्वंद्व से एक प्रश्न उठता है कि क्या धार्मिक मान्यताएं वैज्ञानिक प्रगति के साथ सामंजस्यपूर्ण रूप से सह-अस्तित्व में रह सकती हैं?

वैज्ञानिक प्रगति ने धार्मिक विश्वास को कैसे चुनौती दी है?

- **जीवन और मृत्यु:** इस दुनिया में जीवन के प्रादुर्भाव की अवधारणा को जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुई प्रगति से चुनौती मिल रही है।
    - **जीनोम एडिटिंग** का उपयोग किसी बच्चे की आनुवंशिक विशेषताओं को बदलने के लिए किया जा सकता है। **जानवरों की क्लोनिंग** ने इस विश्वास पर आघात किया है कि जीवन और मृत्यु भगवान के हाथ में है।
- **विकास: चार्ल्स डार्विन** का **थ्योरी ऑफ इवॉल्यूशन** (प्राकृतिक चयन के विचार को बढ़ावा देने वाला सिद्धांत) पृथ्वी पर मानव जीवन की उत्पत्ति और विकास के बारे में कई धार्मिक मान्यताओं को खारिज करता है।
- **अंतरिक्ष: बिग बैंग सिद्धांत** से पता चलता है कि ब्रह्मांड की उत्पत्ति लगभग 13.7 अरब साल पहले एक विलक्षण घटना से हुई थी।
    - यह उस धार्मिक मान्यता के विपरीत है जो ब्रह्मांड, विशेषकर पृथ्वी के निर्माण के संबंध में विभिन्न सिद्धांतों का प्रचार करती है।

वैज्ञानिक समीक्षा/ विश्लेषण: सीमाएं और हद

- **अनुभवजन्य साक्ष्य की सीमाएं:** अनुभवजन्य साक्ष्य **विज्ञान की मूल आधारशिला** है। इसने कई नई खोजों और आविष्कारों को जन्म दिया है। हालांकि, इसकी कुछ सीमाएं भी हैं।

 © Vision IAS

- उदाहरण के लिए- **चेतना, आध्यात्मिकता** जैसे विभिन्न मानव-विशिष्ट तत्वों को **वैज्ञानिक समीक्षा के द्वारा अनुभवजन्य रूप से मापा या तौला नहीं जा** सकता है।

- **नैतिकता और आचरण का विषय:** वैज्ञानिक घटनाक्रम कुछ कार्यों या व्यवहारों के कारण या परिणामों के बारे में जानकारी प्रदान कर सकते हैं, लेकिन वे उनसे जुड़े नैतिक मूल्यों या नैतिक सिद्धांतों की व्याख्या नहीं कर सकते हैं।
    - जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रगति ने **जेनेटिक इंजीनियरिंग की सीमाओं** तथा मानव विकास और **प्राकृतिक व्यवस्था पर इसके संभावित प्रभावों** के बारे में जटिल नैतिक प्रश्न भी उठाए हैं।
    - इसके अलावा, वैज्ञानिक विकास क्रम से आज भी **आत्मा की प्रकृति, पुनर्जन्म के अस्तित्व** या **मानव अस्तित्व के अंतिम उद्देश्य** जैसे कई प्रश्नों या रहस्यों का उत्तर नहीं मिला है।

आगे की राह: आस्था और तर्क में सामंजस्य

- **बौद्धिक विनम्रता को अपनाना:** इसमें यह पहचानना शामिल है कि **किसी व्यक्ति के ज्ञान की एक सीमा है** और उसकी वर्तमान मान्यताएं गलत भी हो सकती हैं।
    - किसी भी पक्ष का कठोर व्यवहार या असहिष्णुता बौद्धिक विकास को बाधित कर सकती है और सत्य की खोज में बाधा डाल सकती है।
- **संवाद और सहयोग:** इसे **समावेशिता, विविधता के प्रति सम्मान और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण** जैसे मानवतावादी सिद्धांतों द्वारा निर्देशित किया जा सकता है।
    - वैज्ञानिक समुदाय को धार्मिक मान्यताओं को **सांस्कृतिक संवेदनशीलता** के साथ देखना चाहिए और व्यक्तियों एवं समाजों पर उनके गहरे प्रभाव की सराहना करनी चाहिए।
        - उदाहरण के लिए- प्राचीन यूनानी दार्शनिक अरस्तू, वैज्ञानिक विचारों में उनके योगदान के लिए सम्मानित थे, लेकिन वे एक "अनमूव्ड मूवर" के अस्तित्व में भी विश्वास करते थे। यह एक ऐसी अवधारणा थी, जो एक **दिव्य निर्माता की धारणा से जुड़ी हुई** थी।
    - धार्मिक संस्थानों द्वारा वैज्ञानिक निष्कर्ष सिरे से खारिज नहीं किए जाने चाहिए। उन्हें नए साक्ष्यों के आलोक में धार्मिक ग्रंथों और परंपराओं की पुनर्व्याख्या करने के अवसर तलाशने चाहिए।
- **आलोचनात्मक बुद्धि का विकास:** पाठ्यक्रम में धार्मिक मान्यताओं और वैज्ञानिक प्रगति के एक संतुलित और सूक्ष्म विश्लेषण को शामिल करते हुए शिक्षक छात्रों को ज्ञान और समानुभूति के साथ इस टकराव से निपटने हेतु आवश्यक महत्वपूर्ण वैचारिक कौशल प्रदान कर सकते हैं।

> **"धर्म के बिना विज्ञान अधूरा है, विज्ञान के बिना धर्म अंधा है।"**
>
> — अल्बर्ट आइंस्टीन

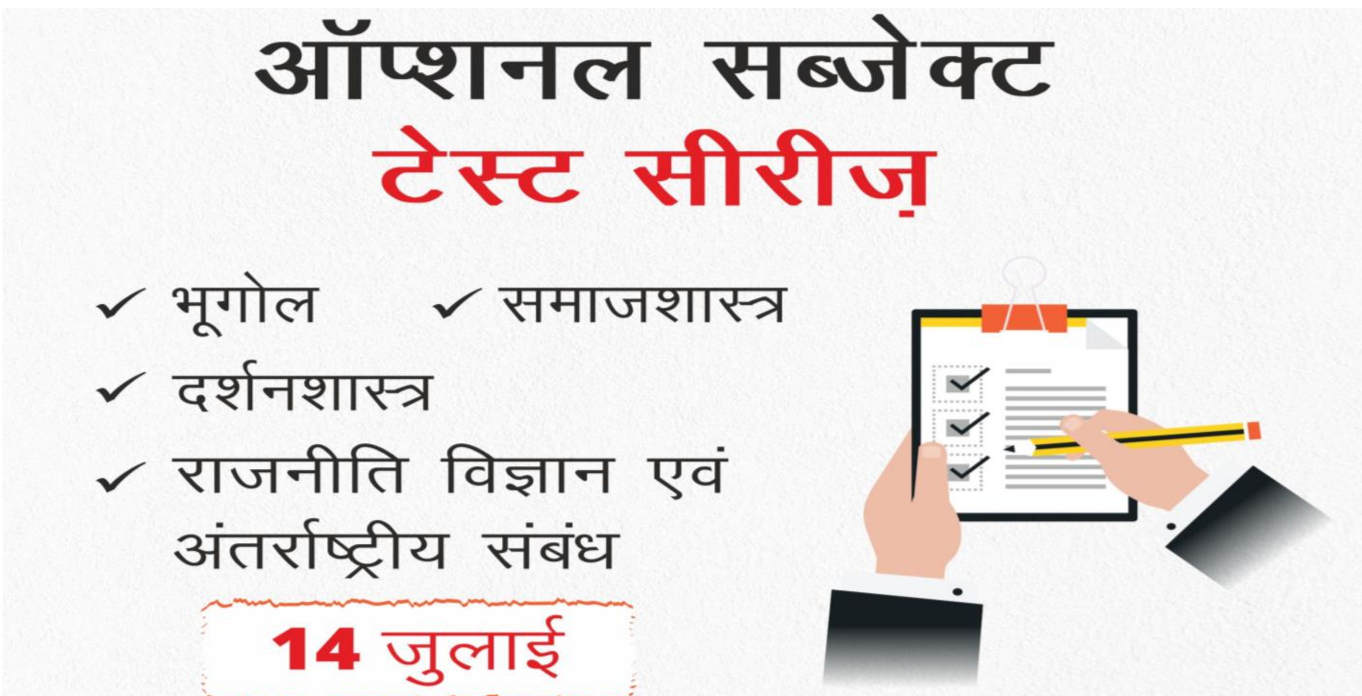

VISION IAS
INSPIRING INNOVATION

न्यूज़ टुडे

"न्यूज टुडे" डेली करेंट अफेयर्स की एक संक्षिप्त प्रस्तुति है। इस डॉक्यूमेंट की मदद से न्यूज-पेपर को पढ़ना काफी आसान हो जाता है और इससे अभ्यर्थी दैनिक घटनाक्रमों के बारे में अपडेट भी रहते हैं। इससे अभ्यर्थियों को कई अन्य तरह के लाभ भी मिलते हैं, जैसे:

- किसी भी न्यूज़ से जुड़े घटनाक्रमों के बारे मे बेहतर समझ विकसित करने के लिए
- न्यूज पढ़ने का एक ऐसा नजरिया विकसित करने के लिए, जिससे अभ्यर्थी आसानी से समझ सकें हैं कि न्यूज पेपर्स में से कौन-सी न्यूज पढ़नी है
- टेक्निकल टर्म्स और न्यूज़ से जुड़े जटिल कॉन्सेप्ट्स के बारे में सरल समझ विकसित करने के लिए

न्यूज़ टुडे डॉक्यूमेंट की मुख्य विशेषताएं

- स्रोत: इसमें द हिंदू, इंडियन एक्सप्रेस, PIB, न्यूज़ ऑन ए.आई.आर., इकोनॉमिक टाइम्स, हिंदुस्तान टाइम्स, द मिंट जैसे कई स्रोतों से न्यूज को कवर किया जाता है।
- भाग: इसके तहत 4 पेज में दिन-भर की प्रमुख सुर्ख़ियों, अन्य सुर्ख़ियों और सुर्ख़ियों में रहे स्थल एवं व्यक्तित्व को कवर किया जाता है।
- प्रमुख सुर्ख़ियां: इसके तहत लगभग 200 शब्दों में पूरे दिन की प्रमुख सुर्ख़ियों को प्रस्तुत किया जाता है। इसमें हालिया घटनाक्रम को विस्तार से कवर किया जाता है।
- अन्य सुर्ख़ियां और सुर्ख़ियों में रहे स्थल/ व्यक्तित्व: इस भाग के तहत सुर्ख़ियों में रहे व्यक्तित्व, महत्वपूर्ण टर्म, संरक्षित क्षेत्र और प्रजातियों आदि को लगभग 90 शब्दों में प्रस्तुत किया जाता है।

न्यूज़ टुडे वीडियो की मुख्य विशेषताएं

- प्रमुख सुर्ख़ियां: इसमें दिन की छह सबसे महत्वपूर्ण सुर्ख़ियों को संक्षेप में प्रस्तुत किया जाता है। इससे आप एग्जाम के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण न्यूज को खोजने में आपना कीमती समय बर्बाद किए बिना मुख्य घटनाक्रमों को बेहतर तरीके से समझ सकते हैं।
- सुर्ख़ियों में रहे स्थल/ व्यक्तित्व: इसमें सुर्ख़ियों में रहे एक महत्वपूर्ण स्थल या मशहूर व्यक्तित्व के बारे में बताया जाता है।
- स्मरणीय तथ्य: इस भाग में चर्चित विषयों को संक्षेप में कवर किया जाता है, जिससे आपको दुनिया भर के मौजूदा घटनाक्रमों की जानकारी मिलती रहती है।
- प्रश्नोत्तरी: प्रत्येक न्यूज टुडे वीडियो बुलेटिन के अंत में MCQs भी दिए जाते हैं। इसके जरिए हम न्यूज पर आपकी पकड़ का परीक्षण करते हैं। यह इंटरैक्टिव चरण आपकी लर्निंग को ज्ञानवर्धक के साथ-साथ मज़ेदार भी बनाता है। इससे आप घटनाक्रमों से जुड़े तथ्यों आदि को बेहतर तरीके से याद रख सकते हैं।
- रिसोर्सेज: वीडियो के नीचे डिस्क्रिप्शन में "न्यूज़ टुडे" के PDF का लिंक दिया जाता है। न्यूज़ टुडे का PDF डॉक्यूमेंट, न्यूज टुडे वीडियो के आपके अनुभव को और बेहतर बनाता है। साथ ही, MCQs आधारित प्रश्नोत्तरी आपकी लर्निंग को और मजबूत बनाती है।

रोजाना 9 PM पर न्यूज टुडे वीडियो बुलेटिन देखिए

न्यूज टुडे डॉक्यूमेंट को डाउनलोड करने के लिए QR कोड को स्कैन कीजिए

न्यूज़ टुडे क्विज़ के लिए दिए गए QR कोड को स्कैन कीजिए

अहमदाबाद | बेंगलूरु | भोपाल | चंडीगढ़ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची

4. नैतिकता और समाज (Ethics and Society)

4.1. नज यानी सौम्य प्रोत्साहन की नैतिकता (Ethics of Nudge)

परिचय

हाल ही में, हरियाणा सरकार ने **प्राण वायु देवता पेंशन योजना** शुरू की है। यह हरियाणा निवासियों की संपत्ति पर स्थित **75 वर्ष या उससे अधिक आयु के वृक्षों** के लिए पेंशन की पेशकश करती है। इस योजना का उद्देश्य यहां के निवासियों को प्राचीन वृक्षों और पर्यावरण के संरक्षण हेतु प्रोत्साहित करना है।

सौम्य प्रोत्साहन या नज (Nudge) क्या है?

- नज एक प्रकार का हस्तक्षेप है जो **लोगो को धीरे-धीरे और विनम्रतापूर्वक वांछित कार्रवाई की ओर प्रोत्साहित करता है।** इसके जरिए **किसी भी विकल्प को प्रतिबंधित किए बिना या उनके आर्थिक प्रोत्साहनों में महत्वपूर्ण बदलाव किए बिना लोगों के व्यवहार में परिवर्तन** लाया जाता है।
- नज नीतियों का उद्देश्य **व्यक्तियों को उनकी पसंद या इच्छाओं को सीमित किए बिना वांछनीय व्यवहार** की ओर **सूक्ष्मता से मार्गदर्शन** करना है।

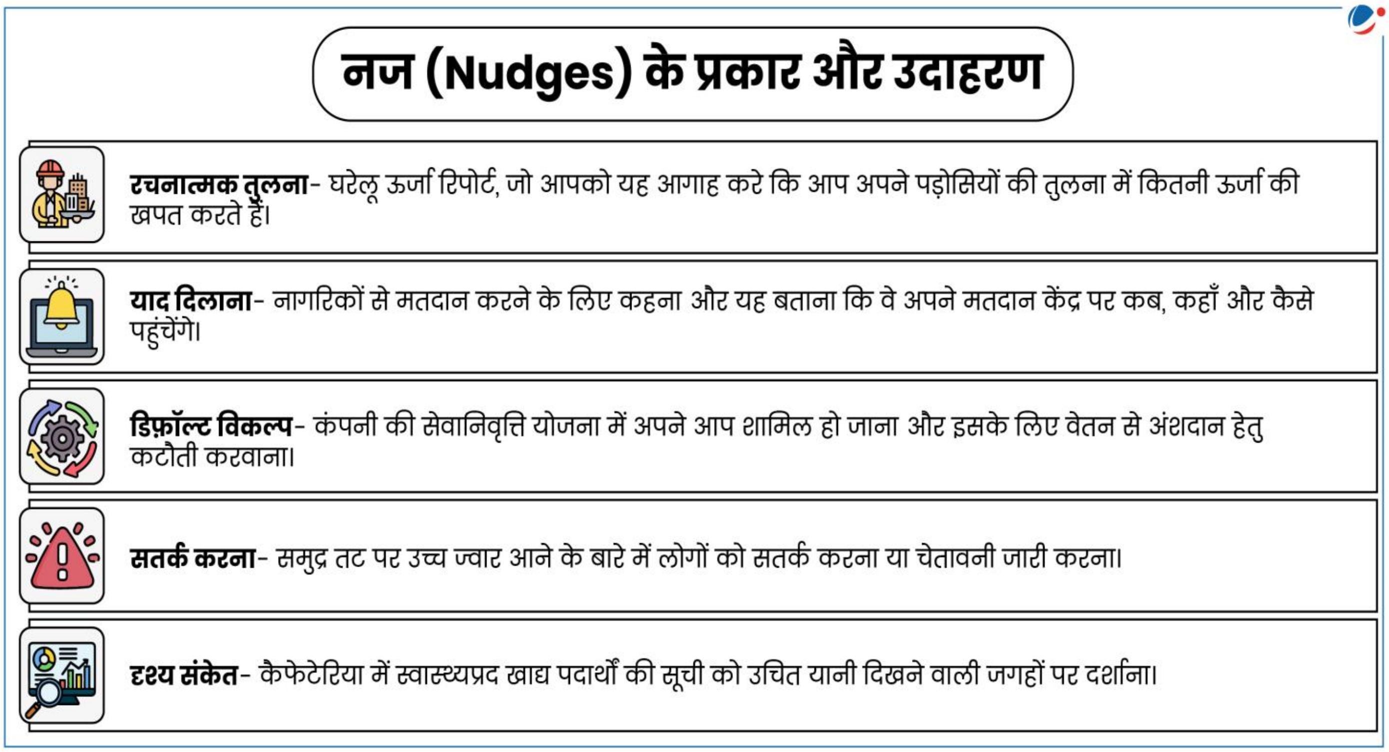

नज का महत्त्व

- **कानून-व्यवस्था को बढ़ावा देना:** सरकारी एजेंसियों के भीतर "नज यूनिट्स" ने सिद्ध किया है कि साधारण से सौम्य प्रोत्साहन से भी कानून के उल्लंघन को कम कराया जा सकता है।
- **अधिक प्रभावी:** इसे जब सोच-समझकर लागू किया जाता है, तो केवल जनादेश, वित्तीय प्रोत्साहन या जागरूकता अभियानों की तुलना में ये (नज) अधिक प्रभावी हो सकते हैं।
- **साक्ष्य-आधारित:** अनुभवजन्य अनुसंधान और साक्ष्य के बाद ही अक्सर सौम्य प्रोत्साहन के निर्णय लिए जाते हैं, जिससे उन्हें काफी विश्वसनीयता तथा वैधता प्राप्त होती है।
- **विविधता:** सौम्य प्रोत्साहन योजनाओं को विभिन्न प्राथमिकताओं, मूल्यों और सांस्कृतिक संदर्भों के अनुकूल बनाया जा सकता है। यह हस्तक्षेपों को अधिक प्रभावी और समावेशी बनाता है।

© Vision IAS

नज के लिए अभिप्रेरणा

उद्देश्य	किसे लाभ मिलेगा	उदाहरण
स्वार्थी	नज करने वाला (Nudger)	उत्पाद की बिक्री या राजनीतिक ताकत को बढ़ा–चढ़ाकर पेश करना
अभिभावक तुल्य दर्शाना	नज से प्रभावित व्यक्ति (Nudged)	सेवानिवृत्ति या स्वास्थ्य संबंधी योजनाओं के द्वारा बचत में वृद्धि करना
समाज के अनुकूल व्यवहार	सामूहिक (प्रभावित व्यक्ति सहित समस्त समाज)	रोगों के प्रसार या CO_2 के उत्सर्जन को कम करना

सौम्य प्रोत्साहन/ नज के साथ जुड़ी प्रमुख नैतिक चिंताएं

- **नज करने वाले का लक्ष्य:** नज का संभावित प्रभाव उकसाने वालों के इरादों और नज से किसे लाभ पहुंचता है, इस पर निर्भर करता है।
- **नज से प्रभावित व्यक्ति की स्वायत्तता:** स्वायत्तता से संबंधित नैतिक चिंताएं मुख्य रूप से निम्नलिखित से संबंधित हैं:
  - **व्यवहारिक उपयोग:** सौम्य प्रोत्साहन मानवीय कमियों, विशेष रूप से अनिश्चितता, निष्क्रियता और अधीरता के साथ काम करते हैं; इस प्रकार, सौम्य प्रोत्साहन से लोगों की **अतार्किकता का लाभ** उठाया जा सकता है। उदाहरण के लिए- बचत योजनाओं में स्वत: नामांकन किसी व्यक्ति की निष्क्रियता का लाभ उठाता है।
  - **पारदर्शिता का अभाव:** अवचेतन स्तर पर संचालित होने वाले सौम्य प्रोत्साहन के साथ **हेरफेर और पारदर्शिता की कमी** की चिंताएं उठाई जाती हैं।
- **नज के प्रभाव:** नज के प्रभाव के दो पहलू हो सकते है: नज की प्रभावशीलता (प्रभाव की ताकत) और अनपेक्षित प्रभाव।
  - **प्रभावशीलता:** नज विचारों को उत्तेजित नहीं करता है, इसलिए इसमें ज्ञान, मतभेद उत्पन्न करने की, या **दीर्घावधि में लोगों के विश्वास, दृष्टिकोण और व्यवहार को बदलने के लिए आवश्यक मूल्यांकन करने की संभावना कम है।**
  - **अनपेक्षित प्रभाव:** कुछ मामलों में, एक सौम्य प्रोत्साहन **प्रतिक्रिया** (चयन प्रतिबंध की धारणा के कारण नकारात्मक प्रतिक्रिया) या **बूमरैंग प्रभाव** (इच्छित परिणाम के अनुवर्ती से उलट) उत्पन्न कर सकता है।

निष्कर्ष

नज नीतियां पारदर्शी होनी चाहिए, छद्म या छुपी हुई नहीं होनी चाहिए और मार्गदर्शन दिए जाने वाले लोगों के मूल्यों के अनुरूप होनी चाहिए। इसके अलावा, नज नीतियों को सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील होना चाहिए और आबादी समूह के भीतर मूल्यों, मानदंडों और विश्वास की विविधता के अनुरूप होनी चाहिए।

"ज्यादातर लोग बिल्कुल अचंभित करने वाले कार्य भी कर सकते हैं। इसके लिए कभी-कभी उन्हें थोड़ी सी प्रेरणा (नज) की जरूरत होती है।"

— टिम फेरिस

4.2. बुनियादी जरूरतें और दुर्लभ संसाधन (Bare Necessities and Scarce Resources)

प्रस्तावना

हाल ही में, सुप्रीम कोर्ट ने सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (NFSA), 2013 के तहत 80 मिलियन प्रवासियों और असंगठित श्रमिकों को राशन कार्ड जारी करने का आदेश दिया। इसका कारण यह है कि उन्हें सरकारी खाद्यान्न का दावा करने के लिए राशन कार्ड की आवश्यकता होती है। यह खाद्यान्न उनकी बुनियादी जरूरत का हिस्सा माना जाता है। हालांकि, कभी-कभी सरकारें संसाधनों की कमी के समय में बुनियादी ज़रूरतों को पूरा नहीं कर पाती हैं, जो मानवता की सबसे बुनियादी नैतिक दुविधाओं में से एक है।

हितधारक और उनकी भूमिका/ हित	
हितधारक	**भूमिका/ हित**
व्यक्ति और समुदाय	• **आवश्यक संसाधनों और सेवाओं** के प्राप्तकर्ता। • **अच्छे स्वास्थ्य और कल्याण** के साथ जीवन की रक्षा।
सरकार	• बुनियादी ज़रूरतों की पूर्ति हेतु नीति निर्माण। • **संसाधन आवंटन** को विनियमित करना। • **आर्थिक वृद्धि** सुनिश्चित करना और **राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति** का प्रयास करना।
नागरिक समाज	• **सहायता और प्रत्यक्ष राहत** प्रदाता। • **सरकार और कॉर्पोरेट जगत के कार्यों** की निगरानी। • बुनियादी जरूरतों की पूर्ति में विद्यमान **कमी को पूरा** करना।
निगम	• **संसाधनों के उपयोग और रोजगार के अवसरों पर** प्रभाव। • **कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व** की पूर्ति करना।
अंतर्राष्ट्रीय संगठन	• **सार्वभौमिक मानवाधिकारों** को बढ़ावा देना। • दुनिया भर में **असमानताओं को कम करना** और बुनियादी जरूरतों की आपूर्ति सुनिश्चित करना।

बुनियादी जरूरतों को उपलब्ध कराने के लिए सरकार जिम्मेदार क्यों है?

- **सामाजिक अनुबंध का सिद्धांत** यह बताता है कि सरकार का अपने नागरिकों के साथ किस प्रकार का संबंध होना चाहिए। उदाहरण के लिए- **नागरिक लोक सेवाओं और सुरक्षा के बदले में कुछ स्वतंत्रताओं को प्रतिबंधित** करते हैं।
- **संवैधानिक आदेश:** भारत के संविधान में सरकार को अपने **नागरिकों की बुनियादी आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को पूरा करने** का कार्य सौंपा गया है।
  - उदाहरण के लिए- **अनुच्छेद 39(a)** राज्य को अपने नागरिकों के लिए आजीविका के पर्याप्त साधनों का अधिकार सुरक्षित करने की आवश्यकता पर बल देता है, जबकि **अनुच्छेद 47 पोषण के स्तर और जीवन स्तर को बढ़ाने** की परिकल्पना करता है।
  - **सुप्रीम कोर्ट ने मूल अधिकार का दायरा बढ़ा दिया है।** उदाहरण के लिए- जीवन के अधिकार का विस्तार कर इसमें भोजन के अधिकार आदि को भी शामिल किया गया है।
- **अधिकारों की विस्तारित प्रकृति:** बुनियादी जरूरतों की सीमा को बढ़ाने के लिए कई कानून जनसंख्या की जरूरतों के साथ विकसित हुए हैं, उदाहरण के लिए- **शिक्षा का अधिकार, सूचना का अधिकार, आदि।**
- **अंतर्राष्ट्रीय दायित्व या प्रतिबद्धताएं:** इसका उद्देश्य अपने नागरिकों की बुनियादी जरूरतों को पूरा करना है, जैसे- संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित **सतत विकास लक्ष्य (SDGs)।**

सरकार द्वारा बुनियादी जरूरतों की पूर्ति के लिए नैतिक दृष्टिकोण कौन-से हैं?

- **न्याय-आधारित दृष्टिकोण:** दुर्लभ संसाधनों का **उचित वितरण सुनिश्चित करना** जो यथासंभव न्यायसंगत हो और शोषण को कम करे।
- **उपयोगितावाद:** सीमित संसाधनों से प्राप्त लाभों को अधिकतम करने का लक्ष्य रखते हुए, **आवश्यकता और संभावित प्रभाव** के आधार पर **संसाधन आवंटन को प्राथमिकता** दी जाए।
- **क्षमता दृष्टिकोण:** शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और अन्य आवश्यक सेवाओं तक पहुंचने के लिए **व्यक्तियों की क्षमताओं में वृद्धि** को प्राथमिकता देना चाहिए तथा उन्हें गरीबी और अभाव से उबरने के लिए सशक्त बनाना चाहिए।
- **धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण:** मानवाधिकारों का सम्मान और उनकी सुरक्षा पर ध्यान देना चाहिए।
- **अधिकार-आधारित दृष्टिकोण:** यह बुनियादी आवश्यकताओं को **मौलिक मानवाधिकारों** के रूप में मान्यता देता है। साथ ही, यह सरकारों और संस्थानों से इन अधिकारों को पूरा करने के लिए अपने दायित्वों को पूरा करने का आह्वान करता है।

आगे की राह

- **वैश्विक सार्वजनिक वस्तुएं:** कोविड-19 महामारी, शरणार्थी संकट, जलवायु परिवर्तन आदि वैश्विक समस्याओं ने **वैश्विक स्तर पर सार्वजनिक वस्तुओं की आवश्यकता** को दर्शाया है।

© Vision IAS

- **प्राथमिकता और कुशल आवंटन:** उन प्रथाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जो संसाधनों की बर्बादी को कम करती हैं, संधारणीय होती हैं और प्रकृति एवं मानवीय गतिविधियों के बीच सामंजस्य को बढ़ावा देती हैं।
    - इसके अलावा, संसाधन आवंटन करते समय **हाशिए पर स्थित लोगों और कमजोर आबादी की जरूरतों** पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए। गौरतलब है कि **गांधीजी के सर्वोदय की परिकल्पना** में भी यह विचार शामिल है।
- **बुनियादी जरूरतों को परिभाषित करने के सिद्धांत:** बुनियादी जरूरतों को परिभाषित करने के लिए, बुनियादी आवश्यकताओं के मूल समूह की पहचान करने हेतु सार्वजनिक वस्तुओं के प्रावधान के सिद्धांत का उपयोग किया जा सकता है।
    - **नीदरलैंड** सार्वजनिक वस्तुओं को उपलब्ध करवाकर मूलभूत आवश्यकताओं को परिभाषित करने का एक अच्छा उदाहरण प्रदान करता है। ये वस्तुएं सामाजिक रूप से न्यायसंगत, आर्थिक रूप से कुशल और लोकतांत्रिक सिद्धांतों के अनुरूप होनी चाहिए।
- **तकनीकी नवाचार:** संसाधन प्रबंधन में एडवांस प्रौद्योगिकी को अपनाने से सीमित संसाधनों के कुशल और प्रभावी उपयोग में मदद मिल सकती है।
- **संसाधनों का कन्वर्जेंस:** संसाधनों के प्रभावी तरीके से प्रबंधन के लिए सरकार के विभिन्न स्तरों, नागरिक समाजों, उद्योगों के कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व कोष और अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के बीच सहयोग की आवश्यकता है।

> **"अच्छे या या स्वस्थ समाज को तब परिभाषित किया जा सकता है, जब लोगों की सभी बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करके उनके उच्चतम उद्देश्यों को उभरने दिया जाए।"**
>
> — अब्राहम मेस्लो

4.3. खुशहाली (Happiness)

प्रस्तावना

हाल ही में, **यू.एन. सस्टेनेबल डेवलपमेंट सॉल्यूशंस नेटवर्क (SDSN)** ने गैलप (Gallup) और ऑक्सफोर्ड वेलबीइंग रिसर्च सेंटर के साथ साझेदारी में **वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट (WHR) 2024** जारी की। **फिनलैंड** लगातार सातवें वर्ष रैंकिंग में शीर्ष पर रहा, जबकि **भारत 143 देशों में से 126वें स्थान पर** था।

खुशहाली की परिभाषा क्या है?

खुशहाली की कोई सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत परिभाषा नहीं है। हालांकि, **आनंद या परम आनंद,** भारतीय संस्कृति में गहराई से निहित एक विचार है। यह खुशहाली और कल्याण की एक गहन और बेहतर स्थिति को दर्शाता है जो क्षणिक सुखों से परे होता है। इसे ही **मानव अस्तित्व का अंतिम लक्ष्य** माना जाता है।

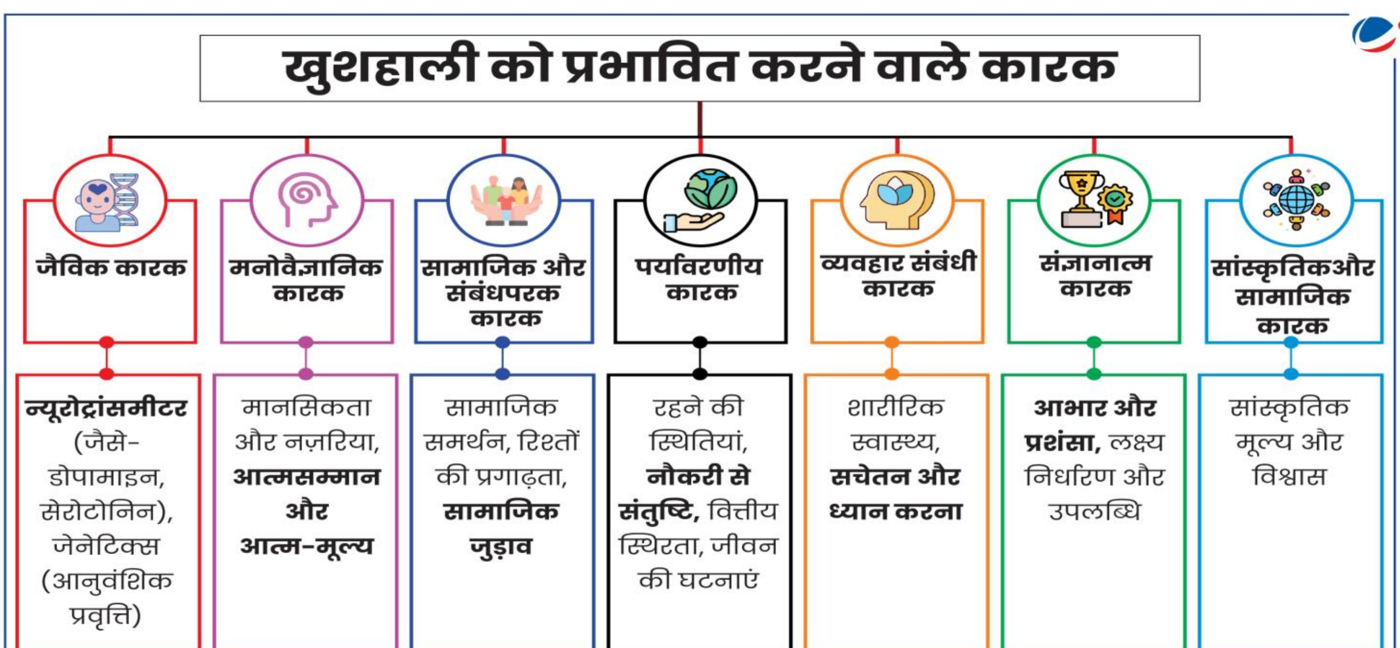

खुशहाली या खुशी की व्याख्या करने वाले विभिन्न दार्शनिक सिद्धांत

- **उपनिषद परंपरा: सत् (अस्तित्व) और चित (चेतना)** के साथ-साथ **आनंद, ब्रह्म के तीन आवश्यक पहलुओं में से एक** है। ये तीन पहलू **ब्रह्म** की प्रकृति का मूल भाग निर्मित करते हैं। इन्हें अक्सर **"सत्-चित-आनंद"** के रूप में व्यक्त किया जाता है **(तैत्तिरीय उपनिषद)**।
- **एपिक्यूरियनवाद (एपिकुरस):** खुशहाली वस्तुतः शारीरिक और विशेष रूप से मानसिक पीड़ा (अटारैक्सिया) का पूर्ण अभाव है। इस स्थिति में न तो देवताओं का भय रहता है और न ही जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं के अलावा, किसी अन्य चीज की इच्छा।
- **बौद्ध धर्म:** इच्छाओं की समाप्ति और सचेतनता (माइंडफुलनेस) एवं करुणा के अभ्यास से खुशी प्राप्त होती है।

खुशहाली: दूरगामी प्रभावों के साथ एक बहुआयामी खोज

- **व्यक्तिगत स्तर पर खुशहाली के लाभ:** कई अध्ययनों के अनुसार, **खुशहाली से उत्पादकता में 12% की वृद्धि** हो सकती है। इसका **वैवाहिक जीवन में संतुष्टि के साथ सकारात्मक संबंध** है।
- **सामाजिक-स्तर पर प्रभाव:** खुशहाल समुदाय राजनीतिक संस्थानों में भी **उच्च स्तर की नागरिक सहभागिता** और विश्वास प्रदर्शित करते हैं।
- **राष्ट्रीय स्तर के निहितार्थ:** खुशहाली राजनीतिक स्थिरता, संधारणीय कार्य पद्धतियों को अपनाने और आर्थिक विकास से जुड़ी है।
    - जिन देशों ने **"सकल राष्ट्रीय खुशहाली[4]"** से जुड़ी योजनाओं को अपनी विकास योजनाओं में एकीकृत किया है, उनके **आर्थिक प्रदर्शन में भी वृद्धि** देखी गई है।
- **वैश्विक स्तर पर व्यापक प्रभाव: वैश्विक शांति सूचकांक** से यह सुझाव मिलता है कि **जिन देशों में खुशहाली का स्तर अधिक** है, वे **शांति और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग** के उपायों पर अधिक स्कोर प्राप्त करते हैं।

नैतिक मूल्य खुशहाली कैसे पैदा करते हैं?

- **परोपकारिता और करुणा:** दूसरों की परवाह करने हेतु प्रेरित करने वाले नैतिक मूल्य (जैसे- परोपकारिता एवं करुणा) जीवन में **सार्थकता, लक्ष्य और कुल मिलाकर खुशहाली की भावना को बढ़ाने में मददगार** साबित हुए हैं।
- **ईमानदारी एवं प्रामाणिकता:** ईमानदारी के साथ जीवन जीने और हमारे कार्यों को हमारे मूल्यों के साथ जोड़कर देखने से **आत्म-सम्मान, आत्मविश्वास और प्रामाणिकता की भावना बढ़ती** है। इससे **जीवन में खुशहाली और संतुष्टि को बढ़ावा** मिलता है।
- **निष्पक्षता और न्याय:** निष्पक्षता, न्याय और समानता के नैतिक सिद्धांतों को कायम रखने तथा **संघर्ष, रोष और नाखुशी की संभावनाओं को कम करने से** अधिक **सामंजस्यपूर्ण और स्थिर समाज** बनाने में मदद मिलती है।
- **स्व-नियमन और अनुशासन:** आत्म-अनुशासन, आवेग नियंत्रण और भावनात्मक मूल्यों को प्रोत्साहित करने वाले नैतिक मूल्य लोगों को **उचित विकल्प चुनने एवं तनाव को अधिक प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने** में मदद कर सकते हैं।
- **सकारात्मक संबंध:** नैतिक मूल्य जो **हमारे संबंधों में ईमानदारी, विश्वास और सम्मान को प्राथमिकता** देते हैं, वे अधिक **सार्थक, सहायक एवं पारस्परिक रूप से पूर्ण संबंधों को बढ़ावा** देते हैं। **हमारे संबंधों में ईमानदारी, विश्वास और सम्मान को प्राथमिकता** देने वाले नैतिक मूल्य अधिक **सार्थक, सहायक एवं पारस्परिक रूप से पूर्ण संबंधों को बढ़ावा** देते हैं।

> **"खुशियों का कोई रास्ता नहीं है, खुशियां ही रास्ता हैं।"**
>
> — बुद्ध

4.4. उपभोक्तावाद (Consumerism)

प्रस्तावना

पिछले कुछ दशकों में यह देखा गया है कि लोगों में उपभोक्तावाद की प्रवृत्ति बढ़ रही है। यह प्रवृत्ति पश्चिम में अधिक प्रचलित थी, लेकिन अब भारत जैसे विकासशील देश भी इसके प्रभाव में आ गए हैं। यह प्रवृत्ति उन लोगों में अधिक दिखाई देती है जो अलग-अलग गैजेट्स, लक्जरी एक्सेसरीज़ आदि के पीछे भाग रहे हैं। ज्यादातर लोगों को इन सबकी आवश्यकता नहीं है, लेकिन वे इनकी चाहत रखते हैं।

[4] Gross National Happiness

हितधारक और उनके हित	
प्रमुख हितधारक	**हित**
उपभोक्ता	• उपभोक्ता हमेशा सर्वोत्तम और नवीनतम उत्पादों एवं सेवाओं की आशा करता है। • उपभोक्ता उम्मीद करते हैं कि उत्पादक हमेशा उत्पाद के बारे में **सही जानकारी** साझा करेगा। • ऐसे **विज्ञापनों से बचा जाना चाहिए जो भ्रमित** करते हों।
ब्रांड्स	• इनका मुख्य उद्देश्य अपना **लाभ और अपने उत्पादों की बाजार हिस्सेदारी बढ़ाना** है।
विज्ञापन कंपनियां	• ये **ब्रांड्स की मांग के अनुसार** काम करती हैं। • विनियामक दिशा-निर्देशों का पालन करना।
सरकार/ प्राधिकारी	• इनका उद्देश्य **उपभोक्ता और कंपनियों दोनों का कल्याण** सुनिश्चित करना है। • ये बाज़ार की गतिविधियों को नियंत्रित करते हैं। हालांकि, ये कानूनी तरीकों से उपभोक्तावाद को नियंत्रित नहीं कर सकते हैं।
पर्यावरण	• संसाधनों का उपयोग **संधारणीय तरीके से** किया जाना चाहिए ताकि इससे **पर्यावरण पर प्रदूषण जैसे नकारात्मक प्रभाव न** पड़ें।

उपभोक्तावाद के कारण नैतिक मूल्यों का पतन

- **अवांछनीय साधनों को बढ़ावा:** उदाहरण के लिए- प्रायः सौंदर्य और कॉस्मेटिक सेवाएं/ उत्पादों के **विज्ञापन** दावा करते हैं कि ये उत्पाद उपयोगकर्ता के जीवन को बदल देंगे।
- **विवेकहीन उपभोग:** उपभोक्तावाद में, व्यक्ति केवल उत्पाद खरीदने और संग्रह करने के बारे में सोचता है। इस रेस में वह अपनी **चेतना यानी अपने विचारों और भावनाओं के प्रति जागरूकता खो** देता है। यह रेस व्यक्ति को **सही निर्णय लेने से रोकती** है, जैसे- अपने सोशल मीडिया पर तस्वीरें अपलोड करने के उद्देश्य से की गई खरीदारी।
- **सामाजिक न्याय व्यवस्था को कमजोर करता है:** यह पाया गया है कि **जो समाज उपभोक्तावाद से प्रेरित होते हैं उनमें भारी असमानताएं** होती हैं। उनमें कुछ लोग विलासितापूर्ण जीवन जीते हैं, जबकि अन्य की बुनियादी जरूरतें भी पूरी नहीं होती हैं।
- **पर्यावरणीय नैतिकता का उल्लंघन:** उपभोक्तावाद के कारण मांग में आने वाली वृद्धि स्वाभाविक रूप से उत्पादन को बढ़ाती है। इससे **भूमि उपयोग में परिवर्तन** होता है, **जैव विविधता को खतरा** होता है, **अधिक अपशिष्ट** उत्पन्न होता है और **प्रदूषकों का उत्सर्जन** होता है।

आवश्यकताओं और इच्छाओं के बीच संतुलन बनाना

- **नैतिक उपभोक्तावाद को अपनाना:** यह उत्पादों और सेवाओं को इस तरह से खरीदने की प्रथा को बढ़ावा देता है, जिससे **सामाज और/ या पर्यावरण** पर पड़ने वाले **नकारात्मक प्रभाव कम** हों।
- **कॉर्पोरेट उत्तरदायित्व को बढ़ावा देना:** कॉर्पोरेट्स को **'शेयरधारक पूंजीवाद'** के बजाय **'हितधारक पूंजीवाद'** को अपनाना चाहिए।
  - हितधारक पूंजीवाद यह प्रस्ताव करता है कि कॉर्पोरेट्स को अपने **सभी हितधारकों के हितों की पूर्ति करनी चाहिए, न कि केवल शेयरधारकों की।**
- **विज्ञापनों/ इंफ्लुएंसर्स पर अंकुश लगाना: भारतीय विज्ञापन मानक परिषद (ASSCI)**[5] जैसे विनियामक प्राधिकरणों को उन विज्ञापनों पर नज़र रखनी चाहिए, जो उपभोक्ताओं को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं।
- **सरकार/ प्राधिकारियों द्वारा प्रयास:** विलासिता की वस्तुओं पर कर लगाकर और संधारणीय प्रथाओं के लिए प्रोत्साहन देकर इसे नियंत्रित किया जा सकता है।
  - LiFE[6] जैसी पहलों को और अधिक प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

Mains 365 : नीतिशास्त्र

[5] Advertising Standards Council of India

[6] पर्यावरण के लिए जीवनशैली/ Lifestyle for environment

“धरती पर हर किसी की जरूरत को पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधन हैं, लेकिन हर किसी के लालच के लिए नहीं।”

— महात्मा गांधी

4.5. सरकारी एग्जाम में अनुचित साधनों (चीटिंग) का प्रयोग {Use of Unfair Means (Cheating) In Public Examination}

प्रस्तावना

हाल ही में, संसद ने **लोक परीक्षा (कदाचार रोकथाम) अधिनियम**[7] **(PEA), 2024** पारित किया। इस अधिनियम में **केंद्र सरकार और उसकी एजेंसियों के तहत कराई** जाने वाली लोक परीक्षा को आयोजित करने में शामिल **विभिन्न संस्थाओं** द्वारा अपनाए गए **अनुचित साधनों या किए गए अपराधों** से संबंधित प्रावधानों को शामिल किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य लोक यानी सार्वजनिक परीक्षाओं में अनुचित साधनों के उपयोग को रोकना है।

हितधारक और उनके हित	
हितधारक	**हित**
छात्र	• ज्ञान में वृद्धि। • सुरक्षित रोजगार की संभावनाएं। • स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के माध्यम से आत्मविश्वास और समय प्रबंधन जैसे कौशल का विकास करना। • लर्निंग का आकलन करना।
सरकार और लोक प्राधिकरण	• योग्य अधिकारियों का चयन करना। • युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराना। • नियुक्ति प्रक्रिया में पारदर्शिता, निष्पक्षता और विश्वसनीयता लाना।
समाज	• समाज की सेवा के लिए योग्य मानव संसाधन का विकास करना। • ईमानदारी, कठोर परिश्रम आदि गुणों को बढ़ावा देना।
परीक्षा केंद्र, सेवा प्रदाता	• परीक्षा आयोजित करने से आर्थिक लाभ। • निष्पक्ष एवं पारदर्शी तरीके से परीक्षा आयोजित करने की जिम्मेदारी।

परीक्षाओं में नकल के विरुद्ध नैतिक तर्क

- **कर्त्तव्य-मूलक नैतिकता (Deontological ethics) का उल्लंघन:** छात्र अनुकूल उद्देश्यों (या परिणामों) के लिए अनुचित साधनों (जैसे- चीटिंग) का सहारा लेते हैं।
- **उपयोगितावाद के विरुद्ध:** चीटिंग समाज की मदद नहीं करती है। इससे समाज के हितों की पूर्ति नहीं होती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि जो लोग आवश्यक ज्ञान और सेवाएं प्रदान करने में सक्षम नहीं हैं, वे महत्वपूर्ण पदों पर आसीन हो जाते हैं।
- **निरपेक्ष आदेश (Categorical Imperative) का उल्लंघन:** इमैनुएल कांट द्वारा प्रदत्त कैटगॉरिकल इम्पेरटिव के सिद्धांत के अनुसार, किसी को केवल उन नियमों के अनुसार कार्य करना चाहिए जो सभी के लिए लागू हो सकते हैं।

[7] Public Examinations (Prevention of Unfair Means) Act (PEA), 2024

- **निष्पक्षता के सिद्धांत के रूप में न्याय (Justice as Fairness Principle):** चीटिंग **मानवीय स्वतंत्रता और अवसरों की समानता का उल्लंघन** करती है और **अन्यायपूर्ण भेदभाव का समर्थन** करती है।
- **सद्गुण नीतिशास्त्र (Virtue Ethics):** सत्य, विश्वसनीयता और चरित्र की उत्कृष्टता के गुण **चीटिंग या बेईमानी का समर्थन नहीं** करते हैं।

परीक्षाओं में नकल के कारण

- **अस्पष्ट रवैया:** माता-पिता और शिक्षक **कभी-कभी ऐसी संस्कृति का समर्थन** करते हैं जो **चीटिंग को स्वीकार** करती है, जैसे कि **स्टूडेंट्स को साहित्यिक चोरी की अनुमति देना।**
- **प्रतिस्पर्धा और सामाजिक दबाव:** आज के बढ़ते **प्रतिस्पर्धी माहौल** में, परीक्षा में **अच्छा प्रदर्शन करना** स्वयं का अस्तित्व बनाए रखने के लिए और भी महत्वपूर्ण होता जा रहा है।
- **उच्च-स्तरीय तकनीक:** चीटर्स की चीटिंग में मदद करने वाले कई उपकरणों तक पहुंच होती है, जैसे- **स्पाइ माइक, ब्लूटूथ डिवाइस** इत्यादि।
- **संस्थागत उदासीनता:** अनुचित साधनों के उपयोग को रोकने के लिए उचित निगरानी प्रणालियों का अभाव है। **यथोचित दंड की अनुपस्थिति धोखाधड़ी को और बढ़ावा** दे सकती है।
- **परोपकारी प्रकृति की चीटिंग:** कोई व्यक्ति किसी अन्य को **लाभ पहुंचाने के लिए अनुचित साधनों का उपयोग** कर सकता है, जैसे कि माता-पिता द्वारा अपने बच्चों को परीक्षा में मदद करने के लिए मौद्रिक साधनों का उपयोग करना, दोस्तों द्वारा एक-दूसरे की मदद करना आदि।

"लोक परीक्षा (कदाचार रोकथाम) अधिनियम, 2024" सरकारी एग्जाम में अनुचित साधनों के उपयोग को कैसे रोक पाएगा?

- **अनुचित साधनों की व्यापक परिभाषा:** अधिनियम में **15 कृत्यों को सूचीबद्ध** किया गया है जिनमें **सरकारी एग्जाम में "मौद्रिक या अनुचित लाभ के लिए"** अनुचित साधनों का उपयोग किया जाता है। इसमें प्रश्न पत्र/ उत्तर कुंजी का लीक होना, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अभ्यर्थी की सहायता करना।
- **सख्त दंडात्मक कार्रवाई:** अधिनियम के तहत इस तरह के सभी अपराध को **संज्ञेय, गैर-जमानती और अशमनीय**[8] बनाया गया है।
- **जांच करने के लिए अधिकृत अधिकारी:** एक अधिकारी जो **डिप्टी सुपरिटेंडेंट ऑफ पुलिस (DSP) या असिस्टेंट कमिश्नर ऑफ पुलिस (ACP)** के पद से नीचे का न हो।

आगे की राह

- **प्रौद्योगिकी आधारित समाधान:** अनुचित उद्देश्यों के लिए **प्रौद्योगिकी के उपयोग के मामलों से बेहतर ढंग से निपटने** के लिए नई रणनीतियों पर विचार करने और उन्हें अपनाने की आवश्यकता है।
    - उदाहरण के लिए- सरकार ने डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के अनुचित इस्तेमाल को रोकने हेतु प्रोटोकॉल विकसित करने के लिए लोक परीक्षाओं पर एक **उच्च स्तरीय राष्ट्रीय तकनीकी समिति** गठित करने का निर्णय लिया था।
- **सामाजिक प्रभाव और अनुनय:** समाज में **चीटिंग के प्रति नेगेटिव दृष्टिकोण बनाने** के लिए **मूल्य-आधारित शिक्षा और रोल मॉडल का उपयोग** किया जाना चाहिए।
- **माता-पिता की भागीदारी:** माता-पिता को **घर पर नैतिक शिक्षा** देते हुए **अनैतिक प्रथाओं का सहारा लिए बिना शिक्षा में अपने बच्चों का सहयोग** करना चाहिए।

"मैं धोखे से जीतने की बजाए सम्मान के साथ हारना ज्यादा पसंद करूंगा।"

— सोफॉकल्स

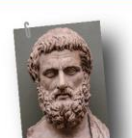

[8] Cognizable, non-bailable, and non-compoundable

4.6. व्यक्तिगत सामाजिक उत्तरदायित्व (Individual Social Responsibility: ISR)

परिचय

एडेलगिव हुरुन इंडिया परोपकार सूची 2023 के अनुसार, 119 भारतीय बिजनेस टायकून्स ने वित्त वर्ष 2023 में 5 करोड़ रुपये या उससे अधिक का दान दिया। इन्होंने सम्मिलित रूप से परोपकारी गतिविधियों के लिए 8,445 करोड़ रुपये का योगदान दिया। यह समाज में सामाजिक उत्तरदायित्व की भूमिका पर प्रकाश डालता है।

व्यक्तिगत सामाजिक उत्तरदायित्व (ISR) क्या है?

- **सामाजिक उत्तरदायित्व** एक नैतिक ढांचा है जहां संगठन और व्यक्ति व्यापक कल्याण के लिए कार्य करने तथा समाज व पर्यावरण को क्षति पहुंचाने से बचने का प्रयास करते हैं।
- ISR उन नैतिक दायित्वों और कार्यों को संदर्भित करता है जो व्यक्ति अपने समुदाय तथा समग्र समाज के प्रति रखते हैं।
    - ISR में व्यक्ति को यह ज्ञात होता है कि उसके व्यक्तिगत कार्य समुदाय को कैसे प्रभावित करते हैं।

ISR कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) से किस प्रकार भिन्न है?

अंतर की प्रकृति	व्यक्तिगत सामाजिक उत्तरदायित्व (ISR)	कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR)
पैमाना व विस्तार	व्यक्तिगत निर्णय और स्वैच्छिक योगदान, जैसे- परोपकारी योगदान।	कॉर्पोरेट संस्थाएं, व्यवसाय और बड़ी कंपनियां, जैसे- बिसलेरी द्वारा आयोजित बॉटल्स फॉर चेंज अभियान।
योगदान की प्रकृति	अक्सर **छोटे और अधिक व्यक्तिगत,** जैसे- स्वयं सेवा, धर्मार्थ दान, सामाजिक न्याय का समर्थन करना आदि।	आमतौर पर, **व्यापक स्तर का होता है।** इसमें परोपकार, पर्यावरणीय स्थिरता कार्यक्रम, नैतिक व्यवसाय प्रथाएं, सामुदायिक विकास आदि आते हैं।
प्रेरक	यह आमतौर पर, **स्वैच्छिक और व्यक्तिगत मूल्यों और नैतिक दायित्व की भावना** से प्रेरित होता है।	यह अक्सर **कानूनी आवश्यकताओं** के साथ-साथ **नैतिक विचारों और जनसंपर्क** से भी प्रेरित होता है।

भारत में ISR की आवश्यकता

- **सार्वजनिक क्षेत्रक की प्रधानता:** भारत में सामाजिक क्षेत्रक के खर्च का अधिकतर भार सार्वजनिक क्षेत्रक द्वारा उठाया जा रहा है, जो कुल खर्च का 95% है।
- **सतत विकास में वित्त-पोषण अंतराल:** भारत 2030 तक संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को प्राप्त करने के लिए आवश्यक कुल वार्षिक वित्त पोषण के नीति आयोग के अनुमान (GDP का 13%) से काफी पीछे है।
- **संसाधन पुनर्वितरण:** मजबूत आर्थिक संवृद्धि के बावजूद, भारत में बहुआयामी असमानताएं बनी हुई हैं। ऐसे में, संसाधन पुनर्वितरण के लिए काफी मात्रा में निवेश और प्रयासों की आवश्यकता है।
- **पर्यावरणीय संधारणीयता:** ISR संबंधी व्यवहार, जैसे- संधारणीय जीवन स्तर, अपशिष्ट में कमी और संरक्षण के प्रयास, पर्यावरणीय संधारणीयता में योगदान कर सकते हैं तथा जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम कर सकते हैं।
- **तकनीकी विकास:** प्रौद्योगिकी की भूमिका बढ़ाने, डिजिटल विभाजन को कम करने और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने के लिए ISR का उपयोग किया जा सकता है।

ISR में संलग्न होने से संबंधित नैतिक विचार

- **लाभार्थियों की जरूरत के अनुरूप:** ISR गतिविधियों को लाभार्थियों की पसंद की स्वायत्तता को ध्यान में रखकर डिजाइन किया जाना चाहिए।
- **सांस्कृतिक संवेदनशीलता:** ISR गतिविधियों में सांस्कृतिक संदर्भ को समझना चाहिए और सम्मानजनक जुड़ाव के लिए स्थानीय समुदायों के साथ सहयोग करना चाहिए।
- **सामाजिक हित बनाम व्यक्तिगत हित:** व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत पसंद और मूल्यों द्वारा निर्देशित होते हैं, जो हमेशा लोगों के प्रत्येक समूह के साथ संरेखित नहीं हो सकते हैं।
    - व्यक्तियों को अपनी ISR गतिविधियों में उस समूह की संरचना और रुचियों को समझना चाहिए जिनके लिए वह गतिविधि डिजाइन की गई है।
- **परिणाम-उन्मुख:** व्यक्तियों को सकारात्मक परिणामों को अधिकतम करने के लिए अपने योगदान के प्रभाव का आकलन करने, अपने दृष्टिकोण को अपनाने और बेहतर करने का प्रयास करना चाहिए।
- **सशक्तीकरण:** नैतिक ISR में समुदायों को आत्मनिर्भर बनने के लिए सशक्त बनाना और निर्भरता के चक्र को बनाए रखने के बजाय संधारणीय समाधानों को बढ़ावा देना शामिल है।

> **"यदि मेरे पास साधन है, तो उन्हें अच्छे कार्यों में लगाने की जिम्मेदारी भी मेरी है।"**
>
> — टेरी ब्रुक्स

4.7. नेक व्यक्ति (Good Samaritans)

प्रस्तावना

गुड सेमेरिटन (नेक व्यक्ति) से संबंधित एक मामले में, दिल्ली हाई कोर्ट ने कहा है कि जो व्यक्ति संकट में फंसे व्यक्ति की मदद करना चाहता है, उसे दया दिखाने के लिए परेशान नहीं किया जाना चाहिए। इसके अलावा, दिल्ली हाई कोर्ट ने कहा कि सार्वजनिक सड़क/ राजमार्ग पर किसी घायल की मदद करना हर व्यक्ति का मुख्य कर्तव्य है।

गुड सेमेरिटन और भारत में कानूनी प्रावधान

- एक व्यक्ति जो किसी दुर्घटना, क्रैश या आपातकालीन चिकित्सा स्थिति या आपातकालीन स्थिति में किसी घायल व्यक्ति को **तत्काल सहायता या आपातकालीन देखभाल प्रदान करने के उद्देश्य से आगे आता** है। ऐसा कार्य **किसी भी पैसे या पुरस्कार की अपेक्षा के बिना** और देखभाल या विशेष संबंध के किसी भी कर्तव्य के बिना स्वेच्छा से किया जाता है।
- **सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय ने गुड सेमेरिटन की सुरक्षा के लिए दिशा-निर्देश जारी किए:-**
    - गुड सेमेरिटन, **किसी भी घायल व्यक्ति को नजदीकी अस्पताल ले जा सकता है** और उसे वहां से तुरंत जाने की अनुमति दी जाएगी तथा उससे कोई भी प्रश्न नहीं पूछा जाएगा।
    - गुड सेमेरिटन किसी भी सिविल और आपराधिक दायित्व के लिए उत्तरदायी नहीं होगा।
    - **2016 में, सुप्रीम कोर्ट ने** इन दिशा-निर्देशों को **सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के लिए कानूनी रूप से बाध्यकारी बना दिया।**
    - गुड सेमेरिटन को सुरक्षा प्रदान करने के लिए मोटर वाहन अधिनियम, 1988 में **मोटर वाहन (संशोधन) अधिनियम, 2019** के जरिए **धारा 134A** को जोड़ा गया है।

विभिन्न हितधारक एवं उनके हित	
हितधारक	हित या लाभ
गुड सेमेरिटन	• संकट में पड़े लोगों की **सहायता करना एक व्यक्ति का उत्तरदायित्व एवं कर्तव्य है।** • यह अपेक्षा करना कि दूसरों की मदद करने के बदले में **उन्हें अधिकारियों द्वारा परेशान नहीं किया जाएगा** या **लंबी कानूनी औपचारिकताओं का सामना नहीं करना पड़ेगा।**

वह व्यक्ति जिसे सहायता की आवश्यकता है	• उम्मीद करना कि **हर व्यक्ति** करुणा और समानुभूति (Empathy) दिखाते हुए **एक गुड सेमेरिटन की तरह व्यवहार करेगा।**

सरकार	• सरकार को **गुड सेमेरिटन के कार्य से फायदा होता है,** क्योंकि इससे नागरिकों की जान बचती है।
	  ○ विधि आयोग के अनुसार, सड़क दुर्घटना में घायल हुए व्यक्तियों को यदि समय पर चिकित्सा देखभाल मिल जाती है, विशेषकर गोल्डन आवर के दौरान तो इससे 50% से अधिक मौतों को रोका जा सकता है।
	    ▪ गोल्डन ऑवर का तात्पर्य किसी दुर्घटना के बाद के पहले एक घंटे की समयावधि से है।
	• इससे सरकार को **2030 तक सड़क दुर्घटनाओं को 50% तक कम करने में मदद** मिलेगी।

पुलिस/ अन्य संबंधित प्राधिकरण	• **गुड सेमेरिटन से सभी महत्वपूर्ण जानकारी** एकत्रित करता है। • साथ ही यह भी प्रयास करता है कि एक **गुड सेमेरिटन को किसी भी तरह से परेशान न किया जाए,** जैसे- जांच में शामिल न करके, उन्हें संदिग्ध न मानकर, उन्हें प्रत्यक्षदर्शी बनने के लिए बाध्य न करके आदि के द्वारा।

कुछ ऐसे मुद्दे हैं, जो गुड सेमेरिटन के कार्यों में बाधा डालते हैं

- **स्वार्थ/ असहानुभूतिपूर्ण रवैया:** आधुनिक समय में समाज के अधिकांश लोगों में आत्म-केंद्रित (Self-centric) प्रवृत्तियाँ बढ़ गई हैं। जैसे कि वर्तमान समय में देखा जा रहा है कि किसी हादसे में लोग घायल की मदद करने की बजाय सेल्फी ले रहे होते हैं या वीडियो बना रहे होते हैं।
- **दर्शक की उदासीनता:** यह स्थिति **जिम्मेदारी के प्रसार की ओर ले जाती** है, अर्थात् जब घटना स्थल पर मौजूद कई लोग यह मानने लगते हैं कि यहां पर बहुत सारे लोग मौजूद हैं जिसमें कोई-न-कोई व्यक्ति तो इसकी मदद कर ही देगा।
- **जनता का प्रतिकूल निर्णय:** इसमें **घायल की मदद करने वाले व्यक्ति को लगता है कि कहीं भीड़ द्वारा उसे ही इस घटना के लिए दोषी न मान लिया जाए।**
- **कानूनी मुद्दे:** कानूनी मामलों में फंसने का डर लोगों में आगे आने और दूसरों की मदद करने के लिए एक प्रमुख बाधा के रूप में कार्य करता है।

आगे की राह

भारत में **गुड सेमेरिटन** की संस्कृति को पुरस्कार देकर या सम्मानित करके बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इसके अलावा, इससे जुड़े सर्वोत्तम वैश्विक उदाहरणों (बेस्ट प्रैक्टिसेज) को अपनाया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए- कनाडाई राज्यों में सेमेरिटन द्वारा आपातकालीन सहायता देने से जुड़ी किसी प्रकार की जवाबदेही से मुक्त किया है जब तक कि घोर लापरवाही न देखी जाए।

"याद रखें, दयालुता के लिए छोटे कार्य जैसी कोई चीज नहीं होती। प्रत्येक कार्य एक लहर पैदा करता है, जिसका कोई तार्किक अंत नहीं होता।"

— स्कॉट एडम्स

4.8. उत्पादों के विज्ञापन में इन्फ्लुएंसर की नैतिकता (Ethics of Influencer Endorsements)

परिचय

सेलिब्रिटी एंडोर्समेंट, उत्पादों के विज्ञापन का एक तरीका है। इसके तहत उत्पादों के विज्ञापन हेतु **प्रसिद्ध व्यक्तियों अथवा मशहूर हस्तियों या सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स का उपयोग** किया जाता है। ऐसे लोगों की जनसामान्य के बीच ख्याति अधिक होती है तथा सामान्य जनता का ऐसे लोगों पर भरोसा अधिक होता है। साथ ही, लोगों के बीच ये सेलिब्रिटी अत्यधिक सम्मानित या लोकप्रिय होते हैं।

केंद्र ने **मशहूर हस्तियों और सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स के लिए "एंडोर्समेंट्स नो-हाउ!**[9]**"** शीर्षक से **एंडोर्समेंट दिशा-निर्देशों** का एक सेट जारी किया है। ये दिशा-निर्देश **उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019** के समग्र दायरे के अधीन जारी किए गए हैं।

[9] Endorsements Know-hows!

© Vision IAS

प्रमुख हितधारक और उनके हित	
हितधारक	हित
ब्रांड/ कंपनियां	**मशहूर हस्तियों की पहुंच और विश्वसनीयता का लाभ** उठाने के लिए उनके साथ मिलकर काम करना, ताकि ब्रांड की पहचान, बिक्री में वृद्धि या ब्रांड की छवि में सुधार किया जा सके।
हस्तियां (सेलिब्रिटी)	उत्पादों/ ब्रांड्स की **प्रमाणिकता और गुणवत्ता को सत्यापित करने**, हितों के टकराव से बचने, अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा करने आदि से संबंधित कर्तव्य।
उपभोक्ता	ब्रांड या उत्पाद के साथ सेलिब्रिटी के जुड़ाव के चलते **उपभोक्ताओं की राय, दृष्टिकोण और खरीदारी संबंधी निर्णय प्रभावित** हो सकते हैं।
विज्ञापन एजेंसियां	यह सुनिश्चित करना कि एंडोर्समेंट ब्रांड के **मार्केटिंग उद्देश्यों के अनुरूप हो और लक्षित दर्शकों की मांग** के साथ मेल खाता हो।
मीडिया	मीडिया का प्रसार **सेलिब्रिटी एंडोर्समेंट के प्रभाव को व्यापक** बनाता है और ब्रांड की पहुंच में वृद्धि करता है।
विनियामक निकाय	**विज्ञापन में पारदर्शिता, सत्यता और नैतिक कार्यप्रणाली को सुनिश्चित** करने के लिए दिशा-निर्देश तथा नियम बनाना।

इन्फ्लुएंसर एंडोर्समेंट के समक्ष नैतिक मुद्दे क्या हैं?

- **विश्वास के दुरुपयोग का मामला:** प्रशंसकों की इन्फ्लुएंसर के प्रति यह धारणा होती है कि वे ऐसे किसी भी चीज की अनुशंसा नहीं करेंगे जो हानिकारक या निम्न गुणवत्ता वाली हो। हालांकि, कोई भी भ्रामक विज्ञापन उपभोक्ता के स्वास्थ्य/ हितों को प्रभावित कर सकता है।
  - उदाहरण के लिए- प्रसिद्ध बॉलीवुड अभिनेताओं और क्रिकेटर्स द्वारा पान-मसाला ब्रांड्स के सरोगेट विज्ञापन करना।
- **उत्तरदायित्व का अभाव:** यहां ऐसा कोई भी तंत्र मौजूद नहीं है जो एंडोर्स किए गए उत्पादों की जांच-पड़ताल के लिए उन्हें उत्तरदायी बनाता हो। इसके अलावा ब्रांड, सार्वजनिक रूप से उत्पाद के संबंध में उचित डेटा भी प्रदान नहीं करते हैं।

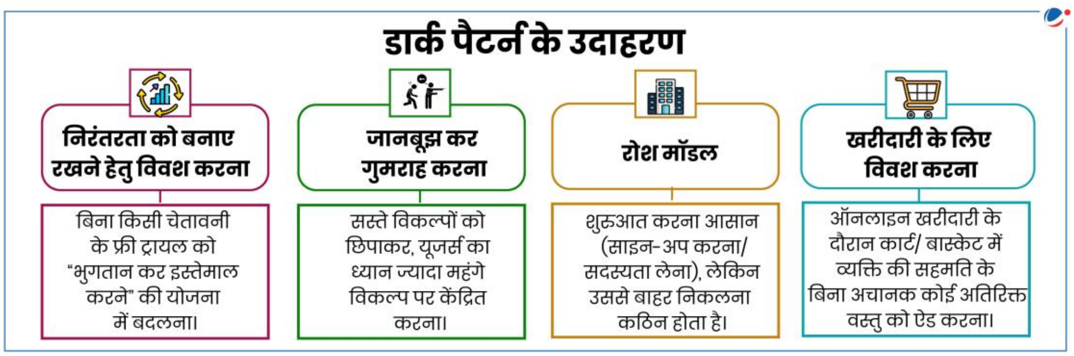

- **इन्फ्लुएंसर्स में उत्पाद की प्रकृति या गुणवत्ता की समझ का अभाव:** कभी-कभी इन्फ्लुएंसर के पास स्वयं **उस उत्पाद की गुणवत्ता के बारे में सीमित जानकारी होती है** जिसका वे प्रचार कर रहे होते हैं। गौरतलब है कि **फायर फेस्टिवल (Fyre Festival) फ्रॉड** इसका एक उदाहरण रहा है।
- **हितों का टकराव और भ्रामक मार्केटिंग:** उत्पादों का विज्ञापन यह दिखाते हुए किया जाता है कि उन्हें उपभोक्ता के लाभों को ध्यान में रखकर बनाया गया है, लेकिन वास्तव में उत्पादों का प्रचार **केवल लाभ के उद्देश्य** से किया जाता है।
- **बच्चों या किशोरों जैसे संवेदनशील समूहों को लक्षित करना:** बच्चे या किशोर, इन्फ्लुएंसर्स द्वारा किए जाने वाले उत्पादों के विज्ञापन का **तार्किक मूल्यांकन करने में असमर्थ होते हैं।**
- कुछ प्रौद्योगिकी कंपनियों, विज्ञापन एजेंसियों या मार्केटिंग इकोसिस्टम द्वारा निर्मित **डार्क पैटर्न की पैठ में वृद्धि हो रही है।**
  - **डार्क पैटर्न** की मदद से **सॉफ्टवेयर द्वारा हेरफेर करके उपयोगकर्ताओं को ऐसे विकल्प चुनने के लिए प्रेरित किया जा सकता है** जिन्हें वे नहीं चुनना चाहते हैं या ऐसे व्यवहार को हतोत्साहित किया जा सकता है जो कंपनी के लिए फायदेमंद नहीं है।

एंडोर्समेंट्स नो-हाउ: सेलिब्रिटी एंड सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स के लिए दिशा-निर्देश

- **उन सभी उत्पादों या ब्रांड्स के मौद्रिक या भौतिक लाभों का प्रकटीकरण अनिवार्य है,** जिन्हें इन्फ्लुएंसर्स अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से प्रचारित कर रहे हैं।
- **जुर्माना:** अनिवार्य प्रकटीकरण में विफल रहने पर **50 लाख रुपये तक का जुर्माना** लगाया जा सकता है।
- **स्पष्ट सूचना:** एंडोर्समेंट में प्रकटीकरण को सरल और स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया जाना चाहिए। साथ ही, 'विज्ञापन', 'प्रायोजित' या 'पेड प्रमोशन' जैसे शब्दों का उपयोग सभी प्रकार के एंडोर्समेंट के लिए किया जाना चाहिए।

- **उत्तरदायित्वपूर्ण तरीके से विज्ञापन करना:** मशहूर हस्तियों और सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स को किसी भी ऐसे उत्पाद या सेवा का समर्थन नहीं करना चाहिए, जिनकी उन्होंने यथोचित जांच-पड़ताल न की हो या जिनका उन्होंने व्यक्तिगत रूप से उपयोग न किया हो।

संभावित समाधानों के साथ आगे की राह

- **दिशा-निर्देशों का कार्यान्वयन: "एंडोर्समेंट्स नो-हाउ!"** अर्थात् सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर मशहूर हस्तियों, प्रभावशाली लोगों और वर्चुअल इन्फ्लुएंसर्स द्वारा इसका अनुसरण किया जाना चाहिए।
- **सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स के लिए आचार संहिता:** इसके तहत उन पर उत्पादों की प्रामाणिकता के आकलन संबंधी अनिवार्यता तथा उन पर अपने प्रशंसकों के लिए सुरक्षित और लाभकारी उत्पादों के प्रचार-प्रसार जैसी शर्तों को लागू किया जाना चाहिए।
- **सेलिब्रिटी या इन्फ्लुएंसर समूहों द्वारा स्व-विनियमन:** इन्फ्लुएंसर मार्केटिंग इंडस्ट्री को स्वयं दिशा-निर्देशों और सर्वोत्तम प्रथाओं के एक सेट के साथ आगे आना चाहिए। ऐसे दिशा-निर्देशों और सर्वोत्तम प्रथाओं का अनुसरण कर इन्फ्लुएंसर यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि उनके विज्ञापन/ एंडोर्समेंट नैतिक और पारदर्शी हैं।
  - उदाहरण के लिए- पी. गोपीचंद ने कार्बोनेटेड सॉफ्ट ड्रिंक के हानिकारक स्वास्थ्य प्रभावों के चलते ऐसे उत्पादों का विज्ञापन न करने का निर्णय लिया है।
- **आयु आधारित प्रतिबंध और पैरेंटल कंट्रोल्स को लागू करना:** इस तरह के उपाय से बच्चों या किशोरों पर भ्रामक विज्ञापनों के पड़ने वाले प्रभाव को रोका जा सकता है।
- **यथोचित सरकारी जांच-पड़ताल प्रणाली का निर्माण करना:** उत्पादों या सेवाओं से संबंधित दावों की लगातार जांच करने के लिए सरकार एक समिति या फोरम का गठन कर सकती है। यह सेलिब्रिटीज पर यथोचित जांच-पड़ताल के दायित्व को निर्धारित करेगा और **ब्रांड के प्रति उत्तरदायित्व की भावना पैदा** करेगा।

> आपको क्या करने का अधिकार है और क्या करना सही है, दोनों के बीच की दुविधा का समाधान निकालना ही नैतिकता है।
>
> — पॉटर स्टीवर्ट

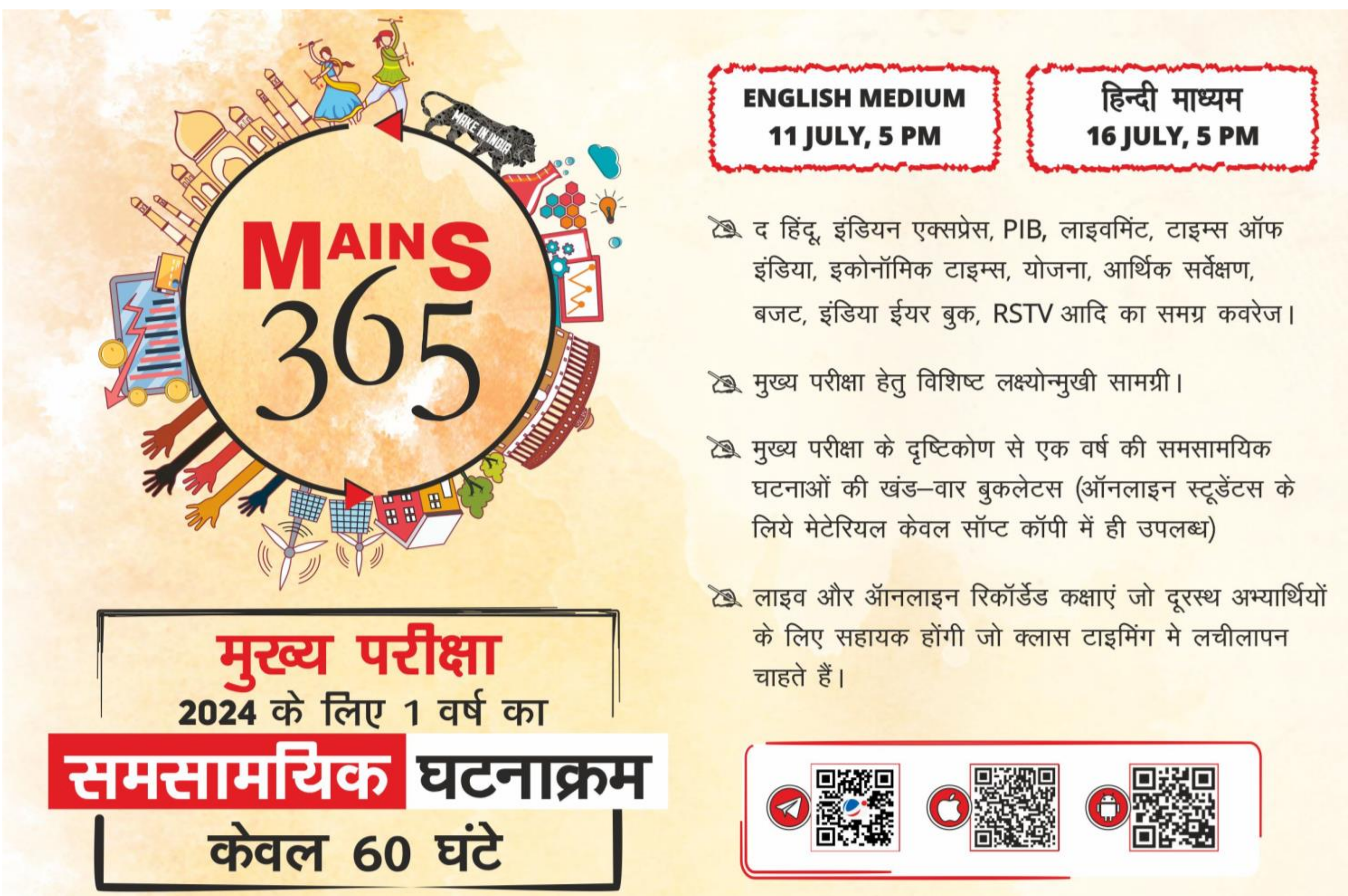

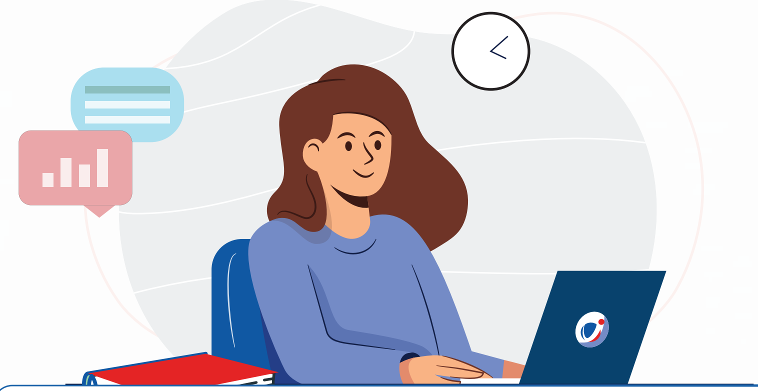

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

CSAT में महारत: UPSC प्रीलिम्स के लिए एक रणनीतिक रोडमैप

UPSC प्रीलिम्स सिविल सेवा परीक्षा का पहला एवं अत्यधिक प्रतिस्पर्धी चरण है। प्रीलिम्स एग्जाम में ऑब्जेक्टिव प्रकार के दो पेपर होते हैं: सामान्य अध्ययन (GS) और सिविल सर्विसेज एप्टीट्यूड टेस्ट (CSAT)। ये दोनों पेपर अभ्यर्थियों के ज्ञान, समझ और योग्यता का आकलन करते हैं।

पिछले कुछ सालों में CSAT पेपर के कठिन हो जाने से इसमें 33% का क्वालीफाइंग स्कोर प्राप्त करना भी कई अभ्यर्थियों के लिए चुनौतीपूर्ण हो गया है। अतः इस पेपर को क्वालीफाइ करने के लिए अभ्यर्थियों को टाइम मैनेजमेंट के साथ-साथ CSAT में कठिनाई के बढ़ते स्तर के साथ सामंजस्य बिठाना और GS पेपर के साथ संतुलन बनाए रखना बहुत जरूरी है। साथ ही, इसमें गुणवत्तापूर्ण प्रैक्टिस मटेरियल से भी काफी मदद मिलती है। ये सारी बातें एक सुनियोजित रणनीति के महत्त्व को रेखांकित करती हैं।

इंस्टैंट पर्सनलाइज्ड मेंटरिंग के लिए **QR कोड को स्कैन करें**

CSAT की तैयारी के लिए रणनीतिक रोडमैप

शुरुआत में स्व-मूल्यांकन: सर्वप्रथम पिछले वर्ष के CSAT के पेपर को हल करके हमें अपना मूल्यांकन करना चाहिए। इससे हमें अपने मजबूत एवं कमजोर पक्षों की पहचान हो सकेगी और हम उसी के अनुरूप अपनी तैयारी में सुधार कर सकेंगें।

स्टडी प्लान: अधिकतम अंक प्राप्त कर सकने वाले टॉपिक पर फोकस करते हुए एवं विश्वसनीय अध्ययन स्रोतों का चयन कर, एक व्यवस्थित स्टडी प्लान तैयार करें।

रेगुलर प्रैक्टिस एवं पोस्ट-टेस्ट एनालिसिस: पिछले वर्ष के पेपर एवं मॉक टेस्ट को हल करके तथा उनका विश्लेषण करके हम एग्जाम के पैटर्न एवं किस प्रकार के प्रश्न पूछे जा रहे हैं, इससे परिचित हो सकते हैं। इस अप्रोच से CSAT के व्यापक सिलेबस को प्रभावी ढंग से कवर करने के लिए एक बेहतर रणनीति तैयार करने में मदद मिलेगी।

व्यक्तिगत मेंटरशिप प्राप्त करें: CSAT की बेहतर तैयारी के लिए अपने अनुरूप रणनीति विकसित करने हेतु मेंटर से जुड़ें। इससे आप अपने स्ट्रेस को दूर कर सकेंगे और साथ ही फोकस्ड एवं संतुलित तैयारी कर पाएंगे।

रीजनिंग: क्लॉक, कैलेंडर, सीरीज एंड प्रोग्रेशन, डायरेक्शन, ब्लड-रिलेशन, कोडिंग-डिकोडिंग एवं सिलोगिज़्म जैसे विभिन्न प्रकार टॉपिक के प्रश्नों का अभ्यास करके अपने तार्किक और विश्लेषणात्मक क्षमताओं को बेहतर बनाएं।

एग्जाम के पैटर्न को समझने एवं प्रश्नों को हल करने के लिए स्टेप-बाय-स्टेप अप्रोच को विकासित करने पर ध्यान केंद्रित करें।

गणित एवं बेसिक न्यूमेरेसी: बेसिक कॉन्सेप्ट के रिवीजन एवं रेगुलर प्रैक्टिस के जरिए मूलभूत गणितीय अवधारणाओं पर अपनी पकड़ को मजबूत करें।

तेजी से कैल्कुलेशन करने के लिए शॉर्टकट और मेंटल मैथ टेक्निक का उपयोग करें।

रीडिंग कॉम्प्रिहेंशन: नियमित रूप से अखबार पढ़कर अपनी पढ़ने की गति और समझ में सुधार करें। समझ बढ़ाने के लिए पैराग्राफ को संक्षेप में लिखने का अभ्यास करें और उसमें निहित मुख्य विचारों का पता लगाएं।

VisionIAS के CSAT क्लासरूम प्रोग्राम से जुड़कर अपनी CSAT की तैयारी को मजबूत बनाएं। इस कोर्स को अभ्यर्थियों में बेसिक कॉन्सेप्ट विकसित करने और उनकी प्रॉब्लम-सॉल्विंग क्षमताओं एवं क्रिटिकल थिंकिंग को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इस कोर्स की मुख्य विशेषताएं हैं- ऑफ़लाइन/ ऑनलाइन और रिकॉर्ड की गई कक्षाएं, वन-टू-वन मेंटरिंग सपोर्ट और ट्यूटोरियल्स के जरिए नियमित प्रैक्टिस। यह आपको CSAT में महारत हासिल करने की राह पर ले जाएगा।

रजिस्टर करने और ब्रोशर डाउनलोड करने के लिए **QR कोड को स्कैन करें**

हमारे ऑल इंडिया CSAT टेस्ट सीरीज एवं मेंटरिंग प्रोग्राम के साथ अपनी तैयारी को और बेहतर बनाएं, जिसमें शामिल हैं:

- UPSC CSAT के सिलेबस का विस्तार से कवरेज
- वन-टू-वन मेंटरिंग
- फ्लेक्सिबल टेस्ट शेड्यूल और इनोवेटिव असेसमेंट सिस्टम
- प्रत्येक टेस्ट पेपर की विस्तार से व्याख्या
- लाइव ऑनलाइन/ ऑफ़लाइन टेस्ट डिस्कशन एवं पोस्ट टेस्ट एनालिसिस

VisionIAS से जुड़कर सिविल सेवाओं में शामिल होने की अपनी यात्रा शुरू करें, जहां हमारी विशेषज्ञता और सपोर्ट सिस्टम से आपके सपने पूरे हो सकते हैं।

अहमदाबाद | बैंगलोर | भोपाल | चंडीगढ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची

5. नैतिकता और व्यवसाय (Ethics and Business)

5.1. कम्पैशनेट कैपिटलिज्म या परोपकारी पूंजीवाद (Compassionate Capitalism)

परिचय

हाल ही में, इंफोसिस कंपनी के संस्थापक नारायण मूर्ति ने भारतीय कंपनियों में शीर्ष अधिकारियों और निचले स्तर के कर्मचारियों के बीच मौजूद आय के स्तर में असमानता को लेकर चिंता जताई है। साथ ही, उन्होंने इस समस्या का समाधान करने के लिए कम्पैशनेट कैपिटलिज्म को अपनाने का आह्वान किया है।

कम्पैशनेट कैपिटलिज्म या परोपकारी पूंजीवाद के बारे में

- **पूंजीवाद** एक ऐसी आर्थिक प्रणाली है जहां **निजी अभिकर्ता अपने हितों के अनुरूप अपनी संपत्ति का स्वामित्व धारण करते हैं और उस पर नियंत्रण** रखते हैं। अर्थव्यवस्था के इस मॉडल में मांग और आपूर्ति द्वारा स्वतंत्र रूप से बाजार में कीमतों का निर्धारण समाज के सर्वोत्तम हितों की पूर्ति के लिए किया जाता है।
    - **एडम स्मिथ** की पुस्तक "द वेल्थ ऑफ नेशंस" में **पूंजीवादी आर्थिक मॉडल की नींव रखी** गई थी।
- **कम्पैशनेट कैपिटलिज्म** का उद्देश्य **पूंजीवादी मॉडल में समाजवादी विचारों का समावेश करते हुए धन का न्यायसंगत वितरण सुनिश्चित करना** है।
    - कम्पैशनेट कैपिटलिज्म **एडम स्मिथ के आर्थिक व्यक्तिवाद** को **कार्ल मार्क्स के समाजवादी प्रतिमानों के साथ एकीकृत** करता है।
    - यह साम्यवाद के **न्यायसंगत धन वितरण** की अवधारणा को **काम, अवसर और उचित आर्थिक मुआवजे के सिद्धांतों** के साथ **जोड़ता** है।

"प्रत्येक व्यक्ति से उसकी क्षमता के अनुसार योगदान करने की अपेक्षा की जाएगी और प्रत्येक व्यक्ति को उसकी आवश्यकताओं के अनुसार वस्तुओं और सेवाओं तक पहुंच प्राप्त होगी।"

— कार्ल मार्क्स

कम्पैशनेट कैपिटलिज्म से जुड़ी नैतिक दुविधाएं

- **कर्मचारियों का कल्याण बनाम लाभ को अधिकतम करना:** उचित वेतन, कार्य के उचित घंटे तथा अच्छी कार्य दशाएं उपलब्ध कराने से परिचालन लागत बढ़ सकती है, जिससे संभावित रूप से लाभ कम हो सकता है।
- **उपभोक्ताओं का हित बनाम लाभ-संचालित उत्पाद:** उच्च गुणवत्ता वाले, सुरक्षित उत्पादों का उत्पादन करने से लागत बढ़ सकती है, जिससे लाभ मार्जिन कम हो सकता है।
- **पर्यावरणीय जिम्मेदारी बनाम लागत दक्षता:** व्यवसायों को प्रतिस्पर्धी मूल्य निर्धारण और लाभप्रदता बनाए रखने के साथ-साथ पर्यावरण के अनुकूल प्रणालियों को अपनाने के बीच संघर्ष करना पड़ सकता है।
- **उच्च आय में प्रतिभा को आकर्षित करना बनाम आय में समानता:** प्रतिस्पर्धी वेतन पैकेज प्रदान करने के पीछे शीर्ष प्रतिभा को आकर्षित करने का तर्क दिया जाता है, भले ही इससे उच्चतम और न्यूनतम आय वालों कर्मचारियों के बीच आय का बड़ा अंतर पैदा हो जाए।
- **सामुदायिक जुड़ाव बनाम शेयरधारक रिटर्न:** सामुदायिक परियोजनाओं तथा सामाजिक विषयों में निवेश करने से कंपनी की आमजन के मन में सामाजिक रूप से एक जिम्मेदार कंपनी की छवि बन सकती है। यद्यपि, इससे शेयरधारकों को त्वरित वित्तीय लाभ नहीं पाता है।

कम्पैशनेट कैपिटलिज्म के दर्शन में नीतिशास्त्र के विचारकों का योगदान

- **बौद्ध धर्म का प्रतीत्यसमुत्पाद:** यह **आश्रित उत्पत्ति (प्रतीत्यसमुत्पाद)** की अवधारणा पर आधारित है। इस दृष्टिकोण के तहत यह माना जाता है कि **व्यक्ति** एक-दूसरे पर तथा पृथ्वी पर **अन्योन्याश्रित** है।
    - यह **न्यूनतम नुकसान** के साथ एक **संधारणीय विश्व में साझा समृद्धि को बढ़ावा** देता है।

- **इमैनुअल कांट का निरपेक्ष आदेश (Categorical Imperative) का सिद्धांत:** कांट ने प्रत्येक व्यक्ति को केवल साधन के रूप में नहीं, बल्कि अपने आप में एक साध्य के रूप में मानने पर जोर दिया है। उनके नैतिक कानून के अनुसार, कोई कार्य नैतिक नियमों के प्रति कर्तव्य बोध से प्रेरित होकर करना चाहिए, न कि केवल अपने स्वार्थ की पूर्ति करने के लिए।
- **गांधीवादी विचार:** गांधीजी के सत्य, **अहिंसा और सामाजिक-आर्थिक आदर्शों** में सादा जीवन, सर्वोदय और ट्रस्टीशिप का सिद्धांत शामिल था।
- **अमर्त्य सेन की क्षमता दृष्टिकोण (Capability Approach):** क्षमता दृष्टिकोण **लोगों की क्षमताओं** और स्वतंत्रता के आधार पर व्यक्तिगत कल्याण और सामाजिक नीतियों का मूल्यांकन करता है, न कि केवल मौद्रिक संवृद्धि के आधार पर।
  - यह निवल लाभ-आधारित दृष्टिकोण का विकल्प प्रदान करता है।

वे प्रथाएं जो पूंजीवाद को विभिन्न हितधारकों के प्रति उदार बनाती हैं

हितधारक	प्रथाएं
कर्मचारी	• **खुली और लचीली कार्य संस्कृतियां:** ऐसी कार्य संस्कृति अपनानी चाहिए, जो सहयोग, नवाचार और रचनात्मकता को महत्त्व देती हो तथा श्रमिकों की कार्य क्षमता बढ़ाने के लिए उनके कौशल विकास में निवेश करती हो। • **संवृद्धि के लिए समान अवसर:** उदाहरण के लिए- इंफोसिस की **कर्मचारी स्टॉक स्वामित्व योजना (ESOP)** में कर्मचारियों को कंपनी के शेयर देकर धन का लोकतंत्रीकरण किया गया है। • **वित्तीय सुरक्षा और धन का उचित पुनर्वितरण:** उदाहरण के लिए- टाटा स्टील ने कोविड-19 महामारी में मरने वाले अपने कर्मचारियों के परिवारों को जब तक मृतक कर्मचारी की आयु 60 वर्ष नहीं हो जाती तब तक वेतन का भुगतान करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की है। • **उदार नेतृत्व को बढ़ावा देना:** ऐसा सहानुभूति, खुलापन और संचार, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य, समावेशिता, सत्यनिष्ठा जैसे मूल्यों को अपनाकर किया जा सकता है।
पर्यावरण	• **पर्यावरण लेखांकन:** व्यवसाय के संचालन की लागत के अंतर्गत पर्यावरणीय और पारिस्थितिक क्षति का लेखा-जोखा रखना चाहिए। ○ उदाहरण के लिए- 2012 में सेबी (SEBI) ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट में पर्यावरण, सामाजिक और गवर्नेंस (ESG)[10] प्रदर्शन का खुलासा करने के लिए भारतीय स्टॉक एक्सचेंजों में सूचीबद्ध कंपनियों के लिए ESG प्रकटीकरण पर मार्गदर्शन-पत्र जारी किया था। • **चक्रीय आर्थिक मॉडल को अपनाना:** ITC ने यह मॉडल अपने पर्यावरणीय फुटप्रिंट को कम करने, दक्षता को बढ़ाने और लागत को कम करने के लिए अपनाया है। • **उपभोक्तावाद को कम करना: 'लिमिट्स टू ग्रोथ सिद्धांत** (क्लब ऑफ रोम द्वारा प्रस्तावित)' के अनुसार, मनुष्य पृथ्वी पर अनिश्चित काल तक अपना अस्तित्व बचाए रख सकते हैं यदि वे खुद पर और भौतिक वस्तुओं के उत्पादन पर सीमाएं लगाते हैं।
समाज	• **कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR):** CSR के तहत उद्यमी अपने व्यवसाय के संचालन में सामाजिक और पर्यावरणीय चिंताओं को दूर करने के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त करते हैं। • **विकास से उत्पन्न धन का पुनर्वितरण:** उदाहरण के लिए- **प्रधान मंत्री खनिज क्षेत्र कल्याण योजना (PMKKKY)** में यह प्रावधान किया गया है कि खनन क्षेत्रक के विकास का लाभ खनन के कारण प्रभावित हुए लोगों और क्षेत्रों तक पहुंचना चाहिए। • **सामाजिक जरूरतों को पूरा करना:** उदाहरण के लिए- भारत में बुजुर्गों की मदद के लिए शुरू की गई **'गुडफेलो'** पहल भारत में वृद्ध होती आबादी के लिए फायदेमंद है।

5.2. खाद्य सेवा और सुरक्षा की नैतिकता (Ethics of Food Service and Safety)

प्रस्तावना

हाल ही में, हांगकांग, सिंगापुर और मालदीव में MDH और एवरेस्ट के कई मसालों में **कार्सिनोजेनिक अर्थात् कैंसरकारी कीटनाशक एथिलीन ऑक्साइड** पाए गए। यह भी पाया गया कि **नेस्ले इंडिया** भारत में **शिशुओं को दिए जाने वाले दूध में चीनी** का मिश्रण करता है, लेकिन यूरोप में नहीं। ये उदाहरण खाद्य उद्योग में अपर्याप्त मानकीकरण और कंपनियों की ओर से नैतिक पहलूओं की अनदेखी जैसे मुद्दों को उजागर करते हैं।

---

[10] Environment, Social and Governance

© Vision IAS

हितधारक और उनकी भूमिका/ हित	
हितधारक	भूमिका/ हित
उपभोक्ता	• स्वास्थ्य और कल्याण (अधिक वजन, मोटापा और NCDs) • खाद्य सुरक्षा, खाद्य कीमतें और खाद्य संरक्षण • खाद्य सेवाओं में समानता, सामाजिक न्याय और निष्पक्षता
कंपनियां/ व्यवसाय/ लघु-स्तरीय उत्पादक/ प्रोसेसर	• भोजन की गुणवत्ता और सुरक्षा, • लागत दक्षता, लाभ और संधारणीयता • ग्राहकों की संतुष्टि, विश्वास और निष्ठा • सामाजिक उत्तरदायित्व और सामुदायिक सहभागिता • प्रतिष्ठा
सरकार/ नियामक	• सार्वजनिक नीति एवं विनियमन • यह सुनिश्चित करना कि परोसा गया भोजन उच्च गुणवत्ता वाला तथा पौष्टिक हो और सार्वजनिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा में योगदान दे।
सोसायटी/ NGO/ अंतर्राष्ट्रीय संगठन	• संधारणीय खाद्य उत्पादन और खपत • यह सुनिश्चित करना कि खाद्य आपूर्ति श्रृंखला में नैतिक प्रथाओं का पालन किया जाता हो • भोजन की वहनीयता और पहुंच सुनिश्चित करना • विनियामक अनुपालन और समर्थन

खाद्य नैतिकता (Food Ethics) क्या है?

खाद्य नैतिकता **खाद्य उत्पादन और उपभोग की नैतिकता** से संबंधित है। खाद्य सेवा की नैतिकता में ऐसे नैतिक सिद्धांत और मानक शामिल हैं जो खाद्य सेवा उद्योग और खाद्य मूल्य श्रृंखला में अपनाए जाने वाले आचरण हेतु मार्गदर्शन करते हैं।

खाद्य सेवा नैतिकता के प्रमुख सिद्धांत

- **न्याय: सामाजिक न्याय** के दृष्टिकोण से, खाद्य सुरक्षा की नैतिकता में खाद्य प्रदाताओं के साथ-साथ उपभोक्ताओं के लिए भी न्याय शामिल है।
  - **खाद्य प्रदाताओं के लिए न्याय:** खाद्य सेवा कर्मियों को अक्सर कम वेतन, खाद्य असुरक्षा, निम्न जीवन स्तर जैसे मुद्दों का सामना करना पड़ता है।
  - **उपभोक्ताओं के लिए न्याय:** उपभोक्ता के दृष्टिकोण से सुरक्षित और पौष्टिक भोजन तक पहुंच, सुरक्षा और वहनीयता ऐसे महत्वपूर्ण मुद्दे हैं, जिन्हें अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है।
- **स्वायत्तता (Autonomy):** इसे निम्नलिखित बिंदुओं से समझा जा सकता है:
  - खाद्य उत्पादन और वितरण के तरीके को चुनने की स्वतंत्रता (आपूर्ति श्रृंखलाओं में स्वायत्तता) रखना,
  - साथ ही, उपभोक्ताओं को अपने निर्णय लेने की क्षमता (लेबल के माध्यम से पारदर्शिता) का सम्मान करना।
- **गैर-दुर्भावना (Non-maleficence):** खाद्य सुरक्षा के संदर्भ में, गैर-दुर्भावना में शामिल हैं-
  - संदूषण और खाद्य जनित बीमारियों को रोकने के लिए कदम उठाना,
  - सुरक्षा संबंधी चिंताओं को पहचान करते हुए उन्हें दूर करना,
- **जवाबदेही और पारदर्शिता:** इसमें खाद्य सुरक्षा की जिम्मेदारी लेना, ग्राहकों से मिले फीडबैक का समाधान करना और हितधारकों के साथ संचार करना शामिल हैं।

खाद्य सेवा और सुरक्षा में शामिल नैतिक दुविधाएं

- **सुरक्षा की जिम्मेदारी सौंपना:** खाद्य जनित रोगों और प्रकोप को रोकने तथा नियंत्रित करने की जिम्मेदारी किसे लेनी चाहिए?
  - WHO के अनुसार, असुरक्षित खाद्य पदार्थों से हर साल 600 मिलियन लोग बीमार पड़ते हैं और 4,20,000 लोगों की मृत्यु हो जाती है।

- **वित्तीय बाधाएं बनाम खाद्य सुरक्षा:** विशेष रूप से छोटे पैमाने के उत्पादकों और प्रसंस्करणकर्ताओं के समक्ष यह सवाल उठता है कि **खाद्य सुरक्षा उपायों की लागत तथा लाभों को कैसे संतुलित किया जाए** और साथ ही खाद्य सुरक्षा मानकों का अनुपालन कैसे किया जाए।
- **अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग विकल्प:** अलग-अलग स्वाद या रुचियों वाले उपभोक्ताओं की **स्वायत्तता और प्राथमिकताओं का सम्मान कैसे किया जाए।**
- **वास्तविक हितधारकों की रक्षा करना:** सार्वजनिक हित या जवाबदेही से समझौता किए बिना, खाद्य जनित घटनाओं में शामिल **व्यक्तियों या व्यवसायों की निजता और गोपनीयता की रक्षा करना।**
- **सुरक्षा मानकों को सार्वभौमिक रूप से लागू करना:** यह कैसे सुनिश्चित किया जाए कि **खाद्य सेवाएं और सुरक्षा उपाय निष्पक्ष तथा न्यायसंगत हों** एवं सामाजिक आर्थिक स्थिति, संस्कृति या भौगोलिक स्थिति के आधार पर कुछ समूहों के खिलाफ भेदभाव न किया जाए। यह भी एक अन्य महत्वपूर्ण नैतिक मुद्दा है।

आगे की राह

- **उपभोक्ताओं को प्रेरित करना:** इसके तहत निर्णय या "चॉइस आर्किटेक्चर" वाले परिवेश (**उदाहरण के लिए- कैफेटेरिया, रेस्तरां मेनू, आदि में विकल्पों को दर्शाना**) में छोटे बदलाव किए जा सकते हैं। ये बदलाव व्यक्तियों को ऐसे विकल्प चुनने में मदद करते हैं, जिन्हें लाभकारी माना जाता है, जैसे- **ईट राइट इंडिया** अभियान।
- **हितधारकों का दृष्टिकोण:** पर्यावरणविदों, उपभोक्ताओं और पशु उद्योगों सहित अन्य हितधारकों के दृष्टिकोण नैतिक निर्णय में महत्वपूर्ण होते हैं।
- **खाद्य सुरक्षा प्रशिक्षण और शिक्षा:** खाद्य संदूषण और खाद्य जनित बीमारियों के प्रकोप को रोकने के लिए खाद्य सेवा से जुड़े प्रतिष्ठानों हेतु खाद्य सुरक्षा से संबंधित प्रशिक्षण तथा शिक्षा महत्वपूर्ण है।

> **"अपने भोजन को अपनी औषधि बनाओ, और अपनी औषधि को अपना भोजन।"**
>
> — हिप्पोक्रेट्स

5.3. नैतिकता और उद्यमिता (Ethics and Entrepreneurship)

परिचय

हाल ही में, एक ज्यूरी ने **'40 अंडर फोर्टी'** के 10वें संस्करण के प्रकाशन के लिए कॉर्पोरेट इंडिया के सबसे प्रतिभाशाली युवा लीडर्स को सम्मानित करने हेतु एक बैठक का आयोजन किया। ज्यूरी के एक सदस्य ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कुछ युवा उद्यमियों ने न केवल पेशेवर और व्यावसायिक कौशल का प्रदर्शन किया है, बल्कि समाज की भलाई के लिए भी कुछ कदम उठाए हैं।

हितधारक और उनके हित	
हितधारक	**भूमिका/ हित**
उद्यमी	• एक सफल **व्यवसायिक मॉडल स्थापित करना।** • कर्मचारियों, नियामक निकायों आदि से **सहयोग की अपेक्षा** करता है।
ग्राहक	• उत्पाद और सेवाएं उचित कीमत पर उपलब्ध होनी चाहिए। साथ ही, ये पर्यावरण के अनुकूल होनी चाहिए। • उद्यमियों से **नैतिक आचरण की अपेक्षा** की जाती है।
सरकार/ नियामक प्राधिकरण	• उद्यमियों के लिए अनुकूल माहौल बनाना ताकि वे **सफल व्यवसाय मॉडल को अपना सकें।** • उद्यमियों को देश के कानून का **पालन** करना चाहिए।
बिजनेस पार्टनर/ डीलर	• उद्यमियों द्वारा हस्ताक्षर किए गए सौदों या समझौतों का उनके द्वारा **अक्षरशः लागू** किया जाना चाहिए। • कंपनी के दिन-प्रतिदिन के कार्यों में **पारदर्शिता** और जवाबदेही सुनिश्चित की जानी चाहिए।

 © Vision IAS

निवेशक	• वे अपने **निवेश से उच्च रिटर्न** प्राप्त करने की उम्मीद करते हैं। वे ऐसे उद्यमियों को बढ़ावा देते हैं जो अपने काम के प्रति ईमानदार और जवाबदेह होते हैं। • वे उम्मीद करते हैं कि उद्यमी एक सफल व्यवसाय मॉडल स्थापित करेंगे।

उद्यमियों के सामने आने वाले नैतिक मुद्दे

- **हितों का टकराव:** उद्यमियों को अक्सर कंपनी की लाभप्रदता बनाए रखने और सामाजिक प्रभाव के बीच टकराव का सामना करना पड़ता है। उदाहरण के लिए- एक महिला सहकारी समिति द्वारा संचालित लिज्जत पापड़ ब्रांड को मांग के अनुसार उत्पादन बढ़ाने के लिए तीव्र मशीनीकरण करने या हजारों महिलाओं को रोजगार प्रदान करने के लिए अपने श्रम-आधारित मॉडल को जारी रखने के विकल्पों में से चुनना था।
- **पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी:** उद्यमियों द्वारा पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी को अभी भी प्राथमिकता में नहीं रखा जाता है। उदाहरण के लिए- 2019 में, **रिलायंस इंडस्ट्रीज** पर पारिस्थितिक-तंत्र को नुकसान पहुंचाने के लिए जुर्माना लगाया गया था।
- **गलत कार्य पद्धतियां अपनाना:** कभी-कभी उद्यमी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए गलत कार्य पद्धतियां अपनाते हैं, जैसे- निवेश आकर्षित करने के लिए व्यवसाय के वित्तीय विवरण में हेरफेर करना, उदाहरण के लिए- **सत्यम घोटाला 2009** (ऑडिट धोखाधड़ी)।
  - उद्यमी कभी-कभी **बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR),** जैसे- कॉपीराइट, पेटेंट आदि से संबंधित नियमों का उल्लंघन करते हैं।
- **कार्य संस्कृति/ कर्मचारियों के साथ उचित व्यवहार:** समय पर कार्य पूरा करने के लिए कई बार मैनेजर्स कर्मचारियों से अतिरिक्त काम करवाते हैं। इससे कर्मचारियों में असंतोष उत्पन्न होता है।

नैतिक उद्यमिता के लिए प्रमुख मार्गदर्शक सिद्धांत	
उपयोगितावादी नैतिकता	ऐसे कार्यों का समर्थन करना, जो खुशी या आनंद को बढ़ावा दें और ऐसे कार्यों का विरोध करना, जो दुख या हानि का कारण बनें।
कर्तव्यशास्त्र की नैतिकता	इमैनुअल कांट की नैतिकता के सिद्धांत के अनुसार, तर्कसंगत मनुष्यों को परिणाम की परवाह किए बिना अपने **नैतिक दायित्वों का पूरी निष्ठा से पालन करना चाहिए।**
पुण्य नैतिकता	इस बात पर जोर दिया गया है कि ईमानदारी, साहस, न्याय, दान आदि गुणों का पालन करने से व्यक्ति एक **स्वीकार्य** और **धार्मिक** जीवन जीता है।
हितधारक सिद्धांत	इस सिद्धांत के तहत यह तर्क दिया जाता है कि किसी फर्म को केवल शेयरधारकों के लिए ही नहीं, बल्कि सभी हितधारकों के लिए मूल्य सृजित करना चाहिए।

उद्यमशीलता में नैतिक सिद्धांतों को समायोजित करने के तरीके

- **लाभ और उद्देश्य में संतुलन: सामाजिक उद्यमिता** इस दृष्टिकोण का एक अच्छा उदाहरण है। इसमें उचित वित्तीय लाभ अर्जित करते हुए सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास किया जाता है।
  - उदाहरण के लिए- **ई-हेल्थपॉइंट उद्यम,** ग्रामीण या सुदूर क्षेत्रों में रहने वाले समुदायों को प्राथमिक स्वास्थ्य परामर्श प्रदान करता है।
- **हितधारकों की सहभागिता/ मुक्त संचार को बढ़ावा देना:** उद्यमियों को अपने कर्मचारियों, ग्राहकों आदि को किसी भी **नैतिक चिंता** या **उल्लंघन** के मुद्दे पर आवाज उठाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
  - **उदाहरण के लिए- टाटा स्टील** ने एक प्रभावी हितधारक सहभागिता प्रक्रिया विकसित की है।
- **कच्चे माल की नैतिक सोर्सिंग:** इससे इनपुट के स्तर पर शोषणकारी और अनुचित व्यापार प्रथाओं को रोकने में मदद मिलेगी। उदाहरण के लिए- प्रसिद्ध आइसक्रीम निर्माता **बेन एंड जेरी** की निर्माण सामग्री के नैतिक स्रोत के प्रति लंबे समय से प्रतिबद्धता है।
- **उदाहरण के जरिए नेतृत्व प्रदान करना: उदाहरण के लिए-** 2020 में, विप्रो लिमिटेड ने सहयोगी फर्मों के साथ मिलकर कोविड-19 के प्रकोप से निपटने के लिए 1,125 करोड़ रुपये का योगदान दिया था।

"कंपनियों को अपने हितों से परे सोचते हुए उन लोगों के हितों पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है जो उनके ग्राहक हैं।"

— रतन टाटा

5.4. श्रम नैतिकता और लंबे कार्य घंटे (Labour Ethics and Long Work Hours)

परिचय

एक आईटी कंपनी के सह-संस्थापक नारायण मूर्ति ने युवाओं को सप्ताह में 70 घंटे काम करने का सुझाव दिया। इससे श्रम से जुड़ी नैतिकता को लेकर फिर से बहस शुरू हो गई है। श्रम से जुड़ी नैतिकता में श्रमिकों के साथ किये जाने वाले व्यवहार से जुड़े कई तरह के विषयों पर सही और गलत का निर्धारण करने का मुद्दा शामिल है।

हितधारक और उनके हित	
हितधारक	हित
कर्मचारी	• **लाभकारी रोजगार,** अच्छी कार्य दशाएं और **कार्य-जीवन संतुलन।**
नियोक्ता/ उद्योगपति	• **संगठनात्मक दक्षता**, लाभ और सतत मानव संसाधन विकास को बढ़ावा देना।
प्रबंधन	• विशेषकर स्वास्थ्य देखभाल और कानून प्रवर्तन जैसे क्षेत्रकों में लंबे समय तक काम करने को **पेशेवर जिम्मेदारी** के रूप में देखा जाता है।
निवेशक	• कम समयावधि में अपने निवेश पर अधिकतम रिटर्न प्राप्त करना। • **नैतिक और सामाजिक रूप से जिम्मेदार व्यवसायों** में निवेश करना।
श्रम संगठन	• श्रमिकों के लिए सुरक्षित कामकाजी परिस्थितियों और उचित कार्य घंटों के साथ-साथ उनके **बेहतर अधिकारों** के लिए बातचीत करना।
श्रम नियामक निकाय	• **श्रम कानूनों,** नियमों, विनियमों और मानकों **को लागू करना** तथा श्रमिकों के कल्याण को बढ़ावा देना।
सरकार	• सर्वांगीण मानव पूंजी विकास के साथ-साथ **आर्थिक विकास** को बढ़ावा देना।

ओवरटाइम और लंबे कार्य घंटों के विरुद्ध नैतिक चिंताएं:

- **गैर-दुर्भावनापूर्णता के नैतिक सिद्धांत[11] का उल्लंघन**: इस सिद्धांत के अनुसार इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि दूसरों को नुकसान न पहुंचे।
    - लंबे समय तक काम करने से थकावट होती है जिसके परिणामस्वरूप **चिकित्सीय लापरवाही और चेरनोबिल, अंतरिक्ष शटल चैलेंजर दुर्घटना जैसी आपदाएं घटित** हो सकती हैं।
- **स्वास्थ्य से ऊपर धन को वरीयता देना**: अतिरिक्त ओवरटाइम आय का चयन करना कर्मचारी के **शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य** से समझौता करता है। जैसे निवेश बैंकिंग में जॉब बर्नआउट (काम से जुड़ा एक प्रकार का तनाव)।
- **सिद्धांतों के ऊपर लाभ को वरीयता देना:** लंबे कार्य घंटों का आदेश देना **टिकाऊ कार्य संस्कृति** के विरुद्ध है। टिकाऊ कार्य संस्कृति के अंतर्गत **व्यवसाय श्रमिकों के स्वास्थ्य के प्रति सचेत** रहते हैं।
- **पारिवारिक एवं सामाजिक मूल्यों का क्षरण:** व्यक्तिगत संबंधों और व्यापक सामुदायिक संबंधों के लिए समय न होने के कारण इन मूल्यों का क्षरण होता है।
- **समाजवादी और लैंगिक नैतिकता के विरुद्ध:** लंबे कार्य घंटों के कारण कुछ सीमित श्रम बल वर्ग के लिए रोजगार के अवसर पैदा होते हैं। इसके परिणामस्वरूप **रोजगार का असमान वितरण** होता है।
    - यह **उन महिलाओं के लिए लाभकारी रोजगार के अवसरों को सीमित** करता है जो जिम्मेदारी के दोहरे बोझ के कारण कम घंटे की शिफ्ट में काम करना पसंद करती हैं।

आगे की राह

- **सरकार: काम के घंटों को विनियमित** करने वाले श्रम कानूनों को उचित तरीके से लागू किया जाना चाहिए, उदाहरण के लिए- फ़ैक्टरी अधिनियम, मोटर परिवहन श्रमिक अधिनियम, 1961
- **व्यवसाय:** बेहतर कार्य संतुष्टि को बढ़ावा देने के लिए **कर्मचारियों के स्वास्थ्य और कल्याण में निवेश करना चाहिए,** जैसे स्वास्थ्य देखभाल बीमा, सवैतनिक अवकाश, मातृत्व/ पितृत्व अवकाश आदि।

[11] Ethical principle of nonmaleficence

© Vision IAS

- **कर्मचारी:** पेशेवर और व्यक्तिगत लक्ष्यों के बीच संतुलन को बढ़ावा देने के लिए **समय का बेहतर प्रबंधन करना चाहिए।**
- **कौशल उन्नयन:** कुशल कार्यबल की कमी को दूर करने के साथ-साथ श्रम के बेहतर विभाजन को बढ़ावा देना चाहिए।
- **टिकाऊ कार्य संस्कृति के लिए** एक नैतिक ढां चे के निर्माण हेतु सरकार, व्यवसाय, श्रमिक संघों जैसे कई हितधारकों के मध्य **सहयोग स्थापित किया जाना** चाहिए।

"मन:शान्ति तभी संभव है जब हमारा अपनी अंतरात्मा के साथ द्वंद्व न हो। हम अपने अस्तित्व को सही ठहराने की कोशिश में आंतरिक विरोध को नजरअंदाज करने के साधन के रूप में अत्यधिक काम करने की प्रवृत्ति अपनाते हैं।"

— जोसेफ पीपर

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

समसामयिकी त्रैमासिक रिवीजन

सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी करने वाले अभ्यर्थियों की **पृष्ठभूमि, आयु, वर्किंग शेड्यूल और पारिवारिक जिम्मेदारियां अलग-अलग होती हैं।**

इसे ध्यान में रखते हुए हमने **समसामयिकी: त्रैमासिक रिवीजन** डॉक्यूमेंट को तैयार किया है। इससे उन अभ्यर्थियों को तैयारी में काफी सहायता मिलेगी, जिनका शेड्यूल अधिक व्यस्त होता है, जिन्हें मासिक समसामयिकी मैगजीन को पढ़ने व रिवीजन करने के लिए कम समय मिलता है और सिलेबस के बारे में बुनियादी एवं थोड़ी बहुत समझ होती है।

त्रैमासिक रिवीजन डॉक्यूमेंट को काफी सावधानीपूर्वक और बारीकी से तैयार किया गया है। इससे आपको **सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी के लिए आवश्यक लर्निंग एवं रिवीजन के लिए मजबूत आधार मिलेगा।**

इस डॉक्यूमेंट में हमने विगत तीन माह की मासिक समसामयिकी मैगजीन से सभी महत्वपूर्ण आर्टिकल्स को कवर किया है। इससे महत्वपूर्ण टॉपिक्स का रिवीजन करने के लिए आपको एक समग्र और सटीक रिसोर्स मिलेगा।

डॉक्यूमेंट को पढ़ने के लिए QR कोड को स्कैन कीजिए

त्रैमासिक रिवीजन डॉक्यूमेंट की कुछ मुख्य विशेषताओं पर एक नज़र

कम समय में रिवीजन करने के लिए: इसे पिछले तीन महीने के करेंट अफेयर्स को कवर करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, ताकि कम समय में भी रिवीजन किया जा सके।

और अधिक जानकारी के लिए अवश्य पढ़ें: इससे आपको करेंट अफेयर्स को स्टैटिक मटेरियल से जोड़कर समझने तथा टॉपिक के बारे में अपनी समझ को और बेहतर बनाने में मदद मिलेगी। इसमें NCERTs सहित बेसिक रीडिंग मटेरियल से संबंधित अध्याय के बारे में बताया गया है।

प्रश्नोत्तरी: हर भाग के अंत में 5 MCQs और मुख्य परीक्षा के लिए प्रैक्टिस हेतु 2 प्रश्न दिए गए हैं। ये प्रश्न आपको अपनी समझ का आकलन करने और प्रमुख अवधारणाओं/तथ्यों को प्रभावी ढंग से याद रखने में मदद करेंगे।

संक्षिप्त पृष्ठभूमि: प्रत्येक आर्टिकल से संबंधित एक संक्षिप्त पृष्ठभूमि दी गई है, जिससे आपको संबंधित आर्टिकल को समझने और उसका विश्लेषण करने के लिए एक मजबूत आधार मिलेगा।

विश्लेषण और महत्वपूर्ण तथ्य: इससे आपको महत्वपूर्ण नज़रिए और अलग-अलग पहलुओं से जुड़ी जानकारी तथा तथ्यों के बारे में पता चलेगा।

स्पष्ट एवं संक्षिप्त जानकारी: इसमें इन्फॉर्मेशन को सुव्यवस्थित तरीके से प्रस्तुत किया गया है, जिससे क्विक और इफेक्टिव रिवीजन में मदद मिलेगी।

हमें पूरी उम्मीद है कि यह त्रैमासिक रिवीजन डॉक्यूमेंट समसामयिकी घटनाक्रमों के लिए काफी फायदेमंद होगा। PT 365 और Mains 365 डाक्यूमेंट्स के साथ-साथ इसे पढ़कर UPSC CSE की तैयारी की राह में आपका आत्मविश्वास काफी बढ़ जाएगा।

स्मार्ट तरीके से तैयारी कीजिए। "त्रैमासिक रिवीजन डॉक्यूमेंट" कुशल, टार्गेटेड और प्रभावी रिवीजन के लिए सबसे बेहतर साथी है। इसकी मदद से अपनी सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी की राह में आगे बढ़िए।

अहमदाबाद | बेंगलूरु | भोपाल | चंडीगढ़ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची

6. नैतिकता और मीडिया (Ethics and Media)

6.1. मीडिया एथिक्स और स्व-नियमन (Media Ethics and Self-Regulation)

परिचय

हाल ही में, सुप्रीम कोर्ट ने **समाचार प्रसारण और डिजिटल मानक प्राधिकरण (NBSA)**[12] द्वारा स्थापित **स्व-नियामक तंत्र की अप्रभाविता** पर चिंता व्यक्त की है। यह मीडिया एथिक्स (नैतिकता) के उल्लंघन में हो रही बढ़ोतरी के मद्देनजर आधुनिक युग में मीडिया द्वारा नैतिकता के अनुपालन संबंधी महत्त्व को उजागर करता है।

हितधारक और उनके हित	
प्रमुख हितधारक	**उनके हित**
मीडिया अभिकर्ता	• मीडिया एथिक्स के माध्यम से प्रत्येक पत्रकारों द्वारा **सत्यनिष्ठा, व्यावसायिकता, गोपनीयता और निष्पक्षता** के सिद्धांतों के अनुपालन को सुनिश्चित किया जाना चाहिए। • **स्व-विनियमन तंत्र के माध्यम से मीडिया की स्वायत्तता सुनिश्चित करना।**
सरकार	• मीडिया एथिक्स जीवन के **सार्वभौमिक सम्मान और विधि के शासन तथा वैधानिकता** इत्यादि जैसे मूल्यों को बढ़ावा देती है और उनका अनुरक्षण करती है।
सामान्य जन	• ऐसी जानकारी प्रदान करके जनता की सेवा करना जो **निष्पक्ष** हो और जो **ज्ञान और तर्क** को बढ़ावा देती हो।
पुलिस	• मीडिया को **पुलिस के साथ सहयोगात्मक रूप से कार्य** करना चाहिए और उन्हें सहायता प्रदान करनी चाहिए। साथ ही, जब अपराधियों को न्याय के कटघरे में लाया जाता है तो मीडिया को इसकी सराहना करनी चाहिए। ○ प्रेस को भी **जनता की आंख और कान के रूप में कार्य करते हुए पुलिस को जवाबदेह बनाने की दिशा में काम करना** चाहिए।

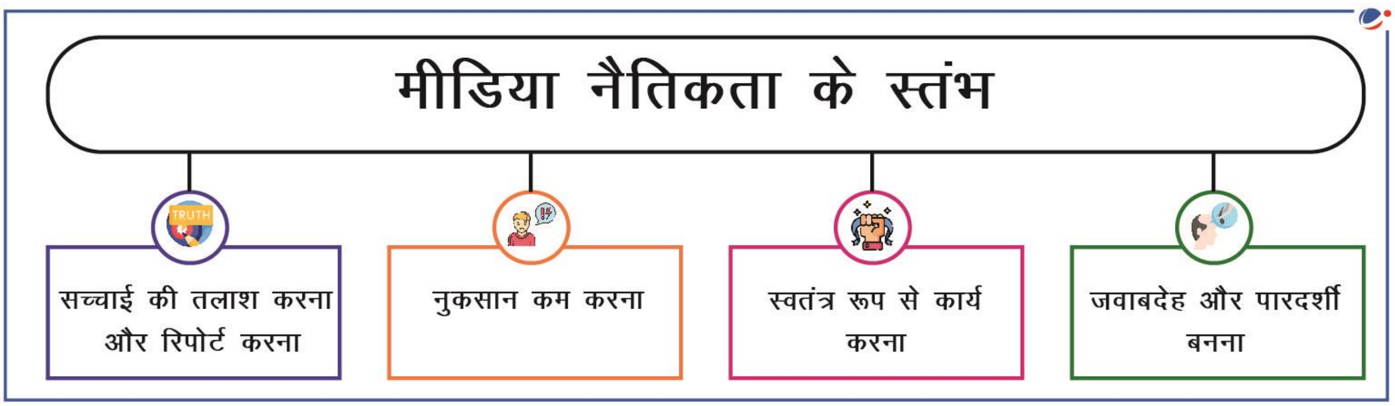

क्यों भारत में प्रभावी मीडिया एथिक्स की आवश्यकता सर्वोपरि होती जा रही है?

- **हितों का टकराव:** निष्पक्षता मीडिया एथिक्स के स्तंभों में से एक है। हालांकि, उस समय दुविधा उत्पन्न होती है जब किसी पत्रकार को ऐसे व्यक्ति की कहानी को कवर करने का जिम्मा सौंपा जाता है जिसके साथ उसके मौजूदा व्यक्तिगत संबंध हैं।
- **गोपनीयता और सत्यनिष्ठा:** इसको लेकर गंभीर नैतिक चिंताएं व्यक्त की गई हैं, क्योंकि कई बार पत्रकारों ने **निजी जीवन में किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत आचरण** से संबंधित तथ्यों पर आधारित विशेष कहानियों को कवर किया है।
- **पूर्वाग्रह और व्यक्तिपरकता:** खबरों को अक्सर **एक विशेष शैली और पूर्वाग्रह में रिपोर्ट किया जाता है,** जिससे न्यूज़ मीडिया के इरादों और उद्देश्यों पर संदेह उत्पन्न होने लगता है।
- **उभरती दुविधाएं: बड़ी कॉर्पोरेट कंपनियों द्वारा क्रॉस-मीडिया स्वामित्व धारण** की प्रक्रिया के चलते जोखिमपूर्ण स्थितियों की उत्पत्ति में बढ़ोतरी हुई है।

[12] News Broadcasting and Digital Standards Authority

- **स्व-नियामक तंत्र की अप्रभाविता:** इसके पीछे निम्नलिखित कारण उत्तरदायी हैं:
    - **मीडिया और बाज़ार का दबाव:** राजस्व बढ़ाने की **व्यावसायिक अनिवार्यताओं** ने **पत्रकारिता की उत्कृष्टता** पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है और यह अभी भी नकारात्मक प्रभाव पैदा कर रहा है।
    - **अपर्याप्त जुर्माना:** मौजूदा 1 लाख रुपये की जुर्माना राशि अप्रभावी साबित हुई है क्योंकि यह जुर्माना दोषी चैनल द्वारा संबंधित शो से अर्जित किये जाने वाले लाभ के अनुपात में बहुत कम है।

आगे की राह

- मीडिया की **स्व-नियमन प्रणाली** को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए।
    - **हचिन्स आयोग की रिपोर्ट** में **प्रेस की स्वतंत्रता** का समर्थन किया गया और **स्व-नियमन** को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। साथ ही, इसमें कहा गया है कि **सरकारी हस्तक्षेप का उपयोग अंतिम उपाय के रूप में** किया जाना चाहिए।
    - **जुर्माने का निर्धारण** गलती करने वाले चैनल द्वारा **अर्जित लाभ के अनुपात में किया जाना** चाहिए। इसे ठीक वैसे ही किया जाना चाहिए जैसा कि हाल ही में **सुप्रीम कोर्ट ने सुझाया** है।
- एक **सार्वभौमिक आचार संहिता** को लागू किया जाना चाहिए जो पत्रकारों के लिए निम्नलिखित दिशा-निर्देशों को निर्धारित करती हो:
    - अपने काम/ खबरों की सटीकता की **जिम्मेदारी लेना।**
    - दृश्य जानकारी सहित **कभी भी जानबूझकर तथ्यों या संदर्भ को विकृत न करना।**
    - **सार्वजनिक मामलों और सरकार पर निगरानी** बनाए रखने वाले के रूप में सेवा संबंधी अपने विशेष दायित्व की पहचान करना।
    - सत्य की खोज में पूर्वाग्रह को दूर करने के लिए **वस्तुनिष्ठता** को एक आवश्यक तकनीक के रूप में अपनाना।

> **मीडिया को "बाहर से नियंत्रित नहीं किया जा सकता, उसे भीतर से नियंत्रित करना पड़ता है।"**
>
> — टॉम क्लैन्सी

6.2. सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का नैतिक उपयोग (Ethical Use of Social Media Platforms)

भूमिका

हाल ही में, भारतीय निर्वाचन आयोग (ECI) ने राजनीतिक दलों द्वारा चुनाव प्रचार के दौरान सोशल मीडिया के उपयोग के संबंध में आदर्श आचार संहिता और अन्य कानूनी प्रावधानों के उल्लंघन के मामलों का संज्ञान लिया है। इससे सोशल मीडिया के तेजी से बदलते स्वरूप के संदर्भ में 'सोशल मीडिया की सुपरिभाषित नैतिकता' के अभाव के बारे में प्रश्न उठते हैं।

सोशल मीडिया के उपयोग में शामिल विभिन्न हितधारक

हितधारक और उनके हित	
हितधारक	**भूमिका/ हित**
उपयोगकर्ता/ ग्राहक/ नागरिक	• वर्चुअल सोशल कनेक्टिविटी • गुणवत्तापूर्ण डिजिटल सेवाओं तक पहुंच
सोशल मीडिया मध्यवर्ती संस्था/ प्लेटफ़ॉर्म	• गुणवत्तापूर्ण सेवा वितरण • ग्राहक आधार बढ़ाना - पहुंच • लाभप्रदता और वित्तीय संवृद्धि
राजनीतिक दल	• लक्षित मतदाताओं तक पहुंच बढ़ाना • चुनाव प्रचार हेतु एक साधन के रूप में सोशल मीडिया • मतदाताओं की मांगों के अनुरूप होना

सरकार/ विनियामक इकोसिस्टम	• निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा के लिए समान अवसर सुनिश्चित करना • अपने नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करना
अंतर्राष्ट्रीय संगठन	• सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के नैतिक उपयोग पर वैश्विक सहमति • यह सुनिश्चित करना कि प्लेटफ़ॉर्म का दुरुपयोग न हो

सोशल मीडिया से संबंधित नैतिक बहस

- **व्यक्तिगत बनाम सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म:**
  - **निजता:** इससे उपयोगकर्ताओं के व्यक्तिगत डेटा के उपयोग, भंडारण और साझाकरण के लिए **सहमति के अभाव** के कारण **गोपनीयता के उल्लंघन** संबंधी नैतिक मुद्दे सामने आते हैं।
    - **उदाहरण के लिए-** सर्च हिस्ट्री और पत्रकारों के **डॉक्सिंग** पर आधारित **लक्षित विज्ञापन।**
  - **भेदभाव:** भले ही ये प्लेटफॉर्म्स कमजोर वर्गों की भागीदारी को बढ़ावा देते हैं, लेकिन इनमें ऐसी संस्थागत व्यवस्था का अभाव होता है जो यह सुनिश्चित करे कि वंचित तबके के विचारों तक **समान और उचित रूप से पहुंचा** जा सके।
    - **उदाहरण के लिए- पश्चिमी देशों में आप्रवासन विरोधी भावना** पर आधारित सोशल मीडिया अभियान।
- **समाज बनाम सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म:**
  - **ध्रुवीकरण:** सार्वजनिक मंच (Public sphere) का विभाजन **'एक जैसी सोच रखने वालों के गुट'** (Echo chambers) और **'चुनिंदा जानकारी'** (Filter bubbles) को बढ़ावा देकर **सूचना के ऐसे समूह बनाता** है जहां समान विचार रखने वाले लोग जानबूझकर **विपरीत या दूसरे विचारों** (Alternative views) के संपर्क से बचते हैं।
    - उदाहरण के लिए- **म्यांमार** में **रोहिंग्या अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा** और नस्ल, धर्म तथा जाति के आधार पर राजनीतिक ध्रुवीकरण को बढ़ावा देने के लिए **फेसबुक प्लेटफॉर्म** का उपयोग किया गया था।
- **नियामक इकोसिस्टम बनाम सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म:**
  - **राष्ट्रहित बनाम व्यक्तिगत स्वतंत्रता:** विनियामक पारिस्थितिकी तंत्र, जैसे- सरकारें **राष्ट्रीय सुरक्षा और गरिमा को बनाए रखने** के लिए कंटेंट मॉडरेशन का समर्थन करती है। वहीं, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इस तरह की कार्रवाई का **विरोध** करते हैं, क्योंकि यह उपयोगकर्ताओं की **अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता** को अवरुद्ध करता है।
  - **पारदर्शिता और जवाबदेही:** सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर कंटेंट के लिए **जवाबदेही तय करना या कंटेंट के स्रोत का पता लगाना मुश्किल** होता है।
    - उदाहरण के लिए- **व्हाट्सएप** प्लेटफॉर्म पर एंड-टू-एंड एन्क्रिप्शन का फीचर, उस पर आपराधिक गतिविधियों का पता लगाना मुश्किल बना देता है।

आगे की राह:

- **कानूनी/ विनियामक पारिस्थितिकी तंत्र:** प्लेटफॉर्म्स के **प्रत्यक्ष विनियमन के बिना** सोशल मीडिया की नैतिकता को बनाए रखने के लिए एक **सहायक पद्धति** की आवश्यकता है। इसकी अनुपस्थिति में हितधारकों के बीच संघर्ष पैदा हो सकता है।
  - **सूचना प्रौद्योगिकी (मध्यवर्ती दिशानिर्देश और डिजिटल मीडिया आचार संहिता) नियम, 2021-**
    - **विशेषताएं:** शिकायत अधिकारी कार्यालय, **शिकायत निवारण तंत्र**, मुख्य अनुपालन अधिकारी, **आचार संहिता, स्व-नियमन तंत्र** और सरकार द्वारा **निरीक्षण तंत्र।**

- **सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स:**
    - भारत की संप्रभुता और अखंडता, राज्य की सुरक्षा, सार्वजनिक व्यवस्था, शालीनता या नैतिकता जैसे पहलुओं में **डेटा भंडारण और साझाकरण हेतु सरकारी दिशा-निर्देशों** का पालन करना चाहिए।
    - **भारत में चुनावों** के लिए इंटरनेट और मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के साथ मिलकर **स्वैच्छिक आचार संहिता** पर सहमति व्यक्त की है।
- **राजनीतिक दल:** प्रत्येक राजनीतिक दल के पास जिम्मेदार आचरण सुनिश्चित करने के लिए एक **आंतरिक आचार संहिता और एक स्व-विनियमन तंत्र** होना चाहिए।
- **समाज:** सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को नैतिक सिद्धांतों के अनुरूप **जवाबदेह** बनाना **सामूहिक जिम्मेदारी** है।

"सोशल मीडिया तकनीक का दोहन नहीं बल्कि समुदाय की सेवा है।"

— साइमन मेनवारिंग

6.3. मीडिया ट्रायल की नैतिकता (Ethics of Media Trial)

प्रस्तावना

ऐसा लगने लगा है कि वर्तमान समय में, मीडिया ने खुद को जांच और ट्रायल की शक्ति प्रदान कर दी है। इससे अंततः अदालतों द्वारा फैसला सुनाए जाने से पहले ही किसी आरोपी व्यक्ति को अपराधी घोषित कर दिया जाता है। इस संदर्भ में, सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार को कुछ दिशा-निर्देश तैयार करने के लिए कहा है। इस दिशा-निर्देश में यह तय किया जाएगा कि पुलिस जांच के बारे में मीडिया को कैसे जानकारी देगी, जिससे मीडिया ट्रायल को रोका जा सके।

हितधारक और उनके हित	
हितधारक	हित
न्यायपालिका/ न्यायाधीश	• **निष्पक्ष सुनवाई** न्याय का आधार है। ऐसी किसी भी चीज़ से बचना चाहिए जो न्यायाधीशों को अभियुक्तों के प्रति पक्षपाती बना दे।
अभियुक्त/ परिवार के सदस्य	• ये लोग यह उम्मीद करते हैं कि मीडिया **तथ्यों और आंकड़ों को गढ़े बिना** ही खबर दिखाएगी।
पीड़ित/ परिवार के सदस्य	• पीड़ितों/ परिवार के सदस्यों को यह उम्मीद होती है कि उनकी **पहचान/ व्यक्तिगत जानकारी मीडिया द्वारा उजागर नहीं** की जाएगी। साथ ही, उन्हें उम्मीद रहती है कि मीडिया उन्हें न्याय दिलाने में मदद करेगी।
गवाह	• पूरी न्याय प्रणाली में **गवाह की सुरक्षा और सकुशलता** महत्वपूर्ण होती है। उनका हित इस बात में निहित होता है कि मीडिया उनकी पहचान उजागर न करे।
मीडिया	• सत्यता की रिपोर्ट करना यानी **लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में कार्य करना।** साथ ही, लोकप्रियता और दर्शकों की संख्या से जुड़े व्यावसायिक दृष्टिकोण का प्रबंधन करना।
व्यक्ति/ नागरिक	• आम जनता यह उम्मीद करती है कि **सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण मुद्दों को प्राथमिकता** दी जाए और **पूर्वाग्रह, पक्षपात या किसी निहित स्वार्थ के बिना** मीडिया द्वारा ईमानदारी से रिपोर्टिंग की जाए।

मीडिया ट्रायल से जुड़े प्रमुख नैतिक मुद्दे

- **न्याय प्रणाली की विश्वसनीयता:** यह **दोषी सिद्ध होने तक निर्दोष होने के सिद्धांत** को कमजोर करता है। यह सिद्धांत इस बात का समर्थन करता है कि हर आरोपी को कानून द्वारा दोषी सिद्ध होने तक निर्दोष माना जाता है, जैसे- आरुषि-हेमराज हत्याकांड।
- **निष्पक्ष सुनवाई के अधिकार को कमजोर करना:** विचाराधीन मामलों पर चर्चा के दौरान मीडिया में विशेषज्ञों की राय **आरोपी/ पीड़ित के प्रति न्यायाधीशों की धारणा को प्रभावित** कर सकती है, जैसे- जसलीन कौर उत्पीड़न मामला।

- भारत के संविधान का **अनुच्छेद 21 प्रत्येक व्यक्ति को निष्पक्ष सुनवाई (जीवन और वैयक्तिक स्वतंत्रता के अधिकार के भाग के रूप में) के अधिकार** की गारंटी देता है।

- **निजता के अधिकार को खतरा:** प्रायः मीडिया ट्रायल में **आरोपी और पीड़ित की पहचान/ व्यक्तिगत जानकारी का खुलासा** किया जाता है। इससे उस व्यक्ति की सार्वजनिक छवि नकारात्मक रूप से प्रभावित हो सकती है, जैसे- सुशांत सिंह राजपूत मामले में।
- **मीडिया की नैतिकता को कमज़ोर करता है:** मीडिया ट्रायल सत्य और जवाबदेही जैसी **मीडिया नैतिकता के प्रमुख सिद्धांतों का उल्लंघन** करता है। यह जिम्मेदारीपूर्ण पत्रकारिता के विचार के खिलाफ है।

आगे की राह: उचित संतुलन स्थापित करना

- **अभियुक्त और मीडिया दोनों के अधिकारों के बीच संतुलन बनाना:** संवेदनशील मामलों में, मीडिया मुकदमा खत्म होने तक कुछ पहलुओं पर रिपोर्टिंग में देरी कर सकता है।
  - **सहारा इंडिया रियल एस्टेट कॉर्पोरेशन बनाम सेबी वाद (2012)** में, सुप्रीम कोर्ट ने **आरोपी के अधिकारों और मीडिया के रिपोर्ट करने के अधिकार** के बीच एक नाजुक संतुलन की आवश्यकता को रेखांकित किया था।
- **स्व-विनियमन तंत्र को बढ़ावा देना: प्रसारण और डिजिटल मानक प्राधिकरण** (NBDSA) जैसे संगठनों को व्यापक दिशा-निर्देश बनाने चाहिए।
- **मीडिया नैतिकता को लागू करना:** भारतीय प्रेस परिषद को **पत्रकारिता आचार संहिता (2022) के कार्यान्वयन पर जोर** देना चाहिए और उसे प्रोत्साहित करना चाहिए।

"हम जो कुछ भी सुनते हैं वह एक राय है, तथ्य नहीं। हम जो कुछ भी देखते हैं वह एक दृष्टिकोण है, सत्य नहीं।"

— मार्कस ऑरेलियस

6.4. सोशल मीडिया और सिविल सेवक (Social Media and Civil Servants)

परिचय

माननीय प्रधान मंत्री ने नए IPS पुलिस अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि "सिंघम बनने का प्रयास मत कीजिए। पुलिस की वर्दी अधिकारों के अनुचित प्रयोग या धौंस जमाने के लिए नहीं है बल्कि इसका उद्देश्य प्रेरणा देना है।" प्रधान मंत्री ने यह बात सिविल सेवकों की इंस्टाग्राम सेलिब्रिटी बनने की बढ़ती प्रवृत्ति को देखते हुए कही थी। इसी दौरान, IAS अधिकारी और कलेक्टर प्रशांत नायर ने अपने सोशल मीडिया इन्फ्लुएंस का उपयोग करके केरल में एक झील की सफाई के लिए स्वयंसेवकों को इकट्ठा किया था।

सिविल सेवक आमतौर पर सोशल मीडिया का उपयोग निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए कर सकते हैं:

- **नागरिकों से जुड़ने के लिए:** सिविल सेवक नागरिकों के साथ जुड़ाव बनाए रखने के लिए सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते हैं। इससे जनभागीदारी बढ़ सकती है, विश्वास उत्पन्न हो सकता है और संबंधित सिविल सेवक की लोकप्रियता भी बढ़ सकती है।
- **जानकारी साझा करने और जागरूकता बढ़ाने के लिए:** सिविल सेवकों सहित विभिन्न लोक प्राधिकारी सोशल मीडिया के माध्यम से सरकारी योजनाओं के विवरण, अपडेटेड नीतिगत जानकारी, नियमों आदि को साझा करते हैं। उदाहरण के लिए- दिल्ली यातायात पुलिस मीम्स (Memes) के जरिए यातायात नियमों एवं कानूनों के बारे में जागरूकता पैदा कर रही है।
- **जनता के दृष्टिकोण को समझने के लिए:** कई बार सिविल सेवक नीतियों और कार्यक्रमों के बारे में लोगों का फीडबैक जानने के लिए सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते हैं। इसके अतिरिक्त, सोशल मीडिया पर होने वाली चर्चाओं में जातिवाद, सांप्रदायिकता और लिंग के आधार पर व्याप्त भेदभाव (Sexism) जैसे विभिन्न मुद्दे उभर कर सामने आते हैं।
- **व्यक्तिगत इस्तेमाल के लिए:** आधिकारिक क्षमता से इतर, सिविल सेवक व्यक्तिगत स्तर पर इसका इस्तेमाल अपने निजी विचार रखने और अन्य कंटेंट साझा करने के लिए भी करते हैं।

प्रमुख हितधारक और उनके हित	
हितधारक	**हित**
सिविल सेवक	**सरकार के वास्तविक प्रतिनिधि** और एक नागरिक के रूप में उनकी **वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार।**
सरकार	सिविल सेवकों के लिए सोशल मीडिया के उपयोग से संबंधित **नीतियां, दिशा-निर्देश और मानक निर्धारित** करना।
नागरिक/ आम जन	सिविल सेवकों द्वारा साझा की गई **सूचना के बारे में आम जनता कमेंट करके,** सवाल पूछकर या सोशल मीडिया चैनलों के जरिए **सहायता मांग कर** सक्रिय रूप से हिस्सा ले सकती है।
मीडिया	सिविल सेवकों की सोशल मीडिया से जुड़ी **गतिविधियों की निगरानी और उनकी रिपोर्टिंग करना।** साथ ही, उनकी पहुंच और प्रभाव में बढ़ोतरी करना।
सहकर्मी (Peers)	विचारों का आदान-प्रदान करने, सर्वोत्तम कार्य-प्रणालियों को साझा करने या प्रयासों में समन्वय लाने के लिए **अपने सहकर्मियों से जुड़ना और सोशल मीडिया पर उनको फॉलो करना।**
विनियामक निकाय	**सोशल मीडिया** के उपयोग से संबंधित **दिशा-निर्देशों या नीतियों की निगरानी और अनुपालन सुनिश्चित करना।**

सिविल सेवकों द्वारा सोशल मीडिया के उपयोग से संबंधित नैतिक मुद्दे

- **तटस्थता और अनामिता (Anonymity) का सिद्धांत:** सिविल सेवा मूल्यों के अनुसार, अधिकारियों को राजनीतिक रूप से तटस्थ होना चाहिए और पर्दे के पीछे रहकर अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए। उन्हें अपनी सार्वजनिक छवि बनाने या किसी कृत्य के लिए लोगों की प्रशंसा बटोरने से बचना चाहिए। दुर्भाग्यवश सोशल मीडिया के कारण इस सिद्धांत की अवहेलना होती है।
- **सरकार के संसदीय स्वरूप के साथ असंगत:** सरकार के संसदीय स्वरूप में, सरकार एवं मंत्री चुने हुए प्रतिनिधियों के रूप में जनता के प्रति उत्तरदायी होते हैं, वहीं नौकरशाह केवल अपने वरिष्ठ अधिकारी के प्रति उत्तरदायी होते हैं।
- **निजता का उल्लंघन और राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा:** सूचना लीक होने का खतरा रहता है, ऑनलाइन साझा किए गए व्यक्तिगत डेटा का उपयोग खुफिया जानकारी जुटाने के लिए किया जा सकता है। इसके अलावा, नौकरशाहों के सोशल मीडिया अकाउंट्स को अनधिकृत तरीके से संचालित करने के लिए हैकर्स द्वारा निशाना बनाया जा सकता है, आदि।
- **यह व्यक्ति की पेशेवर और निजी पहचान के बीच के अंतर को अस्पष्ट कर सकता है:** ऑनलाइन गतिविधियों को सहकर्मी, नियोक्ता और आम लोग आसानी से देख सकते हैं। इससे, सिविल सेवकों के लिए अपनी पेशेवर और व्यक्तिगत गतिविधियों को अलग करना काफी मुश्किल हो जाता है।
- **अनुचित आत्म-प्रचार:** कई बार सिविल सेवक प्रसिद्धि का उपयोग खुद की पब्लिसिटी के लिए करते हैं। कई सिविल सेवक अपने काम के बारे में ऑनलाइन पोस्ट करते हैं। इसके बाद उनके प्रशंसक और फॉलोवर्स इन पोस्ट्स का प्रचार करते हैं जिससे उन सिविल सेवकों के प्रदर्शन के संबंध में एक पब्लिक नैरेटिव तैयार होता है।

अखिल भारतीय सेवा (आचरण) नियमावली, 1968 में क्या प्रावधान हैं?

इसमें कहा गया है कि **किसी भी सेवारत सिविल सेवक को सार्वजनिक मीडिया पर ऐसे बयान नहीं देने चाहिए जो-**

- **केंद्र सरकार या राज्य सरकार की किसी वर्तमान या हालिया नीति या कार्रवाई की नकारात्मक आलोचना** करता हो।
- **केंद्र सरकार और किसी राज्य सरकार के संबंधों में कठिनाइयां पैदा करता हो।**
- **केंद्र सरकार और किसी विदेशी सरकार के बीच संबंधों में कठिनाइयां पैदा करता हो।**

संभावित समाधान

सोशल मीडिया पर सिविल सेवकों की उपस्थिति एवं उनकी भागीदारी के संबंध में **इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी विभाग** द्वारा कुछ **बुनियादी मूल्य** प्रस्तुत किए गए हैं, जो निम्नलिखित हैं:

- **पहचान (Identity):** हमेशा यह ध्यान में रखें कि **आप कौन हैं, विभाग में आपकी क्या भूमिका है** और हमेशा मैं/ मेरा जैसे सर्वनामों का प्रयोग करते हुए पोस्ट करें। आवश्यकता पड़ने पर डिस्क्लेमर का प्रयोग कर सकते हैं।

- **प्राधिकार (Authority): जब तक आपको अधिकार न दिया जाए तब तक कोई टिप्पणी और प्रतिक्रिया न दें,** विशेष रूप से उन मामलों में जो न्यायालय में विचाराधीन (Sub-judice) हैं, या जो अभी ड्राफ्ट रूप में हैं या अन्य व्यक्तियों से संबंधित हैं।
- **प्रासंगिकता (Relevance): अपने क्षेत्र से संबंधित मुद्दों** पर ही टिप्पणी करें तथा **प्रासंगिक एवं उचित टिप्पणी** करें। इससे संवाद अधिक सार्थक होगा और तार्किक निष्कर्ष तक पहुंचने में मदद मिलेगी।
- **पेशेवर व्यवहार (Professionalism):** सोशल मीडिया पर पोस्ट करते समय **विनम्र रहें, विवेकशील बनें और सभी का सम्मान करें**। किसी भी व्यक्ति या एजेंसी के पक्ष में या उसके खिलाफ व्यक्तिगत टिप्पणी न करें। साथ ही, पेशेवर चर्चाओं के राजनीतिकरण से बचें।
- **खुलापन (Openness): सभी प्रकार के विचारों या आलोचनाओं को सुनने के लिए तैयार रहें,** चाहे वे सकारात्मक हों या नकारात्मक।
- **अनुपालन (Compliance): प्रासंगिक नियमों और विनियमों का अनुपालन करें।** बौद्धिक संपदा अधिकारों (IPR) एवं दूसरों के कॉपीराइट का अतिक्रमण या अवहेलना न करें।
- **निजता (Privacy): अन्य व्यक्तियों की व्यक्तिगत जानकारी साझा न करें** और न ही अपनी निजी एवं व्यक्तिगत जानकारी साझा करें।

> **यदि आप चाहते हैं कि आपको पसंद किया जाए, तो आप किसी भी समय किसी भी चीज़ से समझौता करने के लिए तैयार हो जाएं।**
>
> — मार्ग्रेट थैचर

सरकारी योजनाएं

त्रैमासिक रिवीजन

सिविल सेवा परीक्षा में आपके ज्ञान, एनालिटिकल स्किल और सरकारी नीतियों तथा पहलों की गतिशील प्रकृति के साथ अपडेटेड रहने की क्षमता को जांचा जाता है। इसलिए इस चुनौतीपूर्ण परीक्षा के लिए एक व्यापक और सुनियोजित दृष्टिकोण काफी आवश्यक हो जाता है।

"सरकारी योजनाएं त्रैमासिक रिविजन" डॉक्यूमेंट के साथ सिविल सेवा परीक्षा में सफलता की अपनी यात्रा शुरू कीजिए। यह विशेष पेशकश आपको परीक्षा की तैयारी में एक परिवर्तनकारी अनुभव प्रदान करेगी। सावधानीपूर्वक तैयार किया गया हमारा यह डॉक्यूमेंट न केवल आपकी सीखने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए बल्कि टाइम मैनेजमेंट और याद रखने की क्षमता को बढ़ाने के लिए भी डिज़ाइन किया गया है। इस डॉक्यूमेंट को त्रैमासिक आधार पर तैयार किया जाता है। यह डॉक्यूमेंट फाइनल परीक्षा के लिए निरंतर सुधार और तनाव मुक्त तैयारी हेतु अभ्यर्थियों के लिए एक आधार के रूप में कार्य करेगा।

यह सीखने की प्रक्रिया को बाधारहित और आसान यात्रा में बदल देता है। इसके परिणामस्वरूप, आप परीक्षा की तैयारी के साथ-साथ सरकारी योजनाओं, नीतियों और उनके निहितार्थों की गहरी समझ विकसित करने में सफल होते हैं।

डॉक्यूमेंट को पढ़ने के लिए QR कोड को स्कैन कीजिए

सरकारी योजनाएं त्रैमासिक रिवीजन डॉक्यूमेंट की मुख्य विशेषताओं पर एक नज़र

1. सुर्ख़ियों में रहीं में योजनाएं: अपडेट रहिए, आगे रहिए!

इस खंड में **आपको नवीनतम घटनाक्रमों से अवगत** कराया जाता है, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि आपकी तैयारी न केवल व्यापक हो, बल्कि हालिया तिमाही के लिए प्रासंगिक भी हो। सुर्ख़ियों में रही योजनाओं के रियल टाइम एकीकरण से आप नवीनतम ज्ञान से लैस होकर आत्मविश्वास से परीक्षा देने में सक्षम बन पाएंगे।

2. सुर्ख़ियों में रहीं फ्लैगशिप योजनाएं: परीक्षा में आपकी सफलता की राह!

भारत सरकार की 'फ्लैगशिप योजनाएं' **सिविल सेवा परीक्षा के सिलेबस के कोर** में देखने को मिलती हैं। हम इस डॉक्यूमेंट में इन महत्वपूर्ण पहलों को गहराई से कवर करते हैं, जिससे सरकारी नीतियों के बारे में **आपकी गहरी समझ विकसित** हो। इन फ्लैगशिप योजनाओं पर ध्यान केंद्रित करके, हम आपको उन प्रमुख पहलुओं में महारत हासिल करने के लिए मार्गदर्शन करते हैं, जिन्हें परीक्षक सफल उम्मीदवारों में तलाशते हैं।

3. प्रश्नोत्तरी: पढ़िए, मूल्यांकन कीजिए, याद रखिए!

मटेरियल को समझने और मुख्य तथ्यों को याद रखने में काफी अंतर होता है। इस अंतर को खत्म करने के लिए, हमने इस डॉक्यूमेंट में एक 'प्रश्नोत्तरी' खंड शामिल किया है। इस डॉक्यूमेंट में **सावधानी से तैयार किए गए 20 MCQs** दिए गए हैं, जो आपकी **समझ को मजबूत करने के लिए चेकपॉइंट** के रूप में काम करते हैं। ये मूल्यांकन न केवल आपकी प्रगति का आकलन करने में मदद करते हैं बल्कि महत्वपूर्ण तथ्यों को प्रभावी ढंग से याद रखने में भी सहायक होते हैं।

'सरकारी योजनाएं त्रैमासिक रिवीजन' एक डॉक्यूमेंट मात्र नहीं है; बल्कि यह आपकी परीक्षा की तैयारी में एक रणनीतिक साथी भी है। यह आपकी लर्निंग एप्रोच में बदलाव लाता है, जिससे यह एक सतत और कुशल प्रक्रिया बन जाती है। परीक्षा की **तैयारी के आखिरी चरणों में आने वाले तनाव को अलविदा कहिए, प्रोएक्टिव लर्निंग एक्सपीरियंस** को आपनाइए और आत्मविश्वास के साथ सफलता की ओर आगे बढ़िए।

अहमदाबाद | बेंगलूरु | भोपाल | चंडीगढ़ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची

7. विविध (Miscellaneous)

7.1. युद्ध की नैतिकता (Ethics of War)

प्रस्तावना

रूस-यूक्रेन और इज़राइल-हमास के बीच हालिया संघर्ष और युद्ध के दौरान किए गए क्रूर कृत्यों के बारे में सोशल मीडिया में इमेज और स्टोरीज़ का निरंतर प्रसार अनेक नैतिक प्रश्न खड़े करता है।

युद्ध से उत्पन्न होने वाली नैतिकता से जुड़ी हुई चिंताएं कौन-कौन सी हैं?

- **सही पक्ष बनाम गलत पक्ष का द्वंद्व:** युद्ध और हिंसा को समझने का प्रयास अक्सर इस निर्णय तक सीमित हो जाता है कि एक पक्ष सही है और दूसरा गलत।
  - हालांकि, स्वयं या दूसरों के द्वारा किए गए ऐसे कृत्यों को उचित ठहराने के लिए तर्क प्रस्तुत करना, इसे **नैतिक रूप से सही नहीं बनाता** है।
- **दंड और प्रतिशोध:** युद्ध में, **दंड और प्रतिशोध पर आधारित तर्कों** को अक्सर गलती को सुधारने के नैतिक तरीके के रूप में देखा जाता है।
  - युद्धों के परिणामस्वरूप होने वाली **मौतें और मृत्युदंड जैसी सजाएं देना कई नैतिक प्रश्न खड़े करता है।**
- **इंसानियत का पतन:** वर्तमान समय में कुछ शक्तिशाली देश अपने **उद्देश्यों को प्राप्त करने के साधन के रूप** में **युद्ध का सहारा** ले रहे हैं।
- **व्यक्तिगत बनाम सामूहिक पहचान:** इजराइल-फिलिस्तीन युद्ध जैसे हालिया संघर्ष एक ऐसी प्रवृत्ति को दर्शाते हैं जहां लोग व्यक्तियों को मानव के रूप में नहीं देखते हैं, अपितु उन्हें **केवल सामूहिक पहचान के संदर्भ में** देखा जाता है।

क्या इन समस्याओं को हल करने के लिए कोई नैतिक तरीका मौजूद है?

- युद्ध का नैतिक मूल्यांकन करने का सबसे प्रचलित तरीका **'जस्ट वॉर थ्योरी'** का उपयोग करना है। यह सिद्धांत कई स्थितियों पर विचार करता है, जो यह निर्धारित करती हैं कि किसी युद्ध को न्यायसंगत, नैतिक या वैध माना जा सकता है या नहीं।
- **जस्ट वॉर यानी न्याय युद्ध के मानदंड इस प्रकार हैं:**
  - **जूस एड बेलम (Jus ad bellum) (युद्ध को न्यायोचित ठहराने वाले कारक):** इसमें युद्ध किसी **वैध संस्था द्वारा** शुरू किया जाना चाहिए (उदाहरण के लिए- राष्ट्रीय सरकार), युद्ध में शामिल होने का **उचित कारण और नेक उद्देश्य होना** जैसे सिद्धांत शामिल हैं।
  - **जूस इन बेलो (Jus in bello) (युद्ध में शामिल पक्षों के आचरण या युद्ध के नियम):** इसमें आनुपातिकता (उदाहरण के लिए- अत्यधिक या अनावश्यक क्षति से बचा जाना चाहिए) जैसे सिद्धांत शामिल हैं।
  - **जूस पोस्ट बेलम (Jus post bellum) (युद्ध के बाद युद्धरत पक्षों की क्या जिम्मेदारी है?):** इसमें विजेताओं के गलत कार्यों को रोकना, युद्ध के बाद पुनर्निर्माण की सुविधा प्रदान करना और स्थायी शांति बहाल करना शामिल हैं।

क्या इन नैतिक आदर्शों का पालन किया जा रहा है?

कुछ राष्ट्र और सैन्य संगठन स्पष्ट रूप से युद्ध के सिद्धांतों का पालन करने और उन्हें अपने सैन्य नीतियों, युद्ध या संघर्ष के नियमों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शामिल करने का प्रयास करते हैं।
हालांकि, अधिकांश मामलों में, इन सिद्धांतों का पालन कम ही किया जाता है। इस प्रवृत्ति के प्रमुख कारणों के रूप में निम्नलिखित का उल्लेख किया जा सकता है:

- **गैर-राज्य अभिकर्ताओं की भागीदारी:** जैसे कि **विद्रोही समूह या आतंकवादी संगठन,** अक्सर राज्य अभिकर्ताओं के समान **कानूनी और नैतिक बाधाओं से बंधे नहीं होते** हैं। उनके कार्य **अक्सर युद्ध सिद्धांतों का उल्लंघन** कर सकते हैं।
- **विभेद के सिद्धांत (Distinction Principle) की अवहेलना:** विभेद के सिद्धांत को लागू करने के लिए लड़ाकू और गैर-लड़ाकू सैनिकों के बीच स्पष्ट अंतर की आवश्यकता होती है, लेकिन वास्तव में, नागरिक अनजाने में सशस्त्र संघर्षों के शिकार बन जाते हैं।
  - उदाहरण के लिए- **सामूहिक विनाश के हथियारों,** क्लस्टर बमों और बड़े क्षेत्रों को प्रभावित करने वाले हथियारों का उपयोग ऐसे **सिद्धांतों का उल्लंघन** करता है।
- **तकनीकी प्रगति और आनुपातिकता (Proportionality) का सिद्धांत:** एडवांस सैन्य प्रौद्योगिकियों, जैसे कि ड्रोन और प्रेसिजन-गाइडेड हथियारों का उपयोग, **आनुपातिकता और विभेद के सिद्धांत पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करता** है।

- हालांकि, **इन तकनीकों का उपयोग नागरिक क्षति को कम करने** के लिए किया जा सकता है, फिर भी इनके **संभावित दुरुपयोग से जुड़ी चिंताएं** बनी रहेंगी।

- **सीमित वैश्विक नियंत्रण:** युद्ध सिद्धांतों का न्यायसंगत तरीके से प्रवर्तन अक्सर अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों, **संधियों और समझौतों पर निर्भर** करता है। इन **तंत्रों की प्रभावशीलता अक्सर संदेहास्पद** होती है।

युद्ध से जुड़े हुए सिद्धांतों का पालन सुनिश्चित करने के उपाय

- **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और संस्थानों को मजबूत करना:** युद्ध के दौरान सैनिकों के आचरण को नियंत्रित करने वाले **अंतर्राष्ट्रीय समझौतों को मजबूत करना और उन्हें लागू करना** चाहिए। उदाहरण के लिए- **जेनेवा कन्वेंशन** में इससे संबंधित प्रावधान शामिल किए गए हैं।
  - व्यक्तियों या राष्ट्रों को जवाबदेह बनाने में **अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय या संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद जैसी संस्थाओं की भूमिका को भी बढ़ाने** की आवश्यकता है।
- **कठोर हथियार नियंत्रण और निरस्त्रीकरण का समर्थन करना:** युद्ध में उन हथियारों के उपयोग को सीमित करना चाहिए, जो **नागरिकों को व्यापक स्तर पर नुकसान** पहुंचा सकते हैं।
- **शांति स्थापना और संघर्ष समाधान:** कूटनीतिक और शांति स्थापना के प्रयासों में निवेश करना चाहिए। इसमें **संघर्षों के मूल कारणों का समाधान करना, बातचीत को बढ़ावा देना** और बातचीत को सुगम बनाना आदि **हिंसा की रोकथाम में महत्वपूर्ण योगदान** दे सकता है।
- **अन्य उपाय:** युद्ध की नैतिकता के संबंध में **आम सहमति के आधार पर एक आचार संहिता (Code of Conduct)** तैयार की जा सकती है, जो **विभिन्न देशों की सेनाओं पर लागू किया जा सके।**

"युद्ध सबसे बड़ी त्रासदी है जो मानवता को व्यथित कर सकती है, यह धर्म का नाश कर देती है, देशों का सर्वनाश कर देती है तथा परिवारों को तबाह कर देती है। कोई भी संकट इससे तो बेहतर है।"

— मार्टिन लूथर

7.2. वैश्विक शासन व्यवस्था की नैतिकता (Ethics of Global Governance)

परिचय

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका को उसके दायित्वों के लिए जवाबदेह ठहरा पाने में असमर्थ रहा है। **संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC)** ने कई अवसरों पर विकसित और विकासशील देशों पर अलग-अलग सिद्धांतों को लागू किया है। हाल ही में, **ईरान में हुए विरोध प्रदर्शन, म्यांमार के रोहिंग्या संकट आदि में मानवाधिकार उल्लंघन के मामले देखे गए** थे। उक्त उदाहरण वैश्विक शासन व्यवस्था में अनैतिक/ भेदभावपूर्ण कार्यप्रणाली के बढ़ते मामलों को उजागर करते हैं।

ग्लोबल गवर्नेंस या वैश्विक शासन व्यवस्था **संस्थानों, नियमों और प्रक्रियाओं के एक सेट** की सहायता से संचालित होती है। इसका **उद्देश्य सीमा-पारीय मुद्दों का प्रबंधन करना है,** जैसे- राजनयिक संबंध, व्यापार, वित्तीय लेन-देन, प्रवासन, जलवायु परिवर्तन आदि। यह **सामूहिक चिंताओं को दूर करने के साथ-साथ साझा हितों के लिए कार्य** करती है। यह हमारी बढ़ती जटिल व एक-दूसरे पर निर्भर स्थिति को प्रबंधित करने हेतु आवश्यक है।

वैश्विक शासन व्यवस्था के प्रमुख हितधारक और उनके हित

प्रमुख हितधारक और उनके हित	
हितधारक	हित
संप्रभु देश	• **कई संप्रभु देश ग्लोबल गवर्नेंस में एक वैध भागीदार होते हैं और विश्व के अन्य देशों से ग्लोबल गवर्नेंस को मान्यता दिलाने में रुचि रखते हैं।** उदाहरण के लिए- कुछ वैश्विक निकायों द्वारा फिलिस्तीन को एक देश के रूप में मान्यता नहीं दी गई है। • **देश अपनी संप्रभु स्वायत्तता को बनाए रखना** चाहते हैं तथा अंतर्राष्ट्रीय नियमों की जगह **राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक संवृद्धि** जैसे मुद्दों को प्राथमिकता दे सकते हैं।

© Vision IAS

नागरिक समाज	• वे अपने द्वारा प्रदान किए जाने वाले अधिकारों और लाभों के बदले में **कुछ दायित्वों की पूर्ति** की अपेक्षा करते हैं। • इन पर **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने** और मानवाधिकार, शांति एवं पर्यावरणीय स्थिरता जैसे **वैश्विक सार्वजनिक घटकों** को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी होती है।
वैश्विक संस्थान	• **सरकारों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को उनके नैतिक दायित्वों के प्रति जवाबदेह** ठहराना।
बहुराष्ट्रीय कंपनियां (MNCs)	• मानवाधिकारों का सम्मान करने, पर्यावरण की रक्षा करने और **समाज के व्यापक सामाजिक एवं आर्थिक कल्याण में योगदान** देने के साथ-साथ उनके **ऊपर शेयरधारकों के लिए मूल्य को बढ़ावा देने की भी जिम्मेदारी** होती है।
नागरिक या व्यक्ति	• व्यक्ति का यह दायित्व है कि वह **जानकार एवं जागरूक नागरिक** बने और उन तरीकों को अपनाए जो समाज के अधिकतम कल्याण को बढ़ावा देते हों।

ग्लोबल गवर्नेंस या वैश्विक शासन व्यवस्था के समक्ष नैतिक मुद्दे

- **जवाबदेही तंत्र का अभाव: दुनिया भर में साझा जवाबदेही तंत्र की अनुपस्थिति** के कारण यह और जटिल हो गया है। अंतर्राष्ट्रीय कानून और नियम वैश्विक शासन व्यवस्था के भागीदारों को **दायित्व प्रदान करने में विफल** रहे हैं।
- **विभेदकारी:** बनाए गए नियम **सभी के लिए समान नहीं** हैं। नियम बनाने वालों और जिन पर इन्हें लागू किया जा रहा है, दोनों के हितों के बीच व्यापक अंतर मौजूद है।
- **पक्षों का अलग अलग मत/ विचार (Polarizing Narratives):** वैश्विक शासन व्यवस्था को मतभेद की स्थिति में क्या करना चाहिए, इसे लेकर **अपेक्षाओं में अंतर बढ़** रहा है। **उदाहरण के लिए- जलवायु परिवर्तन संबंधी वार्ताओं** में, साझा लेकिन विभेदित उत्तरदायित्व जैसे सिद्धांतों पर अभी तक सहमति नहीं बन पाई है।
- **कुछ देशों का अल्प प्रतिनिधित्व:** वैश्विक संस्थाओं पर शक्तिशाली देशों का वर्चस्व बना हुआ है। इसके **परिणामस्वरूप** अक्सर **ऐसे निर्णय लिए जाते हैं जो सभी देशों या लोगों के हितों या मूल्यों का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं।**
  - **उदाहरण के लिए-** विकासशील देश अक्सर तर्क देते हैं कि **वैश्विक व्यापार समझौते** में WTO प्रणाली विकासशील देशों की तुलना में विकसित देशों के हितों को प्राथमिकता देती है।
- **मानवाधिकारों का उल्लंघन: अलग-अलग मामलों में मानवाधिकारों के दुरुपयोग को अनदेखा किया जाता है।** ऐसा विचारों में अंतर और हितों के टकराव के कारण किया जाता है। इसके अलावा, मानवाधिकारों के एक सार्वभौमिक सेट के क्रियान्वयन के लिए वैश्विक शासी निकायों के पास कोई **प्रवर्तन तंत्र मौजूद नहीं** है।

संभावित समाधान

- **जवाबदेही तंत्र को स्थापित करना: जवाबदेही और निगरानी से जुड़े उपायों को लागू करने के लिए** वैश्विक शासी निकायों को **अधिक अधिकार** दिए जाने चाहिए। जवाबदेही तंत्र की समीक्षा का काम **तटस्थ पक्षों को सौंपा जा सकता है।**
- **विधि के शासन को बनाए रखना:** वैश्विक निकायों में शासन व्यवस्था **विधि के शासन** और नीति निर्माण पर आधारित होनी चाहिए। यह नीति निर्माण **व्यापक भागीदारी दृष्टिकोण** के अनुसार आम सहमति से किया जाना चाहिए।
- **संवाद आधारित** एक ऐसे **दृष्टिकोण** को अपनाया जाना चाहिए जो **प्रत्येक पक्ष की चिंताओं** को दूर करता हो।
- सभी हितधारकों की **समावेशिता और भागीदारी को प्रोत्साहित करना:** वित्त-पोषण जैसे आर्थिक मानदंडों के बजाय **एक देश, एक वोट** जैसे विकल्पों पर विचार किया जा सकता है।
- एक प्रभावी प्रवर्तन तंत्र के साथ-साथ संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों के लिए **मानवाधिकारों को बनाए रखना अनिवार्य बनाया जा सकता है।** मानवाधिकारों के संबंध में एक **साझा न्यूनतम आचार संहिता** बनाई जा सकती है।

> **"एक सक्षम वैश्विक शासन व्यवस्था कोई विलासिता नहीं है बल्कि मौजूदा दौर में परस्पर जुड़ी दुनिया के लिए एक आवश्यकता है, जहां किसी एक राष्ट्र द्वारा किए गए कार्य का किसी दूसरे राष्ट्र पर प्रभाव पड़ सकता है।"**
> — कोफी अन्नान

7.3. दंड की नैतिकता (Ethics of Punishment)

परिचय

हाल ही में, पुणे में एक भयानक दुर्घटना घटित हुई, जिसमें एक किशोर ने लग्जरी कार से दो व्यक्तियों को कुचलकर उनकी जान ले ली। वह किशोर एक प्रभावशाली परिवार से संबंधित था। इस मामले में किशोर न्याय बोर्ड ने किशोर को बेहद मामूली शर्तों पर जमानत दे दी। इससे दंड में असमानता से जुड़ी **नैतिक चिंताओं** पर फिर से बहस शुरू हो गई।

दंड और नैतिक चिंताओं में शामिल विभिन्न हितधारक

हितधारक और उनकी भूमिका/ हित	
हितधारक	**भूमिका/ हित**
पीड़ित	• मुकदमे की सुनवाई में निष्पक्षता की अपेक्षा करता है, **न्याय** प्राप्त करना चाहता है, सुरक्षा का आश्वासन चाहता है तथा अपराधी के लिए कठोर दण्ड चाहता है।
अपराधी	• निष्पक्ष व्यवहार को लेकर चिंतित रहता है, **अपराध के समकक्ष दंड पाने** की अपेक्षा करता है, अपने आचरण में सुधार करने का हवाला देता है तथा मुख्यधारा के समाज में फिर से जुड़ना चाहता है।
समाज	• अपराध में कमी लाना, सार्वजनिक सुरक्षा, **समाज में नैतिक मूल्यों** को बनाए रखना तथा गरिमापूर्ण जीवन जीना।
सरकार	• अपराध को रोकने के लिए अपराधी को दंडित करके उदाहरण प्रस्तुत करना, कानून और व्यवस्था बनाए रखना, कानूनी प्रक्रियाओं और दण्ड में **निष्पक्षता** सुनिश्चित करना।
न्यायपालिका	• युक्तियुक्त और निष्पक्ष निर्णय देना, किए गए **अपराध के समकक्ष में दंड** देना, समाज में संतुलन स्थापित करना और नैतिक गुणों को बढ़ावा देना।

दंड से जुड़े विभिन्न दर्शन और संबंधित नैतिक दुविधाएं

- **निवारण (Deterrence):** यह सिद्धांत बताता है कि सजा मिलने का भय अपराधियों को अपराध करने से हतोत्साहित करता है। सामान्य निवारण जनता को लक्षित करता है, जबकि विशिष्ट निवारण के तहत, पहले से दंड प्राप्त कर चुके लोगों को दोबारा अपराध करने से रोकने का प्रयास किया जाता है।
    - **इससे संबंधित नैतिक दुविधा:** निवारण पर जोर देने से **कठोर दंड दिए जाने** की प्रवृत्ति बढ़ सकती है, जो संभावित रूप से पुनर्वास और पुनर्स्थापनात्मक न्याय को प्रभावित कर सकता है।
- **अक्षम करना (Incapacitation):** यह भविष्य में अपराध करने से रोकने के लिए **अपराधी को समाज से अलग करने और उसकी गतिविधियों को प्रतिबंधित करने** पर केंद्रित है।
    - **इससे संबंधित नैतिक दुविधा:** यह दृष्टिकोण **मानव अधिकारों के दुरुपयोग की संभावना** और **पुनः अपराध करने से रोकने** के लिए दीर्घकालिक कारावास की **प्रभावकारिता** के बारे में चिंताएं पैदा करता है।
- **प्रतिशोधात्मक (Retribution) न्याय:** इसमें कहा गया है कि दंड का उद्देश्य अपराध को नियंत्रित करने या रोकने के बजाय गलती को सुधारना होता है तथा **दंड की प्रकृति अपराध की गंभीरता पर आधारित होती है,** जैसा कि भारतीय दंड संहिता में भी प्रावधान किया गया है।
    - **इससे संबंधित नैतिक दुविधा:** एक प्रभावी दंड के रूप में, प्रतिशोध की आलोचना इसके **अत्यधिक कठोर होने, आनुपातिक रूप से असंगत होने तथा सामाजिक व्यवहार को बदलने की सीमित क्षमता** के कारण की जाती है।
- **पुनर्स्थापन (Restoration):** पुनर्स्थापनात्मक न्याय का के अनुसार, दंड का उद्देश्य अपराधी द्वारा **पीड़ित और समुदाय को पहुंचाए गए नुकसान की भरपाई** करना होता है।
    - **इससे संबंधित नैतिक दुविधा:** इसमें अपराध के लिए उपचार और सुलह को बढ़ावा दिया जाता है। पुनर्स्थापन न्याय सभी अपराधों या अपराधियों के लिए उपयुक्त नहीं माना जाता है और इसे अक्सर **पीड़ितों द्वारा अपेक्षित न्याय की धारणा के विपरीत** माना जाता है।

© Vision IAS

- **पुनर्वास (Rehabilitation):** पुनर्वास में उपचार, चिकित्सा, शिक्षा और प्रशिक्षण के जरिए अपराध करने वाले व्यक्तियों के व्यवहार में बदलाव करने में मदद की जाती है, ताकि उन्हें समाज के मुख्य धारा में फिर से शामिल करने में मदद मिल सके।
    - **इससे संबंधित नैतिक दुविधा:** सरकार के पास धन की कमी, लोगों की ओर से कठोर सजा की मांग और दमन पर केंद्रित अपराध नियंत्रण नीतियां, जो अपराधियों को सजा देने एवं अपराध को रोकने पर ध्यान केंद्रित करती हैं, उपचार और पुनर्वास की अवधारणाओं से विपरीत हैं।

आगे की राह

- **सजा के लिए स्पष्ट नीति:** यह प्रदर्शित करना जरूरी है कि एक अपराधी द्वारा किया गया अपराध उसे दंडात्मक व्यवहार के लिए पात्र बनाता है और ऐसे दंड, नुकसान से अधिक होते हैं।
    - उदाहरण के लिए- **स्पष्ट तरीके से परिभाषित आपराधिक दंड नीति बनाई जानी चाहिए।**
- **पूर्वाग्रह का उन्मूलन:** सजा सुनाने के लिए कोई स्पष्ट परंपरा नहीं है और कई मामलों में सजा न्यायाधीश विशेष की सोच से प्रभावित होती है।
    - इसके अलावा, यह पूर्वाग्रह वंचित समुदायों पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। उदाहरण के लिए- "भारत की जेल सांख्यिकी 2022" पर NCRB डेटा से पता चलता है कि अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदायों के विचाराधीन कैदियों की कुल संख्या अन्य समुदायों की तुलना में अधिक है।
- **प्रभाव आकलन:** विधायी प्रक्रिया में प्रवर्तनीयता, आनुपातिकता और सुधार सुनिश्चित करने के लिए पूर्व-विधायी परीक्षण और प्रभाव आकलन किया जाना चाहिए।
- **पुनर्वास:** अपराधियों से प्रतिशोध लेने और उनकी पुनर्स्थापना के बीच संतुलन स्थापित करने में पुनर्वास उपयोगी हो सकता है।

> **"अपराध की रोकथाम के लिए दंड का प्रावधान विधायिका के हाथ में अंतिम और सबसे कम प्रभावी साधन है।"**
>
> — जॉन रस्किन

7.4. बुद्ध की शिक्षाएं (Buddha's Teachings)

सुर्ख़ियों मे क्यों?

हाल ही में, भारत के उपराष्ट्रपति ने **'एशियाई बौद्ध शांति सम्मेलन (ABCP)[13]'** की **12वीं महासभा** को संबोधित करते हुए बुद्ध की शिक्षाओं के महत्त्व पर जोर दिया।

बुद्ध की प्रमुख शिक्षाएं

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व में, **महात्मा बुद्ध ने उपदेश** दिया था कि जीवन में सर्वत्र दुख है। इन दुखों से मुक्ति पाने के लिए व्यक्ति को अपनी **इच्छाओं पर विजय पाना होगा।**
- बुद्ध की शिक्षाओं में **"चार आर्य सत्य"** और **"अष्टांगिक मार्ग"** शामिल हैं।
    - **"अष्टांगिक मार्ग" (दु:ख के अंत का रास्ता):** दु:ख से मुक्ति के आठ उपायों को बुद्ध ने आष्टांगिक मार्ग कहा है। ये हैं- **सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाणी, सम्यक् कर्म, सम्यक् आजीविका, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति** और **सम्यक् समाधि।**
- बुद्ध ने **"मध्यम मार्ग"** (न तो बहुत कठोर तप और न ही बहुत अधिक विलासितापूर्ण जीवन) के आधार पर **सरल एवं सात्विक जीवन जीने का उपदेश दिया** है।
- इसके अलावा, बौद्ध नीतिशास्त्र में चार आर्य सत्य में चौथे का विस्तार से वर्णन किया गया है। इसमें मोक्ष के साधन के रूप में **'त्रिरत्न (तीन रत्न)'- ज्ञान (प्रज्ञा), शील (नैतिक आचरण)** और **समाधि (एकाग्रता)** का वर्णन है।

13 Asian Buddhist Conference for Peace

- बौद्ध भिक्षुओं के लिए **पांच नियमों (पंचशील)** का पालन करना बहुत महत्वपूर्ण है। ये पांच नियम हैं: **सत्य (झूठ न बोलना), अहिंसा (हिंसा न करना), अस्तेय (चोरी न करना), ब्रह्मचर्य (व्यभिचार न करना),** और **मादक द्रव्यों का सेवन न करना।**

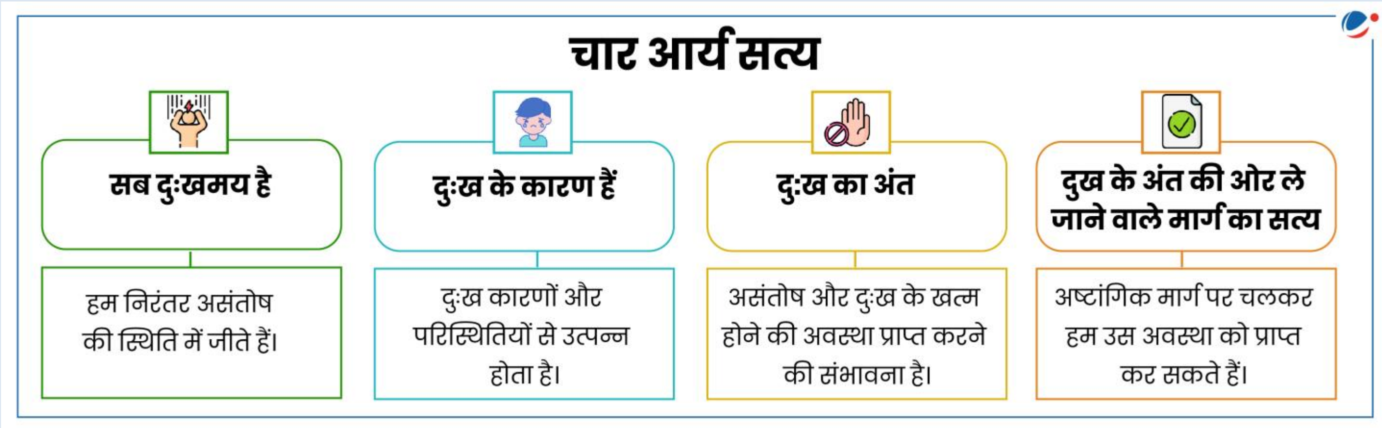

वर्तमान समय में बुद्ध की शिक्षाओं की प्रासंगिकता

- **लालच एवं इच्छाओं से युक्त उपभोक्तावादी एवं भौतिकवादी मानसिकता को नियंत्रित करता है:** बुद्ध ने आसक्ति और दुःख के मध्य के संबंध को स्वीकार किया और आंतरिक संतुष्टि की खोज करने के लिए प्रेरित किया है।।
- **वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देना:** माइंडफुलनेस, एकाग्रता और सही समझ को प्रोत्साहित करने से व्यक्ति में प्रश्न करने या किसी घटना के कारण को जानने की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिल सकता है।
- **नागरिक-केंद्रित शासन: सम्यक् वाणी, कर्म** और **आजीविका** प्रशासन को नागरिक कल्याण एवं समावेशिता को प्राथमिकता देते हुए अधिक संवेदनशील और सेवा-संचालित बनाने में मदद कर सकती है।
- **शांति, सद्भाव एवं सह-अस्तित्व:** सभी जीवों के प्रति **प्रेम की भावना** और **कर्म के सिद्धांत** पर जोर देने से युद्ध, आतंकवाद, उग्रवाद और हिंसा पर अंकुश लगाया जा सकता है।
- **अंतर-धार्मिक सौहार्द:** बुद्ध ने **ईश्वर के अस्तित्व को न तो स्वीकार किया और न ही अस्वीकार किया।** उन्हें व्यक्ति और उसके कार्यों की अधिक चिंता थी।
- **नैतिक मार्गदर्शिका:** सादा जीवन, मध्यम मार्ग का पालन जैसी बुद्ध की शिक्षाएं हमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, जैव प्रौद्योगिकी आदि पर नैतिक मानकों की अस्पष्टता की स्थिति से निपटने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करती हैं।
- **संघर्ष का शांतिपूर्ण समाधान:** बुद्ध ने हमेशा **अहिंसा पर बल दिया** एवं संघर्षों को सुलझाने के लिए **संवाद को सर्वोत्तम तरीका** बताया।

7.5. खेल में नैतिकता (Ethics in Sports)

प्रस्तावना

क्रिकेट विश्व कप में बांग्लादेश और श्रीलंका के बीच मैच के दौरान श्रीलंकाई क्रिकेटर एंजेलो मैथ्यूज के खिलाफ टाइम-आउट के फैसले को लेकर विवाद खड़ा हो गया। हालांकि, यह निर्णय नियमों के अनुसार लिया गया था, लेकिन यह बहस बांग्लादेश के खिलाड़ियों की खराब खेल भावना के संदर्भ में शुरू हुई थी।

विभिन्न हितधारक कौन-कौन से हैं और खेल नैतिकता सुनिश्चित करने में विभिन्न हितधारकों की क्या जिम्मेदारी है?

हितधारक और उनके हित/ जिम्मेदारी	
हितधारक	हित/ जिम्मेदारी
सरकार	• **खेल से जुड़ी हुई नैतिक संहिता के कार्यान्वयन को बढ़ावा** देना और इसकी निगरानी करना। • **स्कूल पाठ्यक्रम में खेल नैतिकता को शामिल** करना। • **खेलों से जुड़े जटिल मुद्दों की समझ में सुधार हेतु अनुसंधान** को प्रोत्साहित करना।

 © Vision IAS

खेल संस्थाएं/ संगठन	• नैतिक और अनैतिक व्यवहार पर **स्पष्ट दिशा-निर्देश जारी** करना। • ऐसी प्रणालियां स्थापित करना, जो **खेल नैतिकता से संबंधित आचरण को पुरस्कृत करें** और **अनैतिक व्यवहार को दंडित** करें। • सहायता की **आवश्यकता वाले खिलाड़ियों की विशेष जरूरतों को पूरा करने के लिए नियमों में संशोधन** को प्रोत्साहित करना।
खिलाड़ी	• व्यक्तिगत व्यवहार के जरिए एक अच्छा उदाहरण स्थापित करना। • अनुचित खेल-व्यवहार की प्रशंसा करने से बचना या उसकी निंदा करना। • खेल प्रदर्शन के दौरान **शारीरिक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों के बारे में जागरूकता का प्रसार** करना।
खेल-प्रशंसक	• असम्मानजनक या आपत्तिजनक भाषा का सहारा लिए बिना **अपनी टीम के लिए समर्थन व्यक्त करना।** • किसी भी प्रकार के **भेदभाव को अस्वीकार करना और इसकी निंदा करना।** • ऑनलाइन या सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर जिम्मेदारी पूर्ण व्यवहार करना और खिलाड़ियों की निजता का सम्मान करना।

खेल नैतिकता क्या है?

- खेल नैतिकता न केवल व्यवहार के एक निश्चित रूप को, बल्कि **सोचने के एक विशेष तरीके को भी दर्शाती** है। इसमें **मैदान पर और मैदान से बाहर** सभी प्रकार के **नकारात्मक व्यवहार को समाप्त करना** शामिल है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह **समानता और खेल उत्कृष्टता को बढ़ावा** देती है।
- खेल में नैतिकता के लिए **चार प्रमुख गुणों की आवश्यकता** होती है:
    - निष्पक्षता,
    - सत्यनिष्ठा/ ईमानदारी,
    - जिम्मेदारी की भावना, और
    - सम्मान की भावना।

नैतिक गुण	तत्व
निष्पक्षता (Fairness)	• संबंधित खेलों से संबंधित नियमों और दिशा-निर्देशों का पालन करना। • खेल में भाग लेने वाले किसी भी प्रतिभागी के विरुद्ध **उनकी जाति, लिंग या यौन उन्मुखता के आधार पर कोई भेदभाव नहीं** करना। • रेफरी को **पूर्वाग्रह या व्यक्तिगत रुचि के आधार पर** निर्णय नहीं लेना चाहिए।

सत्यनिष्ठा/ ईमानदारी (Integrity)	• बेईमानी, धोखाधड़ी या अपमानजनक आचरण में शामिल न होना या ऐसे व्यवहार को सहन न करना।
	  ○ कई बार एथलीट किसी ऐसे कौशल या उपायों का सहारा लेते हैं जिन पर प्रतिबंध लगा होता है। यदि एथलीट इसके जरिए अपने प्रतिद्वंद्वी पर बढ़त हासिल करना चाहते हैं तो यह उसमें **व्यक्तिगत ईमानदारी की कमी को दर्शाता** है और ऐसा करना खेल की शुचिता का भी उल्लंघन है।
	    ▪ उदाहरण के लिए- जब **कोई खिलाड़ी फुटबॉल में घायल होने का दिखावा करता है या जानबूझ कर फाउल** होता है, तो वह एक ईमानदार **खिलाड़ी की तरह व्यवहार नहीं** कर रहा होता है।

उत्तरदायित्व/ जिम्मेदारी की भावना (Responsibility)	• प्रदर्शन के साथ-साथ **मैदान पर किए गए अपने व्यवहार की जिम्मेदारी लेना** चाहिए। • खिलाड़ी और कोच दोनों को अपने खेल को नियंत्रित करने वाले **नियमों और विनियमों से अपडेट** रहना चाहिए। • खिलाड़ी और कोच को **मैदान के साथ-साथ मैदान के बाहर भी सम्मानजनक तरीके से व्यवहार करना** चाहिए।
सम्मान की भावना (Respect)	• खेल परंपराओं का आदर करना एवं अन्य प्रतिभागियों के साथ **सम्मानपूर्वक व्यवहार करना।** • **असम्मानजनक आचरण में शामिल न होना और न ही उसे बर्दाश्त करना,** जिसमे विरोधियों और अधिकारियों के साथ मौखिक दुर्व्यवहार भी शामिल है। • सभी प्रशंसकों को **अन्य प्रशंसकों के साथ-साथ दोनों टीमों और अधिकारियों के प्रति सम्मान दिखाना** चाहिए।

खेलों में कौन-कौन से नैतिक मुद्दे उठते हैं?

- **"जीतना ही सब कुछ है" का विचार:** एथलीट्स और कोच को अक्सर प्रतिद्वंद्वी टीम पर बढ़त हासिल करने के लिए जहां भी संभव हो, नियमों को तोड़ने-मरोड़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इसके तहत **मुकाबले के दौरान खिलाड़ियों की सुरक्षा और कल्याण पर कम ध्यान** दिया जाता है।
    - इसमें **खेल खेलने के तरीके की तुलना में इसके परिणाम पर अधिक जोर** दिया जाता है।

- **अत्यधिक प्रतिस्पर्धा का दबाव:** खेलों के व्यवसायीकरण, वैश्विक दर्शकों की भागीदारी, राष्ट्रीय गौरव की भावना, वित्त संबंधी हित, भागीदारी में वृद्धि आदि के कारण **आधुनिक खेल बेहद प्रतिस्पर्धी** हो गए हैं।
- **कानून और नैतिकता का द्वंद्व:** खेल के कानूनी ढांचे के भीतर कई सारे नियम एवं कानून बने हुए हैं। इन **नियमों की व्याख्या और उन्हें लागू करने से कभी-कभी खेल के दौरान नैतिक द्वंद्व उत्पन्न** हो जाता है।
- **सीमित नैतिकता:** इस दृष्टिकोण के अनुसार **खेल और प्रतिस्पर्धा वास्तविक जीवन से अलग** हैं और इस क्षेत्र में **नैतिकता और नैतिक संहिता लागू नहीं होते** हैं।
    - इसके अतिरिक्त, कुछ लोगों का तर्क है कि खेल हमारी मौलिक आक्रामकता और प्रतिद्वंद्वी पर विजय प्राप्त सम्मान पाने की एक स्वार्थपरक आवश्यकता के लिए **एक अभिव्यक्ति के रूप में काम** करते हैं। इस दृष्टि से **आक्रामकता और विजय ही एकमात्र गुण** है, जैसे- क्रिकेटरों के बीच क्रिकेट मैच के दौरान स्लेजिंग।

खेल नैतिकता को कैसे बढ़ावा दिया जा सकता है?

- **रोल मॉडलिंग:** खेलों में **ईमानदार खिलाड़ियों को रोल मॉडल के रूप में बढ़ावा देना चाहिए,** जो नैतिक व्यवहार के उच्चतम मानकों का उदाहरण प्रस्तुत करते हों।
- **डोपिंग रोधी पहल:** निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा सुनिश्चित करने और एथलीट्स के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए मजबूत **डोपिंग रोधी कार्यक्रम लागू करना** चाहिए।
- **मीडिया की जिम्मेदारी: जिम्मेदारीपूर्ण और नैतिक खेल पत्रकारिता को बढ़ावा देना** चाहिए, जो **निष्पक्ष रिपोर्टिंग पर ध्यान केंद्रित** करती है और सनसनीखेज प्रसारण से बचती है।
- **स्पॉन्सर की जिम्मेदारी: नैतिक मानकों के अनुरूप जिम्मेदारीपूर्ण स्पॉन्सरशिप और कॉर्पोरेट कार्यप्रणालियों को प्रोत्साहित** करना चाहिए।

> **"खेल भावना का पालन करने वाला एक व्यक्ति इसकी केवल बात केवल करने वाले 50 लोगों से कहीं बेहतर है।"**
>
> — नुट रॉकने

7.6. कुत्तों द्वारा काटने की घटनाएं: आवारा कुत्तों के नियंत्रण में उत्पन्न होने वाली नैतिक चिंताएं (Beyond Bites: Ethical Considerations In Stray Dogs Control)

परिचय

2019 की पशुधन गणना के अनुसार, भारत में **आवारा कुत्तों की आबादी लगभग 1.5 करोड़** है। इसके कारण वैश्विक पटल पर भारत की छवि कुत्ते के काटने एवं रेबीज की राजधानी के रूप में है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार, 2019 में भारत में कुत्तों के काटने के 4,146 ऐसे मामले सामने आए जहां इंसानों की मौत हो गई। इस प्रकार, आवारा कुत्तों के प्रबंधन को लेकर चिंता बढ़ रही है।

हितधारक	फायदा/ भूमिका
पशु कल्याण संगठन/ कार्यकर्ता	• **आवारा कुत्तों को आश्रय और भोजन उपलब्ध कराना** तथा पशु संबंधी अपशिष्टों का प्रबंधन करना। • **बचाव,** पुनर्वास और किसी नई जगह कल्याण के लिए के लिए स्थानांतरित करना। • **मानवीय व्यवहार की वकालत करना** और जिम्मेदार पालतू पशु स्वामित्व को बढ़ावा देना। • **कुत्तों को स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध** कराना।
पालतू जानवर का मालिक	• **अपने पालतू जानवरों की जिम्मेदारी लेना** तथा आवारा कुत्तों की आबादी को बढ़ाने में योगदान नहीं देना। • अपने पालतू जानवरों का **समय पर टीकाकरण** कराना। • **सामुदायिक पहलों का समर्थन करना** और पालतू जानवरों के साथ अनुचित व्यवहार के मामले में हस्तक्षेप करना।
स्थानीय प्राधिकारी	• **आवारा कुत्तों की आबादी को नियंत्रित करना** एवं उनका कल्याण सुनिश्चित करना। • आवारा कुत्तों का **प्रभावी टीकाकरण और नसबंदी सुनिश्चित** करना। • समुदाय की पहलों का समर्थन करना और आवारा कुत्तों से जुड़े अनुचित व्यवहार के मामले में हस्तक्षेप करना।
स्थानीय जनसंख्या	• **जन-स्वास्थ्य और सुरक्षा:** कुत्ते के काटने का खतरा कम करना, रेबीज जैसी जूनोटिक बीमारियों को रोकना, आदि। • आवारा कुत्तों के साथ मानवीय व्यवहार सहित पशु कल्याण।
सरकार	• पशु नियंत्रण के लिए **उचित नीतियां एवं कानून** तैयार करना। • कुत्ते के काटने के मामलों एवं पागल कुत्तों से निपटने के लिए **मानक संचालन प्रक्रियाओं को अपनाना।**

आवारा कुत्तों के नियंत्रण से जुड़े नैतिक पहलू

- **परित्याग:** पालतू जानवरों को छोड़ देना एक अनैतिक कार्य है, जिसे अक्सर **अनैतिक और गैर-जिम्मेदाराना व्यवहार** माना जाता है।
- **जिम्मेदारी (Responsibility):** कुत्तों का मानव जाति के विकास के इतिहास के साथ एक अनूठा संबंध है। यह एक नैतिक दुविधा खड़ी करता है। उनके कल्याण के लिए जिम्मेदार होना हमारा दायित्व है, लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि कुत्ते जंगली भेड़ियों के वंशज हैं, और उनमें कुछ जंगली प्रवृत्तियां एवं अपने इलाकों की रक्षा भावना अभी भी मौजूद है।
- **सार्वजनिक स्वास्थ्य:** मानव स्वास्थ्य और कुत्तों के स्वास्थ्य, दोनों के लिए चिंता व्यक्त की जाती है।
- **पशु नियंत्रण के तरीके:** पकड़ने, सामूहिक हत्या और इच्छामृत्यु के तरीकों का उपयोग नैतिक चिंताओं को जन्म देता है, क्योंकि इसमें जानवरों की जान लेना शामिल है। नैतिक विकल्पों, जैसे कि ट्रैप-न्यूटर-रिटर्न (TNR) कार्यक्रमों पर विचार किया जाना चाहिए।

वर्तमान नीतिगत ढांचा

- **पशु क्रूरता निवारण अधिनियम (PCA), 1960:** PCA, 1960 के तहत आवारा कुत्तों को मारना दंडनीय है।
- **भारतीय पशु कल्याण बोर्ड (AWBI):** यह पशु कल्याण को बढ़ावा देने के लिए 1962 में PCA,1960 के तहत गठित एक वैधानिक सलाहकारी निकाय है।
- **पशु जन्म नियंत्रण (ABC)[14] कार्यक्रम:** इसका उद्देश्य नसबंदी एवं टीकाकरण के माध्यम से आवारा कुत्तों की आबादी को नियंत्रित करना है। ABC कार्यक्रम को PCA, 1960 के तहत **पशु जन्म नियंत्रण नियम, 2023** के अनुसार विनियमित किया जाता है।

[14] Animal Birth Control

- **न्यायिक दृष्टिकोण: AWBI बनाम नागराजा वाद (2014)** में सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुनाया कि देश के कानून के अधीन **प्रत्येक प्रजाति को जीवन और सुरक्षा का अधिकार है।** इसमें मानवीय आवश्यकता से परे, उसके जीवन से उसे वंचित करना भी शामिल है।

आगे की राह

- **पशु नियंत्रण उपाय:** सरकार को सिविल सोसायटी के साथ मिलकर आवारा कुत्तों के समुचित टीकाकरण, नसबंदी कार्यक्रम एवं पशु अपशिष्ट प्रबंधन सहित विभिन्न नीतिगत उपाय करने एवं उन्हें लागू करने की आवश्यकता है।
  - पालतू जानवरों के परित्याग को रोकने और उनके कल्याण को सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी कानून भी बनाए जा सकते हैं।
- **अवसंरचनात्मक सहायता:** आवारा पशुओं के लिए समर्पित आहार स्थलों एवं पशु चिकित्सा स्वास्थ्य सुविधाओं का निर्माण किया जाना चाहिए। इसके अलावा, पशु कल्याण के कार्य में लगे सिविल सोसायटी संगठनों को भी सहायता प्रदान की जा सकती है।
- **प्रशिक्षण और शिक्षा:** संभावित/ वर्तमान पालतू पशु मालिकों को पालतू जानवरों के व्यवहार, उनके विकास चक्र तथा उनके स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के प्रबंधन के संबंध में शिक्षित और प्रशिक्षित किया जाएगा।
- **नए रिश्तों का विकास:** कई अध्ययनों से पता चला है कि कुत्तों की संगति से तनाव, चिंता और अवसाद के लक्षण कम हो सकते हैं।

"किसी राष्ट्र की महानता और उसकी नैतिक प्रगति का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि वहां प्राणियों के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है।"

— महात्मा गांधी

7.7. नैतिकता और जलवायु परिवर्तन (Ethics and Climate Change)

परिचय

COP26 के तहत दो सप्ताह की लंबी बातचीत के बाद **ग्लासगो** में पक्षकार देशों द्वारा **ग्लासगो जलवायु समझौते** पर हस्ताक्षर किए गए। लेकिन इस समझौते में जो वादे किए गए हैं, उन्हें लेकर न तो विश्व के अग्रणी नेता और न ही जलवायु विशेषज्ञ संतुष्ट हैं। जलवायु वार्ताओं में विद्यमान कमी या अंतराल और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों की गंभीरता का अंदाजा वैश्विक नेताओं की राय से लगाया जा सकता है।

जलवायु परिवर्तन को हमेशा एक पर्यावरणीय या भौतिक समस्या के रूप में देखा जाता है, लेकिन इस समस्या का समाधान नैतिक मुद्दों में भी निहित है।

प्रमुख हितधारक और उनके हित	
हितधारक	हित
सरकारें	पर्यावरण की रक्षा करना, नागरिकों का कल्याण सुनिश्चित करना, **भू-राजनीतिक स्थिरता बनाए रखना, संधारणीय आर्थिक विकास को बढ़ावा देना** और **पेरिस समझौते** जैसी अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं को पूरा करना।
अंतर-सरकारी संगठन	**अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना, बातचीत और समझौतों को सुगम** बनाना, वैश्विक लक्ष्य एवं उद्देश्य निर्धारित करना और विकासशील देशों के क्षमता निर्माण में सहयोग करना।
व्यवसाय और निगम	जलवायु से संबंधित जोखिमों का प्रबंधन करना, **संधारणीय कार्य पद्धतियों को अपनाना, स्वच्छ प्रौद्योगिकियों में निवेश करना।** नवीकरणीय ऊर्जा की संभावनाओं को तलाशना और उभरती हरित अर्थव्यवस्था की दिशा में पूंजीगत निवेश करना।
स्थानीय समुदाय	आजीविका की रक्षा, **सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण, स्वच्छ वायु और जल की उपलब्धता।** बदलती परिस्थितियों के साथ अनुकूलन और समुदाय की भलाई को प्रभावित करने वाले **नीति निर्माण की प्रक्रियाओं में भाग** लेना।
देशज लोग	अधिकारों की रक्षा, **पारंपरिक ज्ञान और प्रथाओं का संरक्षण तथा जलवायु निर्णयन प्रक्रियाओं** तक अपनी बात पहुंचाना।
वैज्ञानिक समुदाय	**अनुसंधान करना, ज्ञान साझा करना, जलवायु मॉडल में सुधार करना** और साक्ष्य-आधारित जलवायु नीतियों का समर्थन करना।

जलवायु परिवर्तन से जुड़े नैतिक मुद्दे

- **विभिन्न क्षेत्रों और आबादी पर असंगत प्रभाव:** विकासशील देश और हाशिए पर रहने वाले समुदायों को अक्सर अपनी सुभेद्यता तथा अनुकूलन के लिए आवश्यक संसाधनों की कमी के कारण जलवायु प्रभावों का व्यापक प्रभाव झेलना पड़ता है।
- **जलवायु संबंधी प्रवास और विस्थापन:** जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाले प्रवास और विस्थापन से लोगों को असुरक्षा का सामना करना पड़ता है। साथ ही, उनकी गरिमा पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- **जिम्मेदारियों का असमान वितरण:** ऐतिहासिक रूप से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में औद्योगिक देशों ने सबसे अधिक योगदान दिया है। यह जलवायु परिवर्तन के लिए उत्तरदायी मुख्य कारण रहा है तथा इसके नकारात्मक प्रभावों का सामना हर किसी को करना पड़ता है।
- **देशज लोगों के लिए जलवायु न्याय:** जलवायु परिवर्तन देशज लोगों की भूमि से जुड़ी आजीविका, संस्कृति, पहचान और जीवन के तरीकों के लिए गंभीर खतरा पैदा करता है।
- **तकनीकी असमानता:** जलवायु-अनुकूल प्रौद्योगिकियों और स्वच्छ ऊर्जा समाधानों तक पहुंच सभी देशों तथा समुदायों के लिए एक समान नहीं है।

संभावित समाधान

सदस्य देशों और अन्य हितधारकों को उचित निर्णय लेने और प्रभावी नीतियां लागू करने में मदद करने के लिए **यूनेस्को ने जलवायु परिवर्तन के संबंध में नैतिक सिद्धांतों के एक घोषणा-पत्र (Declaration of Ethical Principles) को अपनाया है:**

- **ह्रास/ क्षति की रोकथाम हेतु:** जलवायु परिवर्तन के परिणामों का बेहतर अनुमान लगाने और जलवायु परिवर्तन का शमन करने तथा उसके अनुकूल और प्रभावी नीतियों को लागू करना।

- **एहतियाती दृष्टिकोण:** निश्चित वैज्ञानिक प्रमाणों के अभाव के आधार पर जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों की रोकथाम करने या शमन करने के उपायों के अंगीकरण को स्थगित नहीं करना।
- **समानता और न्याय:** जलवायु परिवर्तन का इस तरह से प्रबंधन करना जिससे न्याय और समानता की भावना के अनुरूप सभी को लाभ मिले।
- **संधारणीय विकास:** अधिक न्यायपूर्ण और जिम्मेदार समाज का निर्माण करते हुए (जो जलवायु परिवर्तन के प्रति अधिक लचीला हो) अपने पारिस्थितिकी तंत्र के संधारणीय संरक्षण को संभव बनाने वाले विकास के लिए नए मार्गों को अपनाना।
- **एकजुटता:** विशेष रूप से अल्पविकसित देशों (LDCs) और छोटे द्वीपीय विकासशील देशों (SIDS) में जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाओं के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील लोगों और समूहों की व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से सहायता करना।
- **निर्णयन प्रक्रिया में वैज्ञानिक ज्ञान और सत्यनिष्ठा को अपनाना:** जोखिम के पूर्वानुमान सहित, निर्णय लेने में बेहतर सहायता के लिए विज्ञान और नीति के बीच अंतर्संबंध और प्रासंगिक दीर्घकालिक रणनीतियों के कार्यान्वयन को मजबूत करना।

> **"जलवायु परिवर्तन संबंधी विचार-विमर्श के मूल में नैतिकता और समानता समाहित होनी चाहिए। हमें इस विचार-विमर्श में जलवायु परिवर्तन के विषय से आगे बढ़ते हुए जलवायु न्याय की ओर जाना होगा।"**
>
> — नरेंद्र मोदी

7.8. संज्ञानात्मक असंगति अथवा मानसिक द्वंद्व (Cognitive Dissonance)

परिचय

सेंट पीटर्सबर्ग की रैली में शामिल 48 वर्षीय दिमित्री माल्टसेव के मन में यह अंतर्द्वंद्व चल रहा था, कि इस कठिन समय में उसे अपने देश का समर्थन करना चाहिए या मानवतावादी दृष्टिकोण से यूक्रेनी लोगों की दुर्दशा को समझने हेतु प्रयास करना चाहिए। ऐसी संज्ञानात्मक असंगति अथवा अंतर्द्वंद्व कोई दुर्लभ बात नहीं है। जीवन के सभी क्षेत्रों में सरकारी कर्मचारियों से लेकर व्यवसायियों तक सभी लोगों को ऐसी दुविधाओं का सामना करना पड़ता है।

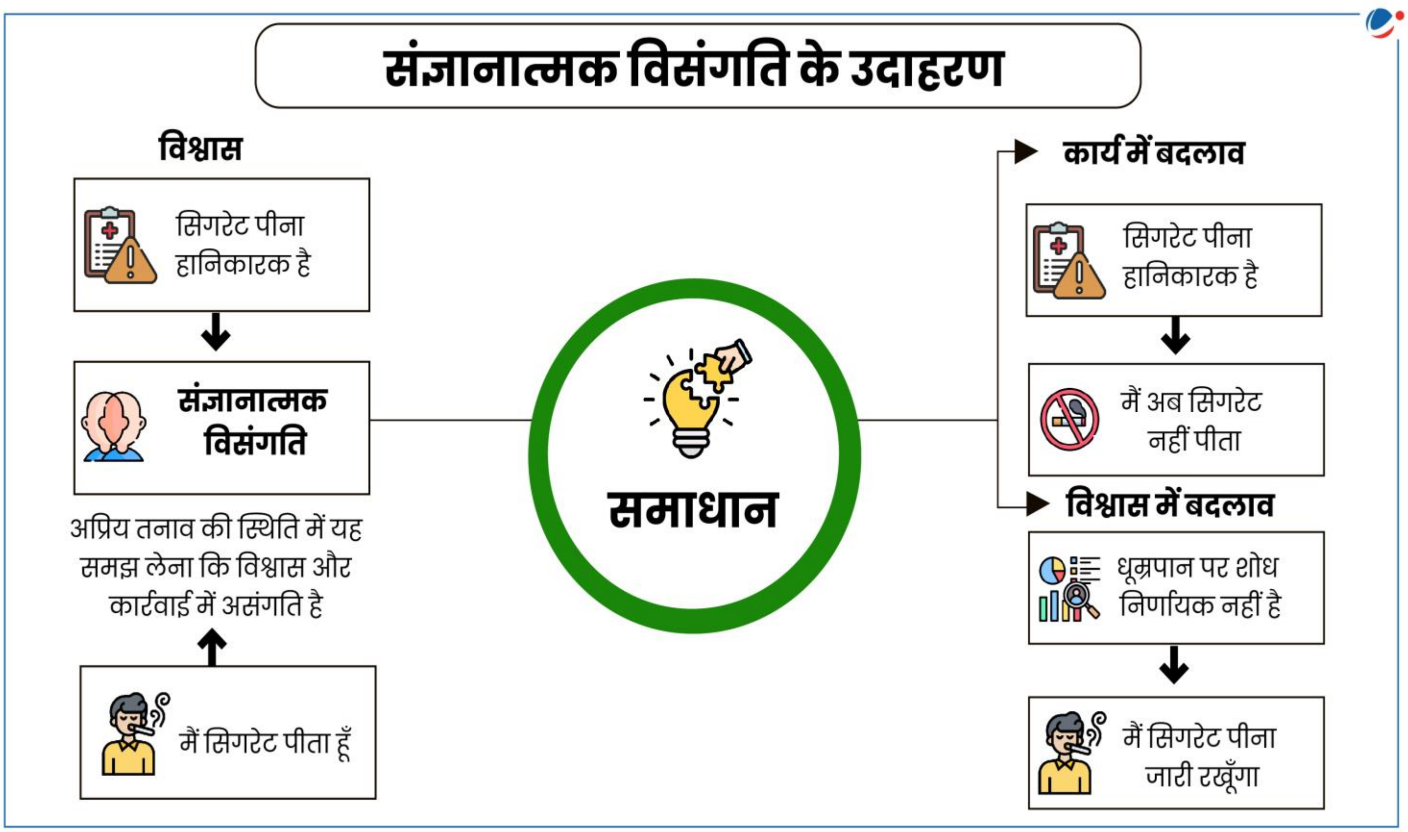

 © Vision IAS

संज्ञानात्मक असंगति अथवा मानसिक द्वंद्व क्या है?

- संज्ञानात्मक असंगति को आम तौर पर 'मानसिक द्वंद्व या अशांति के रूप में परिभाषित किया जाता है। यह मुख्यतः किसी व्यक्ति के **विचारों के द्वन्द्वात्मक स्थिति में होने पर** परिलक्षित होता है तथा ऐसी स्थितियां सामान्यतः उसके **व्यवहार/ कार्यप्रणाली तथा उसकी मान्यताओं के मध्य विपरीत संबंधों को दर्शाती हैं।**
- इसके दो प्रकार हो सकते हैं जैसे-
    - **पूर्वानुमानित/ प्रत्याशित असंगति (Anticipated Dissonance),** यानी वास्तविक नैतिक उल्लंघन से पूर्व अपेक्षित अनैतिक कृत्य।
    - **अनुभवजन्य/ अभिज्ञ असंगति (Experienced Dissonance),** यानी, किए गए व्यवहार/कार्यप्रणाली के बाद अनैतिक कृत्य या अपराध बोध का अनुभव होना।
- निम्नलिखित लक्षण **संज्ञानात्मक असंगति की पहचान हेतु एक चिन्हक के रूप में कार्य करते हैं-**
    - कुछ करने या निर्णय लेने से पहले **असहज महसूस करना।**
    - आपने जो **निर्णय** लिया है या जो **कार्य** किया है, उसको **सही या युक्तिसंगत ठहराने की कोशिश करना।**
    - आपने जो कुछ किया है उसके लिए **शर्मिंदा महसूस करना और अपने कार्यों को अन्य लोगों से छिपाने की कोशिश करना।**
    - अतीत में आपने जो कुछ किया है उसको लेकर **अपराधबोध या खेद का अनुभव करना।**

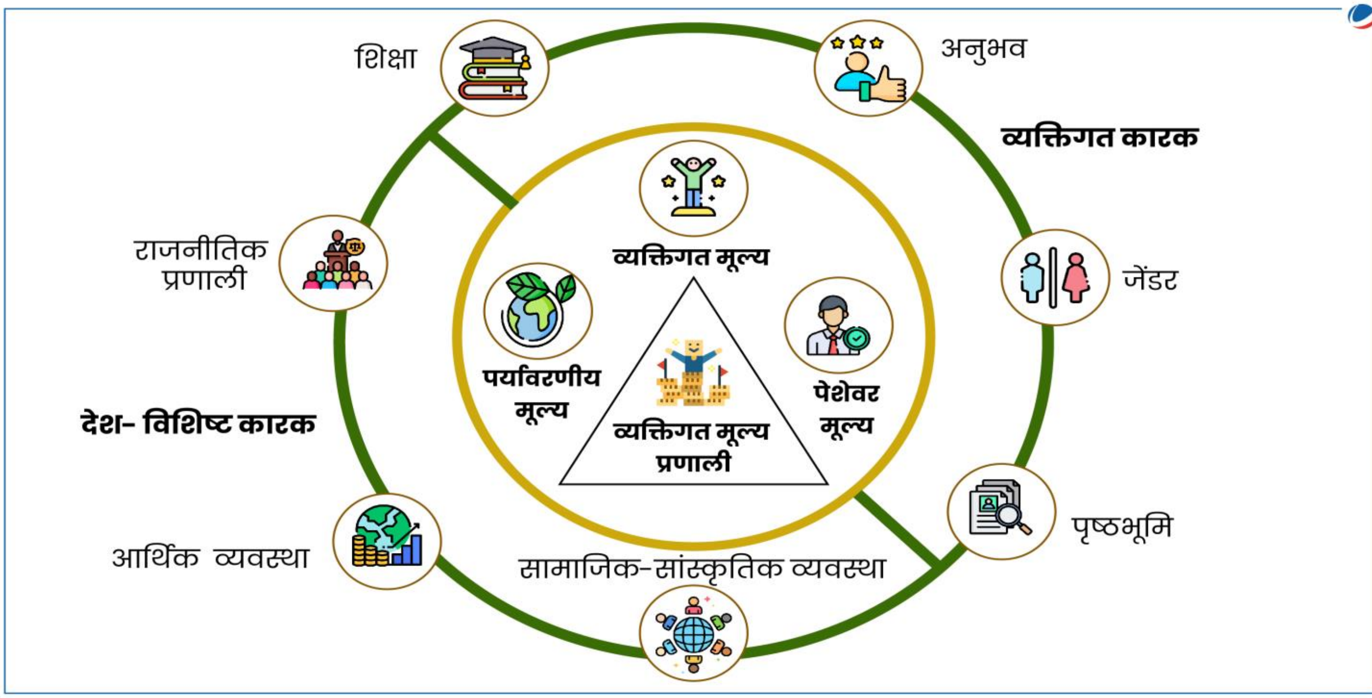

संज्ञानात्मक असंगति से जुड़े नैतिक मुद्दे

- **नैतिक दुविधाएं:** व्यक्तिगत मूल्य और व्यावसायिक दायित्वों के मध्य टकराव से आंतरिक संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।
- **निर्णय-निर्माण की सत्यनिष्ठा पर प्रभाव:** व्यक्तिगत विश्वासों और व्यवहारों के बीच असंगतता के कारण पैदा होने वाले व्यवधानों को कम करने हेतु व्यक्ति अपने अनैतिक कार्यों को तर्कसंगत या उचित ठहरा सकते हैं।
- **भरोसे और विश्वसनीयता का ह्रास:** व्यक्तिगत व्यवहारों और मूल्यों के बीच मौजूद असंगतता को दूर करने के लिए व्यक्ति कपटपूर्ण कृत्यों में शामिल हो सकते हैं।
- **दीर्घावधि में नैतिक ह्रास:** संज्ञानात्मक असंगति की स्थिति में लंबे समय तक रहने से, व्यक्ति में धीरे-धीरे नैतिक मूल्यों से समझौता करने की प्रवृति बढ़ सकती है। इससे अनैतिक व्यवहार को बढ़ावा मिल सकता है।
- **सामाजिक प्रभाव:** सामाजिक मुद्दों के प्रति लोगों के बड़े समूह में संज्ञानात्मक असंगति की स्थिति उत्पन्न होने से दृष्टिकोण में ध्रुवीकरण, असहिष्णुता और शत्रुता में वृद्धि हो सकती है।

संभावित समाधान

- **संज्ञानात्मक संगति का सिद्धांत (Principle of cognitive consistency):** व्यक्तिगत स्तर पर अलग-अलग आयामों, विश्वासों और विचारों से संबंधित लागत-लाभ अनुपात का पुनर्मूल्यांकन करके, व्यवहार में बदलाव करके अथवा व्यक्तिगत संज्ञान (Cognition) को कम महत्त्व देकर इस तरह की असंगति को दूर किया जा सकता है।

- **समस्याओं की पहचान करना:** पेशेवर और उच्चतर स्तर पर, समस्याओं की पहचान करने और इसके समाधान के लिए संस्थागत कदम उठाने हेतु **बाहरी हस्तक्षेप** की आवश्यकता होती है।
- **प्रभावी नेतृत्व:** सार्वजनिक तौर पर प्रचलित किसी भी **सामूहिक संज्ञानात्मक असंगति** के समाधान के लिए साझा उपाय खोजने हेतु नेताओं, सिविल सेवकों और विशेषज्ञों में **आम लोगों के साथ भावनात्मक रूप से जुड़ने की क्षमता** होनी चाहिए।

> **निर्णय लेते समय दुविधा होने की स्थिति में सबसे बेहतर होता है न्यायोचित कदम उठाना और सबसे बुरा होता है कुछ न करना।**
>
> — थियोडोर रुजवेल्ट

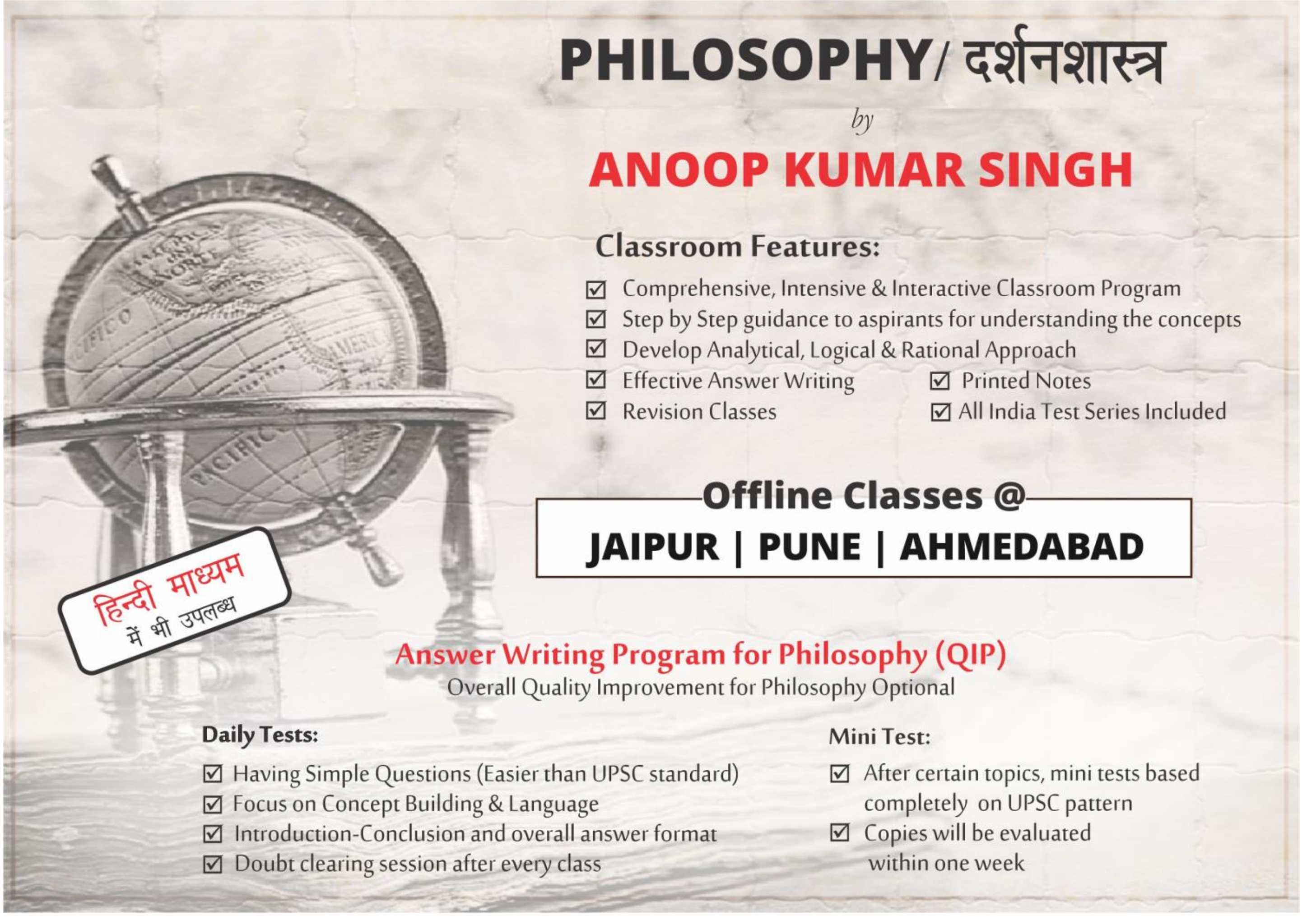

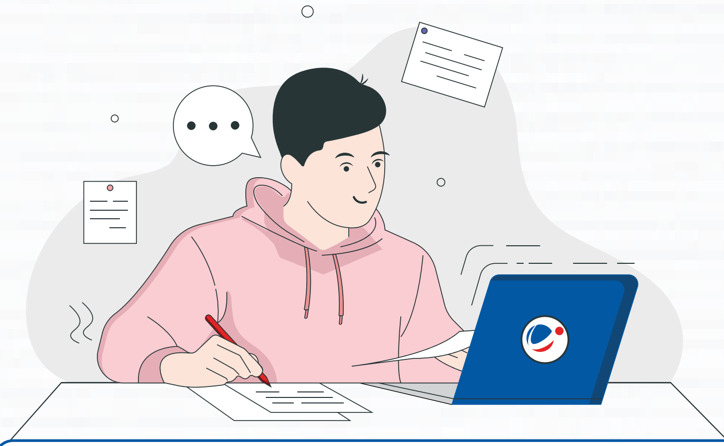

VISION IAS
INSPIRING INNOVATION

UPSC प्रीलिम्स की तैयारी की स्मार्ट और प्रभावी रणनीति

UPSC प्रीलिम्स सिविल सेवा परीक्षा का पहला और अत्यधिक प्रतिस्पर्धी चरण है। इसमें वस्तुनिष्ठ प्रकार के दो पेपर (सामान्य अध्ययन और CSAT) शामिल होते हैं, जो अभ्यर्थी के ज्ञान, उसकी समझ और योग्यता का परीक्षण करने के लिए डिज़ाइन किए जाते हैं।

यह चरण अभ्यर्थियों को व्यापक पाठ्यक्रम में महारत हासिल करने और बदलते पैटर्न के अनुरूप ढलने की चुनौती देता है। साथ ही, यह चरण टाइम मैनेजमेंट, इन्फॉर्मेशन को याद रखने और प्रीलिम्स की अप्रत्याशितता को समझने में भी महारत हासिल करने की चुनौती देता है।

इस परीक्षा में सफलता प्राप्त करने हेतु कड़ी मेहनत के साथ–साथ तैयारी के लिए एक समग्र और निरंतर बदलते दृष्टिकोण की भी आवश्यकता होती है।

तत्काल व्यक्तिगत मेंटरिंग के लिए QR कोड को स्कैन कीजिए

प्रीलिम्स की तैयारी के लिए मुख्य रणनीतियां

तैयारी की रणनीतिक योजना: पढ़ाई के दौरान सभी विषयों को बुद्धिमानी से समय दीजिए। यह सुनिश्चित कीजिए कि आपके पास रिवीजन और मॉक प्रैक्टिस के लिए पर्याप्त समय हो। अपने कमजोर विषयों पर ध्यान दीजिए।

अनुकूल रिसोर्सेज का उपयोग: ऐसी अध्ययन सामग्री चुनिए जो संपूर्ण और टू द पॉइंट हो। अभिभूत होने से बचने के लिए बहुत अधिक कंटेंट की जगह गुणवत्ता पर ध्यान दीजिए।

PYQ और मॉक टेस्ट का रणनीतिक उपयोग: परीक्षा के पैटर्न, महत्वपूर्ण विषयों और प्रश्नों के ट्रेंड्स को समझने के लिए विगत वर्ष के प्रश्न–पत्रों का उपयोग कीजिए। मॉक टेस्ट के साथ नियमित प्रैक्टिस और प्रगति का आकलन करने से तैयारी तथा टाइम मैनेजमेंट में सुधार होता है।

करेंट अफेयर्स की व्यवस्थित तरीके से तैयारी: न्यूज़पेपर और मैगजीन के जरिए करेंट अफेयर्स से अवगत रहिए। समझने और याद रखने में आसानी के लिए इस ज्ञान को स्टेटिक विषयों के साथ एकीकृत कीजिए।

स्मार्ट लर्निंग: रटने के बजाय अवधारणाओं को समझने पर ध्यान दीजिए, बेहतर तरीके से याद रखने के लिए निमोनिक्स, इन्फोग्राफिक्स और अन्य प्रभावी तरीकों का उपयोग कीजिए।

व्यक्तिगत मेंटरिंग: व्यक्तिगत रणनीतियों, कमजोर विषयों और मोटिवेशन के लिए मेंटर्स की मदद लीजिए। मेंटरशिप स्ट्रेस मैनेजमेंट में भी मददगार होता है, ताकि आप मेंटल हेल्थ को बनाए रखते हुए परीक्षा पर ठीक से ध्यान केंद्रित कर सकें।

UPSC प्रीलिम्स की जटिलताओं को ध्यान में रखते हुए, Vision IAS ने अपना बहुप्रतीक्षित "ऑल इंडिया GS प्रीलिम्स टेस्ट सीरीज़ और मेंटरिंग प्रोग्राम" शुरू किया है। इस प्रोग्राम में नवीनतम ट्रेंड्स के अनुरूप संपूर्ण UPSC सिलेबस को शामिल किया गया है।

इसकी प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं:

- UPSC सिलेबस का व्यापक कवरेज
- टेस्ट सीरीज का फ्लेक्सिबल शेड्यूल
- टेस्ट का लाइव ऑनलाइन/ ऑफ़लाइन डिस्कशन और पोस्ट–टेस्ट एनालिसिस
- प्रत्येक टेस्ट पेपर के लिए आंसर–की और व्यापक व्याख्या
- अभ्यर्थी के अनुरूप व्यक्तिगत मेंटरिंग
- ऑल इंडिया रैंकिंग के साथ इनोवेटिव अस्सेस्मेंट सिस्टम और परफॉरमेंस एनालिसिस
- क्विक रिविजन मॉड्यूल (QRM)

अंत में, एक स्मार्ट स्टडी प्लान, प्रैक्टिस, सही रिसोर्स और व्यक्तिगत मार्गदर्शन को मिलाकर बनाई गई रणनीतिक तथा व्यापक तैयारी ही UPSC प्रीलिम्स में सफलता की कुंजी है।

"ऑल इंडिया GS प्रीलिम्स टेस्ट सीरीज़ और मेंटरिंग प्रोग्राम" के लिए रजिस्टर करने और ब्रोशर डाउनलोड करने हेतु QR कोड को स्कैन कीजिए

अहमदाबाद | बैंगलोर | भोपाल | चंडीगढ़ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची

8. केस स्टडीज़ के जरिए अपनी योग्यता का परीक्षण कीजिए (Test Your Learning)

1. अपने आप को एक नवनिर्वाचित विधायक के रूप में कल्पना कीजिए। आपके चुनाव अभियान का अधिकांश वित्त-पोषण एक बड़े कॉर्पोरेट, 'XYZ इंडस्ट्रीज' ने किया था, जो आपके राज्य के खनन क्षेत्रक में एक प्रमुख भागीदार है। चुनाव के बाद, राज्य विधान-मंडल में एक विधेयक पेश किया गया है जिसमें खनन कार्यों के लिए पर्यावरणीय नियमों में ढील देने का प्रस्ताव किया गया है। इस प्रस्ताव से XYZ इंडस्ट्रीज को बहुत लाभ होगा लेकिन पर्यावरण और स्थानीय समुदायों को संभावित रूप से नुकसान होगा।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:
- आपके सामने क्या नैतिक दुविधाएं हैं और इससे जुड़े हितधारक कौन हैं?
- आपके सामने संभावित विकल्पों का मूल्यांकन कीजिए।
- आपकी आदर्श कार्रवाई क्या होगी?

संदर्भ- विधि निर्माताओं की नैतिकता (Ethics of Lawmakers)

2. हाल ही में, सुप्रीम कोर्ट के एक न्यायाधीश ने लोक सभा का चुनाव लड़ने के लिए अपने पद से इस्तीफा दे दिया। संबंधित न्यायाधीश ऐसे प्रमुख निर्णयों से जुड़े थे, जिनमें सत्तारूढ़ सरकार के कार्यों को उचित ठहराया गया था। इससे विपक्षी दलों ने न्यायाधीश के न्यायिक आचरण को लेकर चिंता जताई।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर, निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:
- सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश के सत्तारूढ़ राजनीतिक दल में शामिल होने से उत्पन्न होने वाले नैतिक मुद्दों की व्याख्या कीजिए।
- न्यायाधीशों के राजनीति में शामिल होने के पक्ष और विपक्ष में तर्कों का मूल्यांकन कीजिए, इसके लाभ और जोखिम की तुलना कीजिए।
- न्यायिक संस्था में जनता के विश्वास और न्यायाधीशों के कार्यों के बीच संतुलन सुनिश्चित करने के लिए अपनाए जा सकने वाले तरीकों पर चर्चा कीजिए।

संदर्भ- राजनीतिक नैतिकता और हितों का टकराव (Political Ethics and Conflict of Interest)

3. राहुल एक प्रतिष्ठित फार्मा कंपनी में रिसर्च एंड डेवलपमेंट विभाग में काम करते हैं। वह एक परियोजना का नेतृत्व कर रहे हैं जिसके लिए क्लिनिकल ट्रायल्स आयोजित करने की आवश्यकता है। कंपनी के डायरेक्टर ने राहुल को इससे जुड़े जोखिमों के बारे में बताए बिना पास की झुग्गी में रहने वाले लोगों पर ट्रायल्स करने के लिए कहा है। राहुल ने ऐसा करने से इनकार कर दिया, क्योंकि यह कानून और उनकी नैतिकता के खिलाफ है। लेकिन, डायरेक्टर ने उसे ऐसा ही करने का निर्देश देते हुए कहा कि उसे इसके बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है।

उपर्युक्त प्रकरण के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए?
- इस प्रकरण में शामिल नैतिक मुद्दों की पहचान कीजिए?
- राहुल के पास कौन-से विकल्प उपलब्ध हैं?
- राहुल को कौन-सा विकल्प अपनाना चाहिए? इसके गुण-दोषों पर भी चर्चा कीजिए।

संदर्भ- चरित्र के बिना ज्ञान (Knowledge Without Character)

4. सेल्फ-ड्राइविंग कारों में सड़क दुर्घटनाओं, यातायात संबंधी भीड़भाड़ और ईंधन की खपत को कम करके परिवहन क्षेत्रक में क्रांति लाने की क्षमता है। ये वाहन मानवीय हस्तक्षेप के बिना स्वसंचालन करने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और सेंसर्स का उपयोग करते हैं। इससे वे अपनी प्रोग्रामिंग और अपने परिवेश के डेटा के आधार पर रियल टाइम में निर्णय लेते हैं। ऐसे परिदृश्य की कल्पना कीजिए जहां एक ऑटोनॉमस/ स्वचालित वाहन एक व्यस्त शहरी सड़क पर चल रहा हो। अचानक, एक बच्चा सड़क पर भागता है और वाहन के सेंसर्स इसका पता लगा लेते हैं। ऐसी स्थिति में कार में मौजूद AI को तुरंत निर्णय लेना होता है:

   विकल्प 1: बच्चे को बचाने के लिए कार मुड़ सकती है लेकिन उसके फुटपाथ पर पैदल चलने वालों के एक समूह से टकराने का जोखिम है। इससे संभावित रूप से **कई लोगों को नुकसान हो सकता है या उनकी मौत** हो सकती है।

   विकल्प 2: कार अपने रास्ते पर चलती रह सकती है और बच्चे को टक्कर मार सकती है, जिससे फुटपाथ पर पैदल चलने वालों के लिए जोखिम कम हो जाएगा।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:
- इसमें शामिल नैतिक मुद्दे एवं दुविधाएं क्या हैं?
- ऐसी परिस्थिति में संभावित विकल्प क्या होगा और अपने विकल्प के पक्ष में कारण बताइए?

संदर्भ- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मानवाधिकार (AI and Human Rights)

5. इलेक्ट्रॉनिक आर्ट्स ने 2017 में बहुप्रतीक्षित मल्टीप्लेयर गेम "स्टार वार्स: बैटलफ्रंट II" जारी किया। गेम में खिलाड़ियों को वास्तविक मुद्रा से लूट बक्से (Loot boxes) खरीदने की अनुमति दी गई, जिसमें ऐसी वस्तुएं शामिल थीं जो गेमप्ले को काफी अधिक प्रभावित कर सकती थीं। गेम में आगे बढ़ने की प्रणाली लूट बक्सों से जुड़ी हुई थी, जिससे खिलाड़ी के समग्र अनुभव पर असर पड़ा। इसके अलावा, इन लूट बक्सों को यादृच्छिक वितरित किया गया था और खिलाड़ियों द्वारा वांछित वस्तुएं प्राप्त करने की कोई गारंटी नहीं थी। इससे गेमिंग अनुभव प्रभावित हुआ।

उपर्युक्त प्रकरण के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- उपर्युक्त प्रकरण में कौन-सी नैतिक चिंताएं स्पष्ट हैं?
- ऐसे गेम के नैतिक संरचना के तत्वों की पहचान कीजिए जो उपयोगकर्ता के समग्र अनुभव को बढ़ाते हैं।
- यह कैसे सुनिश्चित किया जा सकता है कि ऑनलाइन गेम उपभोक्ता संरक्षण पर ध्यान केंद्रित करें?

संदर्भ- ऑनलाइन गेमिंग में नैतिकता (Ethics of Online Gaming)

6. यू.एस.ए. में एक अंतरिक्ष कंपनी कुछ अनूठी सेवाएं प्रदान कर रही है जिसमें मानव अवशेषों (राख) को एक एल्यूमीनियम कैप्सूल में संग्रहित किया जाता है और उन्हें चंद्रमा के पास की कक्षा में भेजा जाता है। इसी बात को लेकर यू.एस.ए. की एक मूल जनजाति ने चिंता जताई है। उनका तर्क है कि इससे चंद्रमा कब्रिस्तान में बदल जाएगा, जिससे उनके धार्मिक रीति-रिवाज प्रभावित होंगे। दूसरी ओर, कंपनी का तर्क है कि यह व्यक्ति का अधिकार और निजी पसंद का मामला है क्योंकि अंतरिक्ष एक सामूहिक वस्तु है।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- इस प्रकरण से जुड़ी नैतिक दुविधाओं की पहचान कीजिए।
- यदि आपको सरकारी मध्यस्थ के रूप में उपर्युक्त मुद्दे का समाधान करने का कार्य दिया गया है, तो आपकी राय में किसके तर्क को प्राथमिकता दी जानी चाहिए- कंपनी या मूल जनजाति?

संदर्भ- धार्मिक विश्वास और वैज्ञानिक प्रगति (Religious Beliefs and Evolving Scientific Advancements)

7. नई दिल्ली का एक स्कूल छात्रों में शिक्षा के मूल्य को बढ़ावा देने के लिए एक प्रोत्साहन कार्यक्रम लागू करता है। इस तरह का प्रोत्साहन कार्यक्रम मासिक आधार पर आयोजित होने वाले सभी विषयों के विशेष रूप से डिजाइन किए गए परीक्षणों में शीर्ष रैंक प्राप्त करने वाले छात्रों को पुरस्कृत करता है। कुछ छात्र जो कुछ विषयों में बहुत अच्छे हैं, उन्हें यह निराशाजनक लगता है क्योंकि वे समग्र विषयों में बहुत अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि पढ़ाई में उनकी रुचि समाप्त हो गई।

उपर्युक्त प्रकरण के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- ऐसे प्रोत्साहन तंत्रों से जुड़ी नैतिक चिंताएं क्या हैं?
- कौन से कारक यह निर्धारित करते हैं कि व्यावहारिक परिवर्तन लाने के लिए डिजाइन किया गया कार्यक्रम इच्छित परिणाम उत्पन्न करता है?
- स्कूलों में शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए इससे अधिक प्रभावी हस्तक्षेप क्या हो सकता है?

संदर्भ- नज यानी सौम्य प्रोत्साहन की नैतिकता (Ethics of Nudge)

8. सरकार 5 लाख रुपये तक के स्वास्थ्य बीमा कार्ड मुहैया करा रही है। इस कार्यक्रम में स्वास्थ्य की लागत को कम करने और स्वास्थ्य के अधिकार को बढ़ावा देकर समाज के एक बड़े वर्ग को लाभ पहुंचाने की क्षमता है। हालांकि, कार्यक्रम गरीबों की सुरक्षा में सफल रहा है लेकिन आलोचकों का तर्क है कि बढ़ते वित्तीय बोझ से सरकार के बजट पर दबाव पड़ता है, जिससे संभावित रूप से अन्य आवश्यक सेवाओं के लिए संसाधन सीमित हो जाते हैं।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- विभिन्न हितधारकों और उनसे जुड़े हितों पर चर्चा कीजिए।
- चर्चा कीजिए कि सरकार ऐसी स्थितियों में बुनियादी जरूरतों और दुर्लभ संसाधनों के बीच कैसे संतुलन बना सकती है।

संदर्भ- बुनियादी जरूरतें और दुर्लभ संसाधन (Bare Necessities and Scarce Resources)

9. आर्थिक संवृद्धि और विकास को आगे बढ़ाने में, कई राष्ट्र मानव कल्याण एवं टिकाऊ प्रथाओं की बजाय भौतिक समृद्धि को प्राथमिकता देते हैं। यह दृष्टिकोण अक्सर व्यक्तिगत, सामाजिक और वैश्विक स्तर पर खुशहाली के व्यापक घटकों को नजरअंदाज कर देता है।

उपर्युक्त विचार के संदर्भ में निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- विकास के पारंपरिक मापदंडों (उदाहरण के लिए- GDP) तथा वास्तविक खुशहाली और समृद्धि में योगदान देने वाले बहुआयामी कारकों के बीच संभावित संघर्षों का विश्लेषण कीजिए।
- एक व्यापक ढांचे का प्रस्ताव कीजिए जो सभी के लिए स्थायी खुशहाली को बढ़ावा देने की दिशा में वैश्विक विकास के प्रयासों का मार्गदर्शन करने हेतु आर्थिक, सामाजिक, पर्यावरणीय और नैतिक विचारों को एकीकृत करता है।

सन्दर्भ- खुशहाली (Happiness)

10. विजय एक उभरते हुए सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर हैं। कंपनी X ने अपने नए कॉस्मेटिक उत्पाद का विज्ञापन करने के लिए उन्हें नियुक्त किया है। कंपनी का मानना है कि प्रभावशाली लोगों का इस्तेमाल करके वे समाज में उपभोक्तावाद को बढ़ावा देंगे। इसके लिए उन्होंने विजय को बड़ा भुगतान किया है। साथ ही, यह विजय के करियर को बदलने में भी अहम भूमिका निभाएगा। बाद में, विजय को पता चलता है कि उत्पाद उतना प्रभावी नहीं है जितना विज्ञापन में दावा किया गया था। वह कंपनी के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने के बारे में सोचता है लेकिन उसके शुभचिंतक उसे कानूनी कार्रवाई का विचार छोड़ देने का सुझाव देते हैं क्योंकि इससे करियर को नुकसान हो सकता है।

केस स्टडी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- उपर्युक्त प्रकरण में शामिल नैतिक दुविधा का विश्लेषण कीजिए।
- दी गई स्थिति से निपटने के लिए विजय के पास कौन-से विकल्प उपलब्ध हैं?
- उपभोक्तावाद के प्रसार को रोकने में मशहूर हस्तियों/ इन्फ्लुएंसर्स की क्या नैतिक जिम्मेदारी है?

सन्दर्भ- उपभोक्तावाद (Consumerism)

11. आपने हाल ही में एक प्रमुख बहुराष्ट्रीय कंपनी में सप्लाई चेन मैनेजर के रूप में काम करना शुरू किया है, जो कागज उत्पादन से संबंधित है। आपकी कंपनी बहुत अधिक लाभ कमा रही है और सरकारी तथा निजी निवेशकों से अधिक मात्रा में निवेश भी प्राप्त कर रही है। हालांकि, कंपनी के संचालन की जांच करने के बाद, आपको पता चलता है कि आपकी कंपनी अधिकांश कच्चा माल निर्धन अफ्रीकी देशों के जंगलों से अवैध रूप से प्राप्त कर रही है। आगे की जांच से आप इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं, कि कच्चे माल की प्राप्ति वनों को नष्ट करके और वहां रहने वाले तथा वनों पर आश्रित पारंपरिक आदिवासी समुदायों के विस्थापन के बाद की गई है। अपने सहकर्मियों के साथ इन मुद्दों पर चर्चा करने पर, आपको यह अहसास होता है, कि कंपनी की इस कार्य पद्धति के खिलाफ रिपोर्ट करने या आवाज़ उठाने से आपके खिलाफ प्रतिशोधात्मक कार्रवाई करते हुए कठोर कार्य दशाएं उत्पन्न की जा सकती हैं। इससे अंततः आपको नौकरी से हाथ धोना पड़ सकता है और इससे कॉर्पोरेट जगत में आपकी छवि भी खराब हो सकती है। साथ ही, आपके लिए आगे रोजगार के अवसर भी सीमित हो सकते हैं। आप अपने परिवार के अकेले कमाने वाले हैं तथा आपकी व्यक्तिगत परिस्थितियां आपको अपनी नौकरी छोड़ने की अनुमति नहीं देती हैं।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- एक सप्लाई चेन मैनेजर के रूप में, इसमें शामिल विभिन्न हितधारकों के प्रति आपकी नैतिक जिम्मेदारी क्या है? क्या आपको अनैतिक प्रथाओं की रिपोर्टिंग करने के बजाय अपनी व्यक्तिगत परिस्थितियों और नौकरी की सुरक्षा को प्राथमिकता देनी चाहिए?
- कंपनी को उसकी अनैतिक प्रथाओं के लिए कैसे जवाबदेह ठहराया जा सकता है? कॉर्पोरेट जवाबदेही और नैतिक व्यावसायिक प्रथाओं को सुनिश्चित करने में नियामक निकाय, निवेशक, उपभोक्ता और नागरिक समाज संगठन क्या भूमिका निभा सकते हैं?
- अपनी कंपनी में नैतिक निर्णय लेने तथा कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए आपको क्या कदम उठाने चाहिए? यह सुनिश्चित करने के लिए क्या कदम उठाए जा सकते हैं कि संगठन में ऐसी अनैतिक प्रथाओं को दोहराया न जाए?

सन्दर्भ- कम्पैशनेट कैपिटलिज्म या परोपकारी पूंजीवाद (Compassionate Capitalism)

12. एक भारतीय बहुराष्ट्रीय खाद्य और पेय प्रसंस्करण कंपनी ने एक अंतर्राष्ट्रीय खाद्य उत्पाद तैयार किया है। कंपनी ने घोषणा करते हुए कहा कि वह जल्द ही यही उत्पाद अफ्रीकी बाजार में भी पेश करेगी। तदनुसार उत्पाद को सक्षम अधिकारियों द्वारा अनुमोदित किया गया और अफ्रीकी बाजार में पेश किया गया। हालांकि, बाद में अंतर्राष्ट्रीय जाँच से पता चला कि अफ़्रीकी बाज़ार में पेश किए गए उत्पाद में कैंसरकारी तत्व मौजूद था, जो निर्धारित स्थानीय खाद्य मानकों का उल्लंघन करता था। इस जांच से खाद्य कंपनी की प्रतिष्ठा और लाभप्रदता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। इसके अलावा, यह पहला ऐसा मामला नहीं है, पहले भी अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में कई भारतीय खाद्य उत्पादों में कैंसरकारी तत्व के पाए जाने के उदाहरण सामने आए हैं।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- इस प्रकरण में शामिल विभिन्न हितधारकों और संबंधित नैतिक दुविधाओं का परीक्षण कीजिए।
- संकट को हल करने के लिए खाद्य कंपनी के पास कार्रवाई के क्या विकल्प उपलब्ध हैं?
- भारतीय अधिकारियों को खाद्य कंपनी के खिलाफ क्या कार्रवाई करनी चाहिए?

सन्दर्भ- खाद्य सेवा और सुरक्षा की नैतिकता (Ethics of Food Service and Safety)

13. विवेक ने हाल ही में एक प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग कॉलेज से स्नातक की उपाधि प्राप्त की है। उसने शिक्षा ऋण की मदद से अपनी शिक्षा पूरी की। अपने कुछ दोस्तों के साथ मिलकर उसने एक स्टार्ट-अप शुरू किया जो मेडिकल उपकरण का विनिर्माण करता है। व्यवसाय को बनाए रखने के लिए, एक स्टार्ट-अप को बड़े ऑर्डर की आवश्यकता होती है। तरुण (स्टार्ट-अप के भागीदारों में से एक) का रिश्तेदार वर्तमान में एक राज्य के स्वास्थ्य मंत्रालय में सचिव के पद पर तैनात है। सचिव मेडिकल उपकरण खरीदने हेतु चल रही बोली प्रक्रिया के बारे में गोपनीय जानकारी देकर ऑर्डर दिलाने में स्टार्ट-अप की मदद करने के लिए तैयार है। तरुण और कुछ अन्य सदस्य इस अवसर का उपयोग करने के पक्ष में हैं, जबकि विवेक को लगता है कि यह नैतिक उद्यमिता के खिलाफ है।

उपर्युक्त प्रकरण के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- विवेक और उसके साझेदारों के सामने आई नैतिक दुविधाओं की पहचान कीजिए।
- इस स्थिति से निपटने के लिए विवेक को क्या दृष्टिकोण अपनाना चाहिए?

सन्दर्भ- नैतिकता और उद्यमिता (Ethics and Entrepreneurship)

14. आप एक फिनटेक स्टार्टअप के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO) है। हाल ही में, आपके उद्योग में पूंजी की कमी हो गई है जिससे आपके संगठन की अधिक कर्मचारियों को नियुक्त करने की क्षमता सीमित हो गई है। हालांकि, संगठनात्मक कार्यभार का विस्तार जारी है और मौजूदा कार्यबल पहले से ही दबाव में है। वो सप्ताह में 6 दिन 10 से 11 घंटे काम करते हैं।

आप इस बात को उच्च प्रबंधन को समझाते है, हालांकि, वे कंपनी में अधिक नियुक्तियां करने में असमर्थता जताते हैं और आपको अतिरिक्त काम का बोझ मौजूदा कर्मचारियों पर डालने को कहते हैं।

उपर्युक्त प्रकरण के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- आपके समक्ष क्या-क्या नैतिक दुविधाएं हैं और इससे जुड़े हितधारक कौन हैं?
- आपके समक्ष आने वाले संभावित विकल्पों का मूल्यांकन कीजिए।
- आपके द्वारा की जाने वाली आदर्श कार्रवाई क्या होगी?

सन्दर्भ- श्रम नैतिकता और लंबे कार्य घंटे (Labour Ethics and Long Work Hours)

15. आप संयुक्त राज्य अमेरिका के एक प्रतिष्ठित संस्थान में प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। आप अपने विभाग के लिए नए प्रोफेसरों की भर्ती के पैनल में भी रहे हैं। तदनुसार, आपने मिस्टर एक्स की योग्यता के आधार पर उन्हे स्थायी नौकरी का प्रस्ताव दिया है। हालांकि, विश्वविद्यालय के उच्च अधिकारियों ने मिस्टर एक्स के इज़राइल की आलोचना वाले ट्वीट के आधार पर नौकरी का प्रस्ताव वापस लेने का फैसला किया है। लेकिन किसी उम्मीदवार की व्यक्तिगत राय पर विचार करना नौकरी आवेदन के मानदंडों में शामिल नहीं है।

उपर्युक्त प्रकरण के आधार पर, निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- उपर्युक्त प्रकरण से जुड़े नैतिक मुद्दे क्या हैं?
- चयन समिति के सदस्य के रूप में आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी?

सन्दर्भ- सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का नैतिक उपयोग (Ethical Use of Social Media Platforms)

16. 2020 में एक मशहूर बॉलीवुड अभिनेता का निधन हो गया। प्रारंभिक रिपोर्ट के अनुसार, उनकी मौत का कारण फांसी के कारण दम घुटना था। इस घटना को मीडिया ने सनसनीखेज बना दिया था। अलग-अलग न्यूज़ चैनलों पर कई विशेषज्ञों ने चर्चा की थी कि उनकी मौत के पीछे संभावित कारण क्या हो सकते हैं और उनकी मौत के लिए कौन जिम्मेदार हो सकता है। उन्होंने कुछ ऐसे व्यक्तित्वों के नाम भी बताए जो उस अभिनेता की मौत के लिए जिम्मेदार हो सकते हैं। इसने समाज के कुछ वर्ग की राय में काफी बदलाव ला दिया था।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- उपर्युक्त प्रकरण से जुड़े हितधारकों और उनके हितों की पहचान कीजिए।
- इसमें कौन-से नैतिक मुद्दे शामिल हैं?
- मीडिया को प्रेस की स्वतंत्रता और किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत अधिकारों के बीच नाजुक संतुलन कैसे बनाए रखना चाहिए?

सन्दर्भ- मीडिया ट्रायल की नैतिकता (Ethics of Media Trial)

17. हाल ही में, मध्य-पूर्व में इजराइल और हमास के बीच संघर्ष छिड़ गया था। लगातार बमबारी, हवाई हमले और जमीनी हमलों के परिणामस्वरूप दोनों पक्षों के नागरिक बड़ी संख्या में हताहत हुए हैं। युद्ध ने पूरी दुनिया को विभाजित कर दिया है और शत्रुता का कोई अंत नहीं दिख रहा है। इससे खाद्य असुरक्षा, बेघर होने और गरीबी जैसी चुनौतियां बढ़ गई हैं।

उपर्युक्त प्रकरण के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- क्या युद्ध में नैतिकता चिंता का विषय होनी चाहिए?
- इससे संबंधित हितधारक कौन हैं और युद्ध से जुड़े नैतिक विचार क्या हैं?
- इसमें शामिल पक्षों को मानव जीवन का सम्मान करने के लिए कौन-कौन से सिद्धांतों का पालन करना चाहिए?

सन्दर्भ- युद्ध की नैतिकता (Ethics of War)

18. भारत के दिल्ली शहर में एक कार दुर्घटना हुई जिसमें एक स्थानीय किराना स्टोर के दो कर्मचारियों की मौत हो गई। इस मामले में, दुर्घटना में शामिल लग्जरी कार को एक प्रभावशाली रियल एस्टेट व्यवसायी का किशोर बेटा शराब के नशे में चला रहा था।

मामले की सुनवाई के बाद, अदालत ने आरोपी व्यक्ति को चेतावनी देकर तुरंत जमानत दे दी, जबकि किशोर चालक के परिवार ने अपने ड्राइवर पर दोष मढ़ने की कोशिश करते हुए, उसे पैसे देने की पेशकश की। बाद में, जांच के दौरान, यह पाया गया कि DNA परीक्षण करने वाले डॉक्टरों ने किशोर चालक के नमूने को किसी अन्य व्यक्ति के DNA के नमूनों से बदल दिया था। इससे परिवार के द्वारा अपने प्रभाव का इस्तेमाल करके सबूतों से छेड़छाड़ करने का पता चलता है।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- इस मामले से जुड़े विभिन्न हितधारक कौन हैं और वे किन नैतिक दुविधाओं का सामना कर रहे हैं?
- आरोपी के परिवार को किन संभावित नैतिक दुविधाओं का सामना करना पड़ सकता है और यदि आप आरोपी के भाई होते तो आप क्या करते?

सन्दर्भ- दंड की नैतिकता (Ethics of Punishment)

19. आप काफी समय से किसी लोक परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए अध्ययन कर रहे हैं, लेकिन आप इसे बहुत कम अंतर से उत्तीर्ण करने में सफल नहीं हो पाए हैं। आपसे एक व्यक्ति ने संपर्क किया जिसने आपको सूचित किया था कि वह आपकी आगामी परीक्षा के परीक्षा केंद्र पर काम करता है। उसने कहा कि वह पैसे के बदले आपको कुछ सवालों के उत्तर उपलब्ध करवा सकता है। उन्होंने कहा कि वह काफी समय से इस गतिविधि में लिप्त है, और क्योंकि वह इसे बहुत छोटे पैमाने पर कर रहा है, इसलिए वह कभी पकड़ा नहीं जाता। इसलिए, आपके पकड़े जाने की संभावना भी कम है।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- दी गई स्थिति में शामिल हितधारकों और नैतिक चिंताओं की पहचान कीजिए।
- आपके पास उपलब्ध संभावित विकल्पों का मूल्यांकन कीजिए।
- एक आदर्श कार्रवाई के रूप में आप कौन-सा कदम उठाएंगे?

सन्दर्भ- सरकारी एग्जाम में अनुचित साधनों (चीटिंग) का प्रयोग {Use of Unfair Means (Cheating) In Public Examination}

20. क्रिकेट वर्ल्ड कप मैच के दौरान बांग्लादेश और श्रीलंका के बीच मैच चल रहा था। श्रीलंका की पारी के दौरान एंजेलो मैथ्यूज क्रीज पर आए लेकिन उन्हें अपने हेलमेट में कुछ गड़बड़ी का एहसास हुआ। उन्होंने उसे बदलने के लिए कहा और जैसे ही एक खिलाड़ी उनके लिए हेलमेट लेकर उनकी ओर दौड़ा, बांग्लादेश के गेंदबाज शाकिब ने मैथ्यूज के खिलाफ टाइम-आउट निर्णय की अपील की। शाकिब की अपील स्वीकार कर ली गई और मैथ्यूज को पवेलियन वापस जाने के लिए कहा गया।

उपर्युक्त प्रकरण के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- इस प्रकरण में कौन-कौन से नैतिक मुद्दे शामिल हैं?
- इस प्रकरण के संदर्भ में, क्या कानून और नैतिकता एक ही आधार पर टिके हैं?
- कौन-से कारक खेल भावना और खेल नैतिकता को निर्धारित करते हैं?

सन्दर्भ- खेल में नैतिकता (Ethics in Sports)

21. प्रेरणा एक उद्यमी है जो एक स्थानीय NGO का समर्थन करती है। यह NGO वंचित बच्चों को शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करता है। वंचित समुदाय की उत्तरजीविता और विकास के लिए NGO की मदद महत्वपूर्ण है। हालांकि, NGO पर कुप्रबंधन और फंड के दुरुपयोग का आरोप लग रहा है। समाचार लेखों और रिपोर्टों से पता चलता है कि दान का केवल एक छोटा सा हिस्सा ही इच्छित लाभार्थियों तक पहुंच रहा है, जबकि एक उल्लेखनीय राशि प्रशासनिक खर्चों और भव्य आयोजनों पर खर्च की जा रही है।

उपर्युक्त प्रकरण के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- प्रेरणा द्वारा किन नैतिक दुविधाओं का सामना किया जा रहा है?
- ऐसी स्थिति में प्रेरणा क्या कार्रवाई कर सकती है?

सन्दर्भ- व्यक्तिगत सामाजिक उत्तरदायित्व (Individual Social Responsibility: ISR)

22. आप एक IAS अधिकारी बनने के इच्छुक हैं और आपने परीक्षा के विभिन्न चरणों को पास कर लिया है एवं अब आपको व्यक्तित्व परीक्षण के लिए बुलाया गया है। साक्षात्कार के दिन, कार्यक्रम स्थल के रास्ते में आपने एक दुर्घटना देखी जिसमें एक माँ और बच्चा बुरी तरह घायल हो गए हैं।

उपर्युक्त प्रकरण के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- ऐसी स्थिति में आप क्या करते? अपनी कार्रवाई का औचित्य सिद्ध कीजिए।

सन्दर्भ- नेक व्यक्ति (Good Samaritans)

23. महानगर बेंगलुरु आवारा कुत्तों की बढ़ती संख्या से जूझ रहा है। कुत्तों के काटने की घटनाएं, निवासियों के साथ संघर्ष और सुरक्षा को लेकर चिंताएं आम हो गई हैं। नागरिकों के कुछ समूहों में कुत्तों के प्रति रोष बढ़ रहा है और आवारा कुत्तों को खाना खिलाने वाले या देखभाल करने वाले लोग, आम लोगों की हिंसा का शिकार हो रहे हैं। प्रशासन पर सड़कों को आवारा कुत्तों से मुक्त कराने का दबाव है।

उपर्युक्त प्रकरण के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- प्रशासन सार्वजनिक सुरक्षा सुनिश्चित करने, विशेषकर कुत्ते के काटने और संघर्ष के मामलों में और आवारा कुत्तों के प्रति दयालु व्यवहार को बनाए रखने के बीच संतुलन कैसे बना सकता है?
- समुदाय के साथ जुड़कर उनकी चिंताओं को दूर करने और आवारा कुत्तों के मुद्दे पर सहयोगात्मक समाधान खोजने में प्रशासन को कौन-से नैतिक विचार अपनाने चाहिए?

संदर्भ- कुत्तों द्वारा काटने की घटनाएं: आवारा कुत्तों के नियंत्रण में उत्पन्न होने वाली नैतिक चिंताएं (Beyond Bites: Ethical Considerations In Stray Dogs Control)

© Vision IAS

VISION IAS
INSPIRING INNOVATION

करेंट अफेयर्स की बेहतर तैयारी कैसे करें?

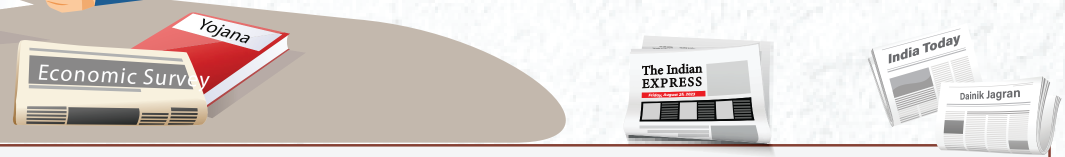

करेंट अफेयर्स सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी की आधारशिला है, जो प्रीलिम्स, मेन्स और इंटरव्यू तीनों चरणों में जरूरी होता है। परीक्षा के प्रश्न डायनेमिक स्रोतों से तैयार किए जा रहे हैं। ये प्रश्न सीधे वर्तमान की घटनाओं से जुड़े होते हैं या स्टैटिक कंटेंट तथा वर्तमान की घटनाओं, दोनों से जुड़े होते हैं। इस संदर्भ में, करेंट अफेयर्स से अपडेट रहना अभ्यर्थी को सिविल सेवा परीक्षा के नए ट्रेंड को समझने में सक्षम बनाता है। सही रिसोर्सेज और एक रणनीतिक दृष्टिकोण के जरिए अभ्यर्थी इस विशाल सेक्शन को अपना सकारात्मक पक्ष बना सकते हैं।

करेंट अफेयर्स के लिए दोहरी स्तर वाली रणनीति

करेंट अफेयर्स के लिए दोहरी स्तर वाली रणनीति

अपनी फाउंडेशन को मजबूत करना

न्यूज़पेपर पढ़ना: फाउंडेशन

वैश्विक और राष्ट्रीय घटनाओं की व्यापक समझ हेतु न्यूज़पेपर पढ़ने के लिए प्रतिदिन एक घंटा समर्पित करना चाहिए।

न्यूज़ टुडे: संदर्भ की सरल प्रस्तुति

न्यूज़पेपर पढ़ने के साथ-साथ, न्यूज़ टुडे भी पढ़िए, जिसमें लगभग 200 या 90 शब्दों में करेंट अफेयर्स का सारांश प्रस्तुत किया जाता है। यह रिसोर्स अभ्यर्थियों को महत्वपूर्ण न्यूज़ की पहचान करने, तकनीकी शब्दों और घटनाओं को समझने में मदद करता है।

मासिक समसामयिकी मैगजीन: गहन विश्लेषण

व्यापक कवरेज और घटनाओं के विस्तृत विश्लेषण के लिए मासिक समसामयिकी मैगजीन आपकी जरूरत पूरी कर सकती है। इससे अलग-अलग क्षेत्रों में विभिन्न घटनाओं के संदर्भ, महत्त्व और निहितार्थ को समझने में सुविधा होती है।

तैयारी और रिविजन में महारत हासिल करना

वीकली फोकस: फाउंडेशन को मजबूत करना

किसी टॉपिक के बारे में अपनी समझ को मजबूत करने के लिए वीकली फोकस का संदर्भ लीजिए। इसमें किसी प्रमुख मुद्दे के विभिन्न पहलुओं और आयामों के साथ-साथ स्टेटिक तथा डायनेमिक घटकों को शामिल किया जाता है।

आर्थिक सर्वेक्षण और बजट के हाईलाइट्स तथा सारांश

इसमें आसानी से समझ के लिए जटिल जानकारी को एक कॉम्पैक्ट प्रारूप में प्रस्तुत किया जाता है। आर्थिक सर्वेक्षण और केंद्रीय बजट के सारांश डाक्यूमेंट्स से आप महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

PT 365 और Mains 365: परीक्षा में प्रदर्शन बढ़ाना

पूरे वर्ष के करेंट अफेयर्स की तैयारी के लिए PT 365 और Mains 365 का उपयोग कीजिए। इससे प्रीलिम्स और मेन्स, दोनों के लिए रिविजन में भी मदद मिलेगी।

Vision IAS का **त्रैमासिक रिवीजन डॉक्यूमेंट** उन छात्रों के लिए उपयोगी रिसोर्स है, जो 2-3 महीनों से मंथली अपडेट पढ़ने से चूक गए हैं। यह प्रमुख घटनाक्रमों का सारांश प्रदान करके लर्निंग में निरंतर सहायता प्रदान करता है।

ब्रोशर पढ़ने के लिए दिए गए QR कोड को स्कैन कीजिए

"याद रखिए, करेंट अफेयर्स को केवल याद ही नहीं रखना होता है, बल्कि घटनाओं के व्यापक निहितार्थों और अंतर्संबंधों को समझना भी होता है। जिज्ञासा के साथ आगे बढ़िए; समय के साथ, यह बोझ कम होता जाएगा और यह एक ज्ञानवर्धक अनुभव बन जाएगा।"

9. परिशिष्ट: व्यक्तित्व- उनके नैतिक विचार और उद्धरण (Appendix: Personalities-Their Ethical Ideas and Quotes)

परिशिष्ट: भारतीय नैतिक विचारक और दार्शनिक: नैतिक विचार/ मूल्य और उद्धरण

व्यक्तित्व	नैतिक विचार/ विजन/ मूल्य	उद्धरण
 कौटिल्य (चाणक्य)	**कर्तव्य और न्याय-परायणता:** लीडर या नेतृत्वकर्ता को काम (वासना), क्रोध, लोभ, मोह, घमंड, और हर्ष (अति प्रसन्नता) को त्याग कर आत्म-संयम दिखाना चाहिए। **खुशहाली:** नेतृत्वकर्ता की खुशहाली उसकी प्रजा के कल्याण में निहित है। **व्यक्तिगत उत्कृष्टता:** मनुष्य जन्म से नहीं, कर्मों से महान होता है।	मोह के समान कोई शत्रु नहीं और क्रोध के समान कोई अग्नि नहीं। संतुलित मन के समान कोई तपस्या नहीं है, संतोष के समान कोई सुख नहीं है, लोभ के समान कोई रोग नहीं है, तथा दया के समान कोई सद्गुण नहीं है।
 तिरुवल्लुवर	**आचरण:** उचित आचरण ही सद्गुणों का मूल स्रोत है जबकि अनुचित आचरण सदैव दुःख का कारण बनता है। ○ वह आचरण सद्गुण है जो इन चार चीजों से मुक्त है: **द्वेष, काम, क्रोध** और **कटु वचन।** **शुद्ध आत्मा:** बाह्य शरीर की शुद्धि जल से होती है, जबकि आंतरिक शुद्धि सत्यता से होती है।	किसी बुराई करने वाले को फटकारने के लिए, बदले में अच्छा काम करके उसे शर्मिंदा करें। करुणा ही सबसे अधिक दयालु सद्गुण है और यह पूरे संसार को चलायमान रखती है।
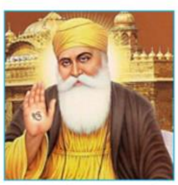 गुरु नानक	**वंड छको:** ईश्वर ने आपको जो कुछ दिया है उसे दूसरों के साथ बांटना और जरूरतमंदों की मदद करना। ○ उन्होंने अनुयायियों को अपनी कमाई का कम-से-कम दसवां हिस्सा दूसरों के कल्याण हेतु दान करने के लिए प्रोत्साहित किया। **बिना किसी डर के सत्य बोलो:** झूठ को दबाकर विजय पाना अस्थायी है, जबकि सत्य के साथ अडिग रहना स्थायी है।	सबसे बड़ी सुख-सुविधा और स्थायी शांति तब प्राप्त होती है जब व्यक्ति अपने भीतर से स्वार्थ को मिटा देता है। यदि लोग ईश्वर द्वारा दी गई संपत्ति का उपयोग केवल अपने लिए या उसे संजोकर रखने के लिए करते हैं, तो वह शव के समान है। लेकिन यदि वे इसे दूसरों के साथ बांटने का निर्णय लेते हैं, तो वह पवित्र भोजन बन जाता है।
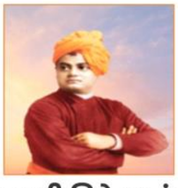 स्वामी विवेकानंद	**मानवतावाद:** जनता ही हमारी भगवान होनी चाहिए। मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है। **निःस्वार्थता:** उन्होंने प्रचार किया कि स्वार्थ अनैतिक है और जो स्वार्थहीन है वह नैतिक है। **एकता:** इसका तात्पर्य है कि आप मेरा हिस्सा हैं और मैं आपका हिस्सा हूँ; मान्यता यह है कि आपको दुःख पहुँचाने में मैं स्वयं को दुःख पहुँचाता हूँ और आपकी सहायता करने में मैं स्वयं की सहायता करता हूँ।	आप जो भी सोचते हैं, आप वही होंगे। अगर आप खुद को कमज़ोर समझते हैं, तो आप कमज़ोर होंगे; अगर आप खुद को मज़बूत समझते हैं, तो आप मज़बूत होंगे। जिस दिन आपके सामने कोई समस्या न आए, यह समझ लें कि आप गलत रास्ते पर चल रहे हैं।

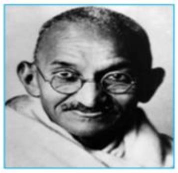 महात्मा गांधी	▶ **साधन और साध्य:** उन्होंने स्पष्ट रूप से इस **सिद्धांत को अस्वीकार कर दिया कि साध्य साधनों को उचित ठहराता है।** उन्होंने जोर देकर कहा कि **नैतिक साधन** अपने आप में लगभग एक **साध्य** है क्योंकि सद्‌गुण ही उसका अपना पुरस्कार है। ▶ **सर्वोदय:** यह सिद्धांत **सभी की प्रगति** पर आधारित है। ○ सभी व्यक्तियों को व्यक्तिगत श्रम करना चाहिए तथा अपरिग्रह के आदर्श का पालन करना चाहिए।	▶ मनुष्य अपने विचारों का उत्पाद है। वह जो सोचता है, वही बन जाता है। ▶ कमज़ोर कभी माफ़ नहीं कर सकता। माफ़ी ताकतवर का गुण है। ▶ स्वयं को खोजने का सबसे अच्छा तरीका है कि आप स्वयं को दूसरों की सेवा में खो दें।
जवाहर लाल नेहरू	▶ **कल्याणकारी राज्य:** एक कल्याणकारी राज्य आदर्श रूप से अपने नागरिकों को बेरोजगारी आदि से जुड़े बाजार जोखिमों से बचाकर बुनियादी आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है। ▶ **प्रशासन:** प्रशासन ऐसा होना चाहिए जो **जनोन्मुख** हो, आम आदमी के प्रति शिष्टाचार दिखाए, लोगों में सहभागिता की भावना पैदा करे तथा लोगों में सहयोग की प्रेरणा दे।	▶ किसी महान उद्देश्य के लिए निष्ठापूर्वक और कुशलतापूर्वक किया गया कार्य, भले ही उसे तत्काल मान्यता न मिले, अंततः फल देता है। ▶ बुराई अनियंत्रित रूप से बढ़ती है, सहन की गई बुराई पूरी व्यवस्था को विषाक्त कर देती है।
डॉ. बी.आर. अम्बेडकर	▶ **स्वाधीनता:** उनका मानना था कि स्वाधीनता और समानता, दोनों जरूरी हैं। लेकिन उन्होंने यह भी कहा कि असीमित स्वाधीनता से समानता नष्ट हो जाती है, और पूर्ण समानता भी स्वाधीनता के लिए कोई स्थान नहीं छोड़ती है। ▶ **कार्रवाई:** सामंजस्यपूर्ण कार्रवाई विभिन्न तरीकों से की जा सकती हैं, लेकिन उनमें सदैव सद्भावना तथा दूसरों के हित की मंशा होनी चाहिए।	▶ मैं किसी समुदाय की प्रगति को उस समुदाय में महिलाओं द्वारा हासिल की गई प्रगति के स्तर से मापता हूँ। ▶ एक महान व्यक्ति एक प्रतिष्ठित व्यक्ति से इस मायने में भिन्न होता है कि वह समाज का सेवक बनने के लिए तैयार रहता है। ▶ मनुष्य नश्वर है। वैसे ही विचार भी नश्वर हैं। इसलिए किसी विचार को प्रचार-प्रसार की उतनी ही आवश्यकता होती है जितनी एक पौधे को पानी की। अन्यथा, दोनों का बेमतलब ही अंत हो जाएगा।
ए.पी.जे. अबुल कलाम	▶ **सामाजिक ग्रिड:** यह ज्ञान ग्रिड, स्वास्थ्य ग्रिड और ई-गवर्नेंस ग्रिड से मिलकर बना है जो PURA/ पूरा (ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी सुविधाओं के प्रावधान) ग्रिड को सहायता प्रदान करता है ▶ **विनम्र बनें:** विनम्रता एक शक्तिशाली गुण है और रहेगी, क्योंकि जहां अहंकार विफल हो जाता है, वहां विनम्रता जीत जाती है।	▶ बुद्धि विनाश को रोकने का एक हथियार है; यह एक ऐसा आंतरिक किला है जिसे शत्रु नष्ट नहीं कर सकते। ▶ दृढ़ संकल्प वह शक्ति है जो हमें हमारी सभी निराशाओं और बाधाओं से बाहर निकालती है। यह हमारी इच्छाशक्ति को मजबूत बनाने में मदद करता है जो सफलता का आधार है।

Copyright © by Vision IAS

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

लाइव / ऑनलाइन
कक्षाएं भी उपलब्ध

VISION IAS
INSPIRING INNOVATION

सामान्य अध्ययन फाउंडेशन कोर्स

2025 प्रीलिम्स और मेन्स, दोनों

दिल्ली	अवधि
18 जुलाई | 1 PM	12–14 महीने

VisionIAS ऐप को डाउनलोड करने के लिए दिए गए **QR कोड** को स्कैन कीजिए

निःशुल्क काउंसिलिंग के लिए **QR** कोड को स्कैन कीजिए

डेली MCQs और अन्य अपडेट्स के लिए हमारे ऑफिशियल **टेलीग्राम ग्रुप को ज्वाइन कीजिए**

- सामान्य अध्ययन फाउंडेशन कोर्स में GS मेन्स के सभी चारों पेपर, GS प्रीलिम्स, CSAT और निबंध के सिलेबस को विस्तार से कवर किया जाता है।
- अभ्यर्थियों के ऑनलाइन स्टूडेंट पोर्टल पर लाइव एवं ऑनलाइन रिकॉर्डेड कक्षाओं की सुविधा भी उपलब्ध है, ताकि वे किसी भी समय, कहीं से भी लेक्चर और स्टडी मटेरियल तक प्रभावी ढंग से पहुंच सकें।
- इस कोर्स में पर्सनालिटी डेवलपमेंट प्रोग्राम भी शामिल है।
- 2025 के प्रोग्राम की अवधि: 12–14 महीने
- प्रत्येक कक्षा की अवधि: 3–4 घंटे, सप्ताह में 5–6 दिन (आवश्यकता पड़ने पर रविवार को भी कक्षाएं आयोजित की जा सकती हैं)

नोट: अभ्यर्थी फाउंडेशन कोर्स की लाइव वीडियो कक्षाएं घर बैठे अपने ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर भी देख सकते हैं। साथ ही, अभ्यर्थी लाइव चैट के जरिए कक्षा के दौरान अपने डाउट्स और विषय संबंधी प्रश्न पूछ सकते हैं। इसके अलावा, वे अपने डाउट्स और प्रश्न को नोट कर दिल्ली सेंटर पर हमारे क्लासरूम मेंटर को बता सकते हैं, जिसके बाद फोन / मेल के जरिए अभ्यर्थियों के प्रश्नों का समाधान किया जाता है।

GS फाउंडेशन कोर्स की अन्य मुख्य विशेषताओं पर एक नज़र

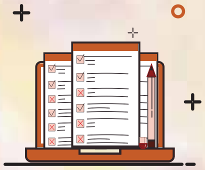

नियमित तौर पर व्यक्तिगत मूल्यांकन

अभ्यर्थियों को नियमित ट्यूटोरियल, मिनी टेस्ट एवं ऑल इंडिया टेस्ट सीरीज के माध्यम से व्यक्तिगत व अभ्यर्थी के अनुरूप और ठोस फीडबैक दिया जाता है

सभी द्वारा पढ़ी जाने वाली एवं सभी द्वारा अनुशंसित

विशेषज्ञों की एक समर्पित टीम द्वारा तैयार की गई मासिक समसामयिकी मैगजीन, PT 365 और Mains 365 डॉक्यूमेंट्स तथा न्यूज़ टुडे जैसी प्रासंगिक एवं अपडेटेड अध्ययन सामग्री

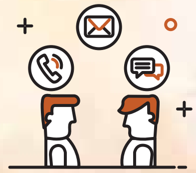

नियमित तौर पर व्यक्तिगत मार्गदर्शन

इस कोर्स के तहत अभ्यर्थियों के डाउट्स दूर करने और उन्हें प्रेरित रखने के लिए नियमित रूप से फोन / ईमेल / लाइव चैट के माध्यम से "वन–टू–वन" मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है।

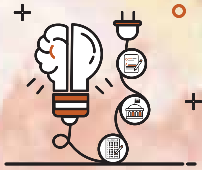

ऑल इंडिया टेस्ट सीरीज़

प्रत्येक 3 सफल उम्मीदवारों में से 2 Vision IAS की ऑल इंडिया टेस्ट सीरीज को चुनते हैं। Vision IAS के पोस्ट टेस्ट एनालिसिस के तहत टेस्ट पेपर में स्टूडेंट्स के प्रदर्शन का विस्तार से विश्लेषण एवं समीक्षा की जाती है। यह अपनी गलतियों को जानने एवं उसमें सुधार करने हेतु काफी महत्वपूर्ण है।

कोई क्लास मिस ना करें

प्रत्येक अभ्यर्थी को एक व्यक्तिगत "स्टूडेंट पोर्टल" उपलब्ध कराया जाता है। इस पोर्टल के जरिए अभ्यर्थी किसी भी पुराने क्लास या छूटे हुए सेशन और विभिन्न रिसोर्सेज़ को एक्सेस कर सकते हैं एवं अपने प्रदर्शन का सापेक्ष एवं निरपेक्ष मूल्यांकन कर सकते हैं।

बाधा रहित तैयारी

अभ्यर्थी VisionIAS के क्लासरूम लेक्चर्स एवं विभिन्न रिसोर्सेज़ को कहीं से भी तथा कभी भी एक्सेस कर सकते हैं और वे इन्हें अपनी जरुरत के अनुसार ऑर्गनाईज कर सकते हैं।

/c/VisionIASdelhi /vision_ias /visionias_upsc /VisionIAS_UPSC

Heartiest
Congratulations
to all Successful Candidates
1 AIR
Aditya Srivastava
79
in TOP 100 Selections in CSE 2023
from various programs of Vision IAS
2 AIR
Animesh Pradhan
5 AIR
Ruhani
6 AIR
Srishti Dabas
7 AIR
Anmol Rathore
9 AIR
Nausheen
10 AIR
Aishwaryam Prajapati
हिंदी माध्यम में 35+ चयन CSE 2023 में
= हिदी माध्यम टॉपर =
53 AIR
मोहन लाल
136 AIR
अर्पित कुमार
238 AIR
विपिन दुबे
257 AIR
मनीषा धार्वे
313 AIR
मयंक दुबे
517 AIR
देवेश पाराशर
UPSC TOPPERS/OPEN SESSION: QR स्कैन करें
TOPPERS' TALK
53 AIR
मोहन लाल
TOPPERS' TALK
136 AIR
अर्पित कुमार
विगत वर्षों में UPSC मेन्स में पूछे गए प्रश्न
UPSC मेन्स 2024 के लिए व्यापक रणनीति
DELHI
HEAD OFFICE
Apsara Arcade, 1/8-B 1st Floor, Near Gate-6 Karol Bagh Metro Station
MUKHERJEE NAGAR CENTER
Plot No. 857, Ground Floor, Mukherjee Nagar, Opposite Punjab & Sindh Bank, Mukherjee Nagar
GTB NAGAR CENTER
Classroom & Enquiry Office, above Gate No. 2, GTB Nagar Metro Building, Delhi - 110009
FOR DETAILED ENQUIRY
Please Call: +91 8468022022, +91 9019066066
enquiry@visionias.in
/c/VisionIASdelhi
/visionias.upsc
/vision _ias
VisionIAS_UPSC
अहमदाबाद
बेंगलूरु
भोपाल
चंडीगढ
दिल्ली
गुवाहाटी
हैदराबाद
जयपुर
जोधपुर
लखनऊ
प्रयागराज
पुणे
रांची